CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

162

॥ श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री जैनपूजा पद्धति

की

* समालोचना *

२८९६

लेखकः—

पूज्यपाद आचार्य महाराज चन्द्रसागरसूरिश्वरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री अभ्युदयसागरजी आदि

卐卐

प्रकाशकः—

राजस्थान जैन संस्कृति रक्षक सभा

ब्यावर (राजस्थान)

卐

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य ।) | वीर निर्वाण २४८३ वि० सं० २०१४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में पंचोपचारी या अष्टप्रकारी अथवा "इतने वर्ष पहले यह चीज नहीं थी और यह चीज तो इस प्रकार अनुकरण या भक्त की मन-घड़न्त कल्पना से घुस आई" आदि वृथा चर्चा के उत्थान की शक्यता नहीं है तथापि आधुनिक ऊपर से साफ सुथरी पर अन्दर से अति भयंकर नास्तिकता से भरपूर भौतिकवादी शिक्षा के प्रभाव से चकाचौंध हुए कहलाने वाले कुछ शब्द पंडितों ने व्यर्थ में अपना अपरिणत ज्ञान उगलने की कुचेष्टा करके भोली जनता को भ्रम के अंधेरे कुए में डालने का भयंकर दुःसाहस किया जाता है—जिसमें उस पुस्तक के लेखक का भी समावेश हो जाता है जिस पुस्तिका के प्रतिकार में यह पुस्तिका लिखी गई है।

वास्तव में तो उक्त समूची पुस्तिका ही जिनशासन की सनातन सिद्ध विशिष्ट विलक्षणता के अज्ञान मूलक पद्धति से लिखी होने के कारण नितान्त असत्य, गलत एवं भ्रामक विचारदोषों से भरपूर है, इतना ही नहीं-पुस्तिका का प्रत्येक पेज, पेज की प्रत्येक पंक्ति अनेक विविध तार्किक, आगमिक, ऐतिहासिक प्रमाणों की शून्यता के दोष से व्याप्त है—

ऐसी दशा में "पुस्तिका जिनशासनभक्त आराधक आत्मा के लिये अत्यन्त अनुपादेय है।" इतने इने गिने शब्दों में ही लिख देना काफी होता है—फिर भी शब्दाडंबर से प्रभावित हुई जनता गल्त ख्याल में न रह जाय अतः शासन प्रभावक गीतार्थ सार्वभौम आत्मोद्धारक ध्यानस्थ स्वर्गत पू० आ० श्री आनन्दसागर सूरीश्वरजी के शिष्यावंतस वर्द्धमान तपआराधक व्याख्यानवाचस्वाते पू० आ० श्री चन्द्रसागरसूरिश्वरजी की आज्ञा से उनके ही शिष्य मुनि अभ्युदय-सागरजी ने आचार्यवर्य श्री की प्रेरणा और पूर्ण देखरेख में लेखमाला के रूप में श्री सिद्धचक्र पाक्षिक में सारा लेख समूची पुस्तिका की समालोचना के रूप में गुजराती में लिखे थे उनका ही अन्य आचार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री के शिष्यरत्न परमतपस्वी पू० मुनिराज श्री धर्मसागरजी म० गणिवर्य श्री की प्रेरणा से हिन्दी टाईप में संग्रह के रूप में इस पुस्तिका में रखे गये हैं। "कल्याण" (गुजराती पालीताणा प्रकाशित) में छाया हुआ एक महत्त्वपूर्ण लेख भी इसमें सम्मिलित किया गया है–

आशा है कि पक्षपात एवं दुराग्रह की मलिन भावना छोड़कर इन लेखों का गहरा अध्ययन करने पर विवेकी पाठकों को जिनपूजा के बारे में की गई असत्य कल्पनाओं का निरसन स्पष्ट रूप से प्रतीत हो जायेगा।

इस लेख संग्रह में किसी प्रकार का व्यक्तिगत द्वेष या एकान्त आग्रह के लक्ष्य से कोई बात प्रतिपादित नहीं की गई है।

अतः प्रत्येक मध्यस्थ सज्जन को इस संग्रह का सदुपयोग करने की सलाह दी जाती है।

प्रकाशकः—
श्री राजस्थान जैन संस्कृति रक्षक सभा
ब्यावर (राजस्थान)

द्रव्य सहायकः—
(१) श्री जैन मर्चेन्ट सोसायटी संघ
अ ह म दा बा द
(२) श्री नराडो संघ उपधान तप
समिति के ज्ञानखाता
नराडो (अहमदाबाद)

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

"श्रीजिनपूजा पद्धति" पुस्तिकानी निष्फलता.

(१)

बारमा सैका पहेलांनो नित्य स्नपननो इतिहास.

[जैन शासनमां श्री जिन पूजानो प्रश्न अति महत्त्वनो छे, अने ते केन्द्रभूत वस्तु छे, वयोवृद्ध-तपस्वी-विजयसिद्धिसूरीश्वरजी महाराजना समुदायना पं० श्री कल्याणविजयजीए "श्री जिनपूजा पद्धति" ए नामनी पुस्तिका लखीने प्रसिद्ध करी छे, ते वांची जोतां आ पुस्तिका प्रसिद्ध करवानी जरूर न होती, गीतार्थोना अभिप्रायो मेलववा जोइता तेमांनुं तेओए कइं कर्युं नथी, अमारी इच्छा आ बाबतनी नवीन चर्चाने स्थान आपवानी न होती, छतां ते पुस्तिका वांचीने घणा जीवो भ्रमणामां पडीने खुलासा मांगे छे, तेथी अने वधु भ्रमणानो वेग अटके एज एक सदुद्देशथी संक्षेपमां अत्र मार्गदर्शन आपीए छीए.

लि. तन्त्री.]

"श्री जिनपूजा पद्धति" नामनी पुस्तिकामां घणी चर्चास्पद बाबतो सूचित रीते भरी दीधी छे. परन्तु ते सर्वने हाल तुरतने माटे बाजुए राखी मुद्दानी वात के जे मुख्य छे ते ऊपर विचार करवो तात्कालिक जरूरी छे.

ए पुस्तिकाना ३१-३२ मा पेइज ऊपर लखेलुं छे, के—

"जो के नित्य स्नानजेवी अंतिम कोटीनी विकृति तो ते समयमां पण दाखल न थई, पण "सर्वोपचारी पूजा" नी अति प्रवृत्ति तेमणेज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वधारी हती के जेमना परिणामे बारमी सदीमां चैत्यवासिओनी साथे घणाक सुविहितो पण नित्य स्नाननो उपदेश देवा लाग्या अने धीरे धीरे नित्य स्नाननी प्रवृत्ति वधवा मांडी.

नित्य स्नानना आम आंदोलनो.

बारमी सदीना प्रारंभथीज नित्य स्नाननुं आंदोलन प्रतिदिन वधतुं तो गयुं हतुंज अने बारमाशतकमां एणे जोर पकड्युं.

वली ए पुस्तिकाना बावनमा पेइज ऊपर लखेलुं छे के—

"परन्तु तेरमा अने चौदमा सैकाथी ज्यारे नित्य-स्नान विलेपन रूपमां ते प्रचलित थई. त्यारथी सोलमो सदी सुधीमां अेणे अनेक अनिष्ट परिणामो उपजाव्यां छे."

आमां मुख्य मुद्दो अेकज छे, के "बारमा सैका पहेलां नित्यस्नान विलेपन न हता " एम शास्त्र-पाठो अने लेखके मानेला ऐतिहासिक प्रमाणोने आधारे लेखक जणाववा इच्छे छे, परंतु बारमा सैका पहेलांना सुविहित पूर्वाचार्योना शास्त्र-ग्रंथोमां नित्य स्नान विलेपननुं समर्थन करनारा पाठो मली आवे छे, तो पछी ऐतिहासिक पूरावा अने शास्त्रपाठो एम बन्नेय रीते लेखकश्रीनुं विधान तद्दन कल्पित अने अप्रमाणिक ठरे छे.

पूर्वाचार्य महाराजाओ बारमा सैका पहेलांना होय, सुविहितोमां तेमनी गणना होय, तेमना ग्रंथो प्रमाणभूत तरीके परंपराथी मनाता आवता होय; अने ओ वातमां लेखकश्रीने पण मतभेद न होय तो पछी सहृदय विद्वानोने तेओश्रीना विधानोने अप्रमाणिक अने उतावलीओ ठरावववामां कोइपण प्रकारनो वांधो रहेवा पामतो नथी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सौथी पहेलां अमे १४४४ ग्रंथना प्रणेता सूरिपुरंदर श्री हरिभद्रसूरिश्वरजी महाराजना सर्वमान्य अने प्रसिद्ध बेज ग्रंथोना प्रमाणो रजु करीअे छीअे—

श्रीषोडशक प्रकरण--९ मुं श्लोक १-२.

स्नान-विलेपन-सु-सुगन्धि पुष्प धूपाऽऽदिभिः शुभैः कान्तम् ।
विभवाऽनुसारतो यत् काले नियतं विधानेन ॥ १ ॥
अनुपकृत-पर-हितः शिवद-स्त्रि-दशेश पूजितो भगवान् ।
पूज्यो हित-कामाना-मिति भक्त्या पूजनं पूजा ॥ २ ॥

"उपकार न करनारा अेवा बीजाओनुं हित करनारा, मोक्ष आपनारा, इन्द्रोए पूजेला, भगवान हितनी इच्छावालाओने पूज्य छे." ऐम समजीने.

○ भक्तिपूर्वक.
○ योग्य वखते,
○ चोक्कस—नियमपूर्वक.
○ विधि पूर्वक.
○ पोताना वैभवने छाजे ते रीते—
○ शुभ अेवा स्नान-विलेपन-सुगन्धि पुष्पो अने धूपादि वडे.
○ मनोहर.
जे--पूजन.
ते—पूजा १--२.

आ बे श्लोकमां—पूजानी व्याख्या करी छे तेमां स्नान अने विलेपन शब्दो स्पष्ट जोइ शकाय छे. तेमां ○ आवी निशानीवाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सात शब्दो ऊपर खास भार मूकवामां आवेलो छे ते छोडी दई मात्र "काले"--अने "नियत" ओ बे शब्दो तरफ लक्ष्य खेंचीओ छीओ.

नियत—शब्दनो अर्थ अत्रे—**"नियमपूर्वक दररोज"** एवो एटला माटे करीए छीए के आज आचार्य महाराजश्रीओ पोतानाज श्री पंचाशक ग्रंथमां काले शब्दनो अर्थ "त्रण संध्या" एवो करेलो छे.

ज्यारे त्रण संध्याए पूजा करवानी भलामण करवामां आवती होय तो पछी अर्थापत्तिथी रोज एक वखतनी भलामण तो अवश्य आवीज जाय ए निर्विवाद छे. एटले त्रण संध्याए रोज चोक्कस नियमपूर्वक पूजा करवी. ए **'काले'** अने **'नियत'** शब्दनो अर्थ छे.

आ उपरथी रोज स्नान अने विलेपन पूजानी भलामण बारमा सैका पहेलां चारसो वर्ष पहेलानां श्री हरिभद्रसूरिश्वरजीनाज खात्री बंध गणाता प्रसिद्ध षोडशक प्रकरणमां उपर प्रमाणे सौ स्पष्टता पूर्वकज जोई शकीये छीये.

हवे काले शब्दनो श्री पंचाशकमां शो अर्थ करवामां आवेलो छे ते आपणे जोई लईए.

पंचाशक ४ थुं

काले सूइ–भूएणं विसिट्ठ-पुप्फाइएहिं विहिणा उ ।
सार–थूइ थोत्त--गरुई जिण-पूजा होइ कायव्वा ॥ ३ ॥
कालम्मि--कीरमाणं किसि–कम्मं बहुफलं जहा होइ ।
इय सव्वच्चिय किरिया णिय-णिय कालम्मि विण्णेया ॥ ४ ॥
सो पुण इह विण्णेओ संझाओ तिण्णि ताव ओहेण ।
वित्ति किरियाऽविरुद्धो अहवा जो जस्स जावइओ ॥ ५ ॥
ताऽऽसिं अ-विरोहेणं आभिग्गहिओ इह मओ कालो ।
तत्थाऽवोच्छिण्णो जं णिच्चं तक्करण–भावो त्ति ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ:—काले--त्रणेकालमां पूजा करवाना काले, पवित्र थईने विशिष्ट फूल विगेरे वडे अने उत्तम स्तुति स्तोत्रथी गौरववाली, विधि-पूर्वक जिनपूजा करवी जोईए. ३

योग्य वखते करवामां आवता खेतीना काम बहु फल आपनार थाय छे, ए प्रमाणे सर्व कामो पोतपोताना वखतोमांज बहु फल आपनारा जाणवा. ४

अहीं तो काल सामान्य रीते त्रण संध्या रूप जाणवो. अथवा

आजीविकाना कामोमां विरोध न आवे ते रीते--जेने जेटलो मले तेटलो तेने माटे (काल) समजवो. ५

○माटे—

आजीविकाना कार्यमां अडचण न आवे ते रीते पूजा करवानो नियम सचवाय ते रीते अहीं (अपवाद स्थाने) वखत लेवानु मान्य गणेलु छे.

केमके—

ठरेल वखत विना पण (आगल पाछल करवामां आवती पूजानो)

अभिग्रह होय तो पूजा करवानो भाव हम्मेशने माटे अखंड रीतनो टकी रहे छे. ८

आ पाठमां—"काले" शब्दनो अर्थ "त्रण संध्याए पूजा करवानो वखत (उत्सर्गथी-मुख्यपणाए) छे अेम स्पष्ट रीते जणाई आवे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे "काले" शब्द षोडशक प्रकरणमां छे ते ज अर्थमां "काले" शब्द पंचाशकजीमां पण अपायेलो छे अने तेनी उपर प्रमाणे समजण आपी छे. तेमज आठमी गाथामां "णिच्चं" शब्द पूजानो भाव टकवानी बाबत साथे सीधो संबंध राखे छे छतां नित्यपूजा साथे पण परंपराए संबंध धरावे छे. आ उपरथी रोज त्रण संध्याए पूजा करवानी भलामण होवानुं बहुज सारी रीते स्पष्ट थई जाय छे.

एटले–षोडशकने आधारे–नित्य स्नान विलेपन पूजा १२ मा सैका पहेलांनी होवानुं सुविहित पुरुषोना प्रमाणभूत ग्रंथना प्रमाणथी नक्की थई जाय छे.

उपरांत श्री पंचाशकजीनो पाठ नित्यस्नान विलेपन पूजानुं केवी रीते समर्थन करे छे ? ते पण जोई लईए, जेथी आपणने सचोट रीते खात्री थई जाय के बारमा सैका पहेलां घणा सैकाओ पहेलांथीज सुविहित पुरुषो नित्यस्नान विलेपन पूजानो उपदेश आपता हता.

उपर जणावेली पंचाशकजीनी ३ जी गाथामांना 'काले' शब्दनी रोज पूजा करवानी हकीकत उपर अमे समजाव्युं, हवे तेनो त्रीजी गाथामांज.

विसिट्ठ-पुप्फाऽऽइहिं शब्दो छे. तेनो विस्तार १४ मी अने १५ मी गाथामां समजाववामां आवेलो छे. तेथी पण नित्य स्नान अने विलेपन पूजा समजी शकशे.

ते गाथाओ आ प्रमाणे छे—

गंध-वर धूव सव्वोसहीहिं उदगाऽऽइएहिं चित्तेहिं ।
सुरहिं-विलेवण-वर-कुसुम-दाम बलि-दीवएहिं च ॥ १४ ॥
सिद्धत्थय-दहि-अक्खय-गोरोयण माइएहिं जह लाभं ।
कंचण-मोत्तिअ-रयणाऽऽइ-दामएहिं च विविहेहिं ॥ १५ ॥
युग्गम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थः—जे मेलवी शकाय-के मले तेवा विविध प्रकारना उत्तम—

सुगंध युक्त धूप वडे:

सर्व औषधिओ वडे: [मिश्र]

विचित्र पाणी विगेरे वडे:

सुगंधि विलेपन वडे:

सुन्दर फूलोनी माला वडे:

बलि-नैवेद्य अने दीपक वडे:

सरसव: दहिं: चोखा: अने गोरचन: विगेरे वडे: सोनानी माला: मोतीनी माला अने रत्नोनी माला वडे: करीने—

["विधिपूर्वक जिनपूजा काले-त्रण संध्याए करवी जोईए." एम त्रीजी गाथा साथे संबंध जोडी गाथानो अर्थ करवो.] गाथा–१४-१५.

श्रीनवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरीश्वरजी महाराजाए "पाणी विगेरे" —त्यां आदि शब्दथी—"शेरडीनो रस, घी-दुध विगेरे लेवा" एम जणाव्युं छे. आ बंनेय गाथाओं स्पष्ट रीते नित्य स्नान विलेपन पूजानी भलामण करे छे. तेनी साथे १६--१७--१८ मी गाथाओमां आ जातनी पूजा करवाना महत्त्वना कारणो पण बतावेला छे के—

"उत्तम साधनोथी घणे भागे उत्तम भाव थाय छे. तथा जेनी पासे आवा उत्तम पदार्थो जो विद्यमान होय तो तेओनो आनाथी वधारे उंचा प्रकारनो आ शिवाय बीजो कोई उपयोग नथी, आ लोक अने परलोकना हितकारी कार्योमां पारलौकिक कार्य वधारे उंचा प्रकारनुं छे. अने ते भावनी मुख्यताथी साधी शकाय छे. अने ते भाव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पण उपर जणावेला उत्तम पदार्थोनो उपयोग करवा उपरथी जाणी शकाय छे. माटे जिनेश्वर देवो उपरना बहुमान पूर्वक बुद्धिमानपुरुषे पोताना वैभवने अनुसारे विशिष्ट प्रकारना पुष्पादिक वडे जिन पूजा करवी."

बारमा सैका पहेलां घणा सैकाओ पहेलां नित्य स्नान अने विलेपन पूजानो उपदेश सुविहित पुरुषो आपता हता हवे तेमां शी शंका रहे छे ?

आ बे पाठ मात्र सर्वमान्य सुविहित पुरुषोमांना श्री हरिभद्र-सूरीश्वरजी महाराजना षोडशक अने पंचाशकजीनाज अमे आप्या छे. बीजा पाठो नथी एम नथी परंतु आटलाज पाठोथी शास्त्र अने ऐतिहासिक प्रमाणथी १२ मा सैका पहेलां नित्य स्नान अने विलेपन पूजा नक्की थई जाय छे.

हवे अमे श्री आगमना पाठो आपीने आ "श्री जिनपूजा पद्धति" विषेनी लेखमालानो पहेला हप्तो पूरो करीशुं. अमने आश्चर्य तो ए थाय छे, के—आ जातना स्पष्ट पाठो छे ते प्रस्तुत पुस्तिकाना लेखकना वांचवामां आव्या तो होवाज जोईए, कदाच गुरुगम विना उपर उपरथी वांची काढ्या हशे ?, अथवा पोतानी धारणा तरफ लोकोने खेंची जई आडे मार्गे दोरवी जवाना इरादाथी जाणी करीने ते पाठो नहीं आप्या होय ?

षोडकजीनो एक श्लोक तथा जिनपूजामां हिंसा अहिंसा पंचा-शकजीमांनी चर्चानी गाथाओ प्रस्तुत पुस्तिकामां मूकेलीज छे, तेथी षोडशक अने पंचाशकजी जेवा प्रसिद्ध ग्रन्थ लेखकना वांचवामां आवेला छे. तेथी अमने बीजो विकल्प वधारे संभवित लागे छे. पछी तो लेखक पोताना तरफथी कांई योग्य खुलासो करे, तो खरु कारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समजी शकाय. ए बे ग्रंथोना उपर जणावेला पाठो नित्यस्नान विलेपन पूजानुं प्रतिपादन करेज छे. श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजाए श्री नंदीसूत्र उपर टीका रची छे. अने श्री नंदीसूत्रमां मूलमांज श्री आगमोनां नामो आवे छे तेमां आवता **श्री महानिशीथ सूत्र** अने **श्री महाकल्प सूत्र** एम बे आगम सूत्रोना मूल पाठो आपीने आ लेखमालानो पहेलो हप्तो पूरो करीशुं.

श्री महानिशीथ सूत्रना—त्रीजा अध्ययनमां नीचेनो पाठ छे.

"जहा किल अम्हे
अरहंताणं भगवंताणं
गंध-मल्ल-पईव-संमज्जणोवलेव-विचित्त-
वत्थ-बलि-धूवाऽऽइएहिं पूया-सक्कारेहिं
अणुदियहं [पइदिण] मऽब्भच्चणं पकुव्वाणा
तित्थुस्सप्पणं करेमो"

जैनागम संजुषा पृ० २८२ शि. नं० ४

अर्थ—"जेमके-गंध, माला, दीपक, सारी रीते स्नपन [संमज्जण] विलेपन (उवलेप) विचित्र प्रकारना वस्त्रः बलि (नैवेद्य) धूप, विगेरेनो जेमां उपयोग करवामां आवे छे तेवा प्रकारना पूजा अने सत्कार वडे करीने अनु दिवस (प्रतिदिन) (दररोज) अरिहंत भगवंतोनुं अभ्यर्चन (पूजा) करनारा अमे तीर्थनी जैनशासननी—उत्सर्पणा—उन्नति करीशुं."

आ पाठमां संमज्जण अने उवलेव ए बे शब्दो तद्दन स्पष्टज छे. संमज्जण एटले सारी रीते (सुगंधी द्रव्यो विगेरे साथे) भगवानना प्रतिमाजीने न्हवराववा, उवलेप एटले विलेपन-चंदनादिकनो विलेपन.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सौथी महत्त्वनो शब्द अणुदियहं--अनुदिवस दिवसे दिवसे [पइदिणं= प्रतिदिन] दररोज अर्थ सूचवनारो छे. एथी पर्वो, कल्याणकादि मोटा दिवसो अने उत्सवादिकमां मात्र स्वपन अने विलेपनपूजा थती हती." अे वात ज हवामां उडी जाय छे.

अनुदिवस = प्रतिदिन शब्द ए असत्य वातनी गंध पण टकवा दई शके तेम नथी. आ वस्तु वांचको बहुज स्पष्टताथी लक्ष्यमां लई शकशे.

नोंध--जैनागम मंजुषामां--"अणुदियहं" पाठ छे, बीजे स्थले "पइदिणं" पाठ छे. एटले बने पदनो अर्थ एकज छे.

श्री महाकल्पसूत्रमां नीचे प्रमाणे पाठ छे.—

—चेइया--ऽऽलएसु ति-संझं चंदण-पुप्फ-धूव-वत्था-ईहिं-अच्चणं कुणमाणा० जाव० विहरंति ।

से तेणऽट्ठेणं गोयमा । जो जिण-पडिमं न पूएइ,
सो मिच्छ-दिट्ठी जाणियव्वो । मिच्छ-दिट्ठिस्स णाणं न हवइ,
चरणं न हवइ, मुक्खो न हवइ ।
सम्म-दिट्ठिस्स नाणं चरणं मुक्खो हवइ ।

से तेणऽट्ठेणं गोयमा । सम्म-दिट्ठि-सड्ढेहिं जिणपडिमाणं सु-गंध-पुप्फ-चंदण-विलेवणेहिं पूया कायव्वा ।

अर्थः—'चैत्यमंदिरो'मां चंदन, फूल, धूप, वस्त्र विगेरे वडे करीने त्रण संध्याए अर्चन--पूजा करतां थकाथी मांडीने विहरे छे. (एम पाठ जोडवानुं समजवुं.)

हवे तेनो हेतु हे गौतम ! अे छे के—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे जिन प्रतिमानी पूजा नथी करतो, तेने मिथ्यादृष्टि जाणवो.

मिथ्यादृष्टिने ज्ञान न होय. चारित्र न होय. मोक्ष न होय. सम्यग्दृष्टि ने ज्ञान, चारित्र अने मोक्ष होयज ते माटे, हे गौतम! सम्यग्दृष्टि श्रावकोए सुगंधी पुष्प, चंदनना विलेपन वडे पूजा करवी.

आ पाठमां—"त्रण संध्या" अने "चंदननो विलेपन" ए बे शब्दो खास ध्यान खेंचे छे.

स्नान विना विलेपन संभवे नहीं, अने त्रिसंध्या शब्द नित्य विलेपननी आज्ञा साथे नित्य स्नान अर्थ उपलक्षणथी खेंची लावे छे.

अमने लागे छे के—आटला महत्त्वना पाठो पूरता छे. नित्य स्नान अने विलेपन पूजा प्राचीन कालथी चाली आवे छे. अने तेना उपर पण प्रथमथीज भार मूकातो आव्यो छे. पाछलना कोई आचार्योए नवीन उपदेशी नथी के नवो भार मूकी प्रचार कर्यो नथी. तेथी **कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य प्रभु** तथा **श्री चैत्यवंदन महा-भाष्यना कर्ता श्रीशांतिसूरिजी महाराज** उपरना लेखकश्रीए करेला जे आक्षेपो छे, ते, मीण ओगली जाय तेम ओगली जाय छे.

केमके—ते तद्दन नकामा, अने बिनपायादार ठरे छे.

चैत्यवंदन महाभाष्यनो साक्षात पाठ तो तेओश्रीए इरादापूर्वक आप्यो जणातो नथी.

ते पाठ आ प्रमाणे छेः—

एहवण- विलेवण–आहरण--वत्थफल--गंध धूव-पुप्फेहिं । कीरइ जिण-ङ्ग-पूआ तत्थ विही एस नायव्वा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ:—१ स्नान २ विलेपन ३ आभरण ४ वस्त्र ५ फूल ६ गंध ७ धूप अने ८ पुष्प वडे जिनेश्वरदेवनी अंगपूजा कराय छे. तेनो विधि आ जाणवो.

आवा आवा घणा ग्रंथोना पाठो विस्तारभयथी अमे अहीं आपता नथी. आ चैत्यवंदन महाभाष्यनो पाठ पण अमे आपवा न होता इच्छता केमके ते १२ मा सैका पछी रचायेला ग्रंथनो छे. छतां जे ग्रंथना पाठ लेखकश्रीए आपेला छे, तेज ग्रंथमां अंगपूजाना आठ प्रकारोमां रोज स्नान विलेपन पूजा स्पष्टताथी लखेली छे. केमके—अंग, अग्र, भाव अने पतिपत्ति ए चार प्रकारमांनी सामान्यपणे श्रावकोने त्रण प्रकारनी पूजा रोज करवानी छे. तेथी रोजनी अंग-पूजा, अग्रपूजा अने भाव पूजा. ए त्रण पूजानो विचार प्राचीन कालथी चाल्यो आवे छे. ते मुख्य त्रण प्रकारनी वात छोडी दइने पचोपचारी विगेरे त्रण प्रकारनी पूजा लइने तेनाज पाठो उक्त पुस्तिकामां लेखकश्रीए मूकया छे. अंगपूजामां स्नान विलेपनने अवश्य स्थान छे. ते उपरना पाठथी स्पष्ट जणाइ आवे छेज. पूजाना घणा प्रकारो छे. तेथी जलपात्र भरी सामे मूकीने जलपूजा करवानी सामे अमारो तो विरोध छेज नहीं.नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरीश्वरजी महाराजाए पण बंने विकल्पो स्पष्ट शब्दोमां स्वीकार्यां छे. तेमज उपरना पाठोने आधारे नित्य स्नान विलेपन पूजा इतिहास अने शास्त्रसिद्ध होवामां कोइनेय शंका रही शके तेम नथी ते प्रमाणभूत शास्त्रोना पाठो छे, तथा बारमा सैका पहेलां रचायेला ग्रंथो होवानुं ऐतिहासिक प्रमाणोथी सिद्ध छे, पंचोपचारी अने अष्टोपचारी पूजाना जुदा जुदा प्रकारोमांना अमुक प्रकारमां पखालपूजाने स्थान केम नथी ? तेनो पण खुलासो पूर्वाचार्य महाराजाओए व्यवस्थित रीते आपेलो छे. आवश्यकता पडशे तो ते पण जणावीशुं जेथी सौने आनंद थशे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतमां प्राचीन कालथी राज्याभिषेक विगेरे घणा प्रकारना प्रसंगोमां 'जलाभिषेक'' ए पूजाना प्रकारो मांनो मुख्य प्रकार छे. श्री ऋषभदेव प्रभुने राज्याभिषेक वखते इन्द्रे अभिषेक करेलो छे. युगलिक लोको अभिषेक माटे कमलना पडीआओमां जल लावे छे. अने अभिषेक थइ गयेलो होवाथी जमणे अंगूठे अभिषेक करीने विधि साचवे छे. तथा इन्द्रादिक देवो पण जन्म थया बाद श्री जिन-प्रभुने मेरुपर्वत उपर लई जई मुख्यपणे तो जलाभिषेक पूजा करे छे. ए बधुं प्रसिद्ध छे. वली जन्मावस्थानी जेमज राज्यावस्था भाववामां राज्यकार्य ठाठथी जलाभिषेकने पण अपेक्षाए स्थान छे. श्री सिद्धार्थ राजानी स्नानविधि श्री कल्पसूत्रमां सारी रीते दीवा जेवी स्पष्ट अने हम्मेशनी वस्तु तरीके वर्णवायेली छे. ते नित्य स्नान विलेपन पूजानो अपलाप केम करी शकाय ?

"जैन'' पत्र पण जो सत्यने मान आपनानी धारणा लेश मात्र पण सेवतुं होय, तो पोताना पत्रमां आ लेख छापीने ऐतिहासिक अने शास्त्र पाठोने नामे धार्मिक लोकोने भ्रमणामां नांखवामां सहकार आपवानुं करेलुं ताजुं पाप इच्छशे तो धोई शकशे.

'जैन' पत्रना लेखके समजवुं जोइए के—जेम फाउंटन पेनना बजारमां ढगला जोइने कोइ एम मानी बेसे के—"हजार वर्ष पहेला पण फाउंटनपेन हशे" तो ते भूल थाय ए बराबर छे तेज प्रमाणे कोई पोताना स्वर्गस्थ बापने न जुए, तेटला उपरथी 'तेना वडवाओनुं अस्तित्वज न होतुं, अथवा बधाये न बापा ज हता' एम मानी बेसे, तो ते पण भूल थाय के नहीं ? उत्सूत्र प्ररुपणाथी भीरु सुविहित पूर्वाचार्य महाराजाओ विना आधार कोइ पण न लखवामां सावचेत हता के नहीं ? शुं मावो छो ? आ लेखनी समाप्ति पछी नीचे प्रमाणे नामवार लेखो शरु थशे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) नित्यस्नान न होवाना पूरावाओनी पाछलनुं जुदुं ज सत्य!

(३) बिनपायादार ऐतिहासिकता.

(४) भाषानी तोछडाई अने हकीकतोने मरोडवानी कला.

(५) लेखकश्रीनी आश्चर्यकारक मनोदशा.

(६) पुस्तिकानी निष्फलता निरुपयोगिता.

ए पांच मथालांथी आज रीते लेखो लखी आ "जिनपूजा पद्धति" नी अप्रमाणिकता अने निष्फलता लेखमाला लखवानी धारणा राखी छे. जेथी लेखकश्रीए कशाए विचार विना बेकाम रीते खडी करेली भ्रमजाल संतोषकारक रीते तूटी गयेली कशाएं पूर्वग्रह विना खुल्ली रीते विद्वान् अने सर्व सामान्य वाचक महाशयो जोइ शकशे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"श्रीजिनपूजा पद्धति" पुस्तिकानी निष्फलता.

(२)

नित्य स्नान न होवाना पूरावाओनी पाछलनुं जुदुं ज सत्य (!)

हवे आपणे—

"पूर्वे जिनपूजामां नित्य स्नान न होवानां प्रमाणो—"

ए मथाला नीचे जे त्रण शास्त्रपाठोना प्रमाणो लेखके आप्या छे ते विषे थोडो शांतिपूर्वक प्रमाणभूत विचार करी लइए:—

तेमां—प्रथम – आचार्य श्री पादलिप्तसूरिजी महाराजनी "प्रतिष्ठा-पद्धति, बीजुं श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजना ग्रंथना नाम वगरनो एक श्लोक के जे तपास करतां षोडशक प्रकरणना ८ मा प्रतिष्ठा षोडशकनो १६ मो एटले के छेल्लो श्लोक छे.

अने त्रीजुं प्रमाण श्री चंद्रसूरिजी महाराजनी प्रतिष्ठा पद्धतिनुं छे अने तेनी विरुद्धमां चौदमा शतक पछीना प्रतिष्ठा कल्पोमांनुं एक वाक्य आपेलुं छे. ते सर्व तपासी लइए. तेमां प्रथम अमे श्री षोडशक प्रकरणना श्लोक विषे विचारणा रजु करीशुं,

आठमा प्रतिष्ठा षोडशकना पहेला श्लोकमां कह्युं छे, के—

"तैयार थयेला प्रभु प्रतिमाजीनी प्रतिष्ठा दश दिवसनी अंदर जल्दी करी लेवी जोइए. विगेरे"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पछी १५ मा श्लोको सुधीमां सामान्य रीते प्रतिष्ठानो विधिने लगती बाबतो सूचित करेली छे. अने छेल्ले सोलमा श्लोकमां जणाव्युं छे के—

अष्टौ दिवसान् यावत् पूजाऽवेच्छेदतोऽस्य कर्तव्या ।
दानं च यथा-विभवं दातव्यं सर्व सत्त्वेभ्यः ॥ १६ ॥

अर्थ—ए प्रतिमाजीनी आठ दिवस सुधी तुटक पडवा दीधा विना-सतत-पूजा करवी.

अने सर्व प्राणीओने पोताना वैभव अनुसार दान आपवुं १६.

आ श्लोक लेखके नित्य स्नान पूजानो अभाव साबित करवामां आप्यो छे.

वांचक महाशयो जोइ शकशे के उपरना श्लोकमां तो आठज दिवस सतत् पूजा करवानुं कहेलुं होवानुं जोइ शकाय छे. पछी तेमां स्नान पूजाना निषेधनी वातज क्यां आवे छे. ? "आठज दिवस निरंतर पूजा करवी." आटलोज आशय आ श्लोकनो होय तो ते श्लोक एकली नित्य स्नान पूजानोज आडकतरो निषेध सूचवे छे, एम क्यां छे ? ते तो आडकतरी रीते पण कोईपण प्रकारनी पूजानो आठ दिवस पछी निषेध सूचवे छे. एटले के ए श्लोकथी आठ दिवस पछी कोईपण प्रकारनी पूजा न करवानुं सूचवाय छे. तेमां एटली स्नान पूजाना निषेधनी गंध पण नथी तो पछी लेखके एकली नित्य स्नान पूजानो निषेध आ श्लोक उपरथी शी रीते तारव्यो हशे ? ए विषे विद्वान पुरुषो लेखकने बेधडक पूछीने तेमनी पासेथी खुलासो मेलववा हक्कदार छे. लेखके तेनो शांतिपूर्वक खुलासो करवोज जोइए ए वस्तु न्यायसरनी छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु आ ठेकाणे खरी वातज जुदी छे. ते जाण्या पछी वांचक महाशयो आश्चर्यचकित थशे, के—"नित्य स्नानना निषेधमां आ श्लोक टांकवामां लेखक महाशये केवडी बधी गंभीर गफलत खाधी छे?

ते खरी वात नीचे प्रमाणे छे:—

आ आठ दिवसनी पूजा ते प्रतिष्ठाने अंते तेना अंगरूप अवश्य करवा जोइता अट्ठाई—महोत्सव करवानी भलामणरूप छे. रोजनी पूजा साथे आ श्लोकने कांइपण संबन्ध नथी ए बराबर ध्यानमां राखवुं.

आ श्लोक पछीज तुरत ९ मुं पूजा षोडशक शरू थाय छे. अने तेना बे श्लोको प्रथम लेखांकमां अमे आपी गया छीये. तेमांना काले अने नियतं शब्दो उपरना विवेचनथी नित्य स्नान विलेपन पूजानो बारमा सैका पहेलां पण सुविहित पुरुषो तरफथी जोरदार रीते उपदेश थतो हतो ए साबित करी आपेलुं छे.

आ श्लोकनो संबन्ध अट्ठाई—महोत्सव साथे छे. ते हकीकत सचोट रीते श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजना आठमा प्रतिष्ठा पंचाशक मांनी छेल्ली पांच गाथाओथी बराबर पुरवार थाय छे.

अने ते उपरथी नित्य स्नाननो निषेध नहीं, पण स्नान विलेपनने नित्यनी पूजामां स्थान होवानुं पूरवार थाय छे.

ते पांच गाथाओ आ प्रमाणे छे:—

कयमेत्थ पसंगेणं उत्तर-कालोचिअं इहऽण्णं पि।
अणुरूवं तित्थुण्णति-कारगं णियमा ॥ ४६ ॥
उचिओ जणोवयारो विसेसओ णवरि स-यण-वग्गम्मि।
साहम्मि-वग्गम्मि य एयं खलु परम-वच्छल्लं ॥ ४७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठा-ऽहिया य महिमा सम्मं अणुबंध-साहिगा केइ ।
अण्णे उ-निण्णिदियहे णिओगओ चेव कायव्वो ॥ ४८ ॥

तत्तो विसेस-पूआ-पुव्वं विहिणा पडिस्सरो मुयणं ।
भूय-बलि दीण-दाणं एत्थं पिस सत्तिओ किंपि ॥ ४९ ॥

तत्तो पडिदिण-पूया-विहाणओ तह तहेह कायव्वं ।
विहिताऽणुट्ठाणं खलु भव-विरह-फलं जहा होंति ॥ ५० ॥

भावार्थ:—"हवे (उपरनी चालती श्री संघ पूजानी) ए प्रासंगिक वात अहीं बंध करीये छीए. प्रतिष्ठा पछी पण जे जे कांइ बीजुं करवा जेवुं होय, शासननी उन्नति करनारुं बधुंये घटतुं चोक्कस करवुं ४६.

उचित रीते लोकोनो सत्कार करवो.

परन्तु, पोताना सगा संबंधिओनो तो विशेष प्रकारे करवो. अने तेथीए विशेष प्रकारे साधर्मिक वर्गमां करवो जोइए केमके खरेखर ए उत्कृष्ट वात्सल्य छे. ४७.

केटलाक आचार्य महाराजाओनुं कहेवुं छे के—

"पछी पण पूजानी परंपरा चाले तेवो अट्ठाई महोत्सव घणी सारी रीते करवो" त्यारे.

बीजा आचार्य महाराजाओ एम कहे छे के—

"त्रण दिवसनो महोत्सव तो अवश्य करवोज (तेना विना तो चालेज नहीं) ४८.

ते वार पछी—विशेष पूजायुक्त विधिपूर्वक कंकणनुं मोचन करवुं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ए वखते पण—प्रेतोने बलि अने दीनोने दान पोतानी शक्ति प्रमाणे थोडां पण आपवां. ४९

ते वार पछी श्री जिनेश्वर प्रभुना बिंबनी प्रतिष्ठा थइ एटले रोज रोज पूजा करवी. विगेरे [1]अनुष्ठानो एवी रीते करवाज के—जेथी भवना विरहरूप—मोक्षरूप फल उत्पन्न थाय. ५०

प्रतिष्ठा विधि समाप्त.

आ उपरथी आठ दिवस पछी पूजा बंध करवानी वातनी कयांय गंध पण नथी. उलटामां ४८ मी अने छेल्ली गाथामां रोज पूजा करवानी वात भार दइने करवामां आवी छे. प्रतिदिन पूजा केम करवी ? तेमां नित्य स्नान अने विलेपन पूजा केवी रीते करवानो छे ? ए बात आनी पहेलांना लेखमां **षोडशक — पंचाशक — महानिशिथसूत्र महाकल्पसूत्र** अने **चैत्यवंदन महाभाष्यना** पाठोथी—निर्विवाद रीते = असंदिग्ध रीते बतावी देवामां आवेलु छे.

बारमा सैका पहेलां पण कालांतरथी चाली आवती नित्य स्नान पूजा होवाना अकाटय ऐतिहासिक अने निर्विवाद प्रमाणभूत शास्त्र—पाठोना प्रमाणोथी व्यवस्थित रीते बतावा आव्या पछी विद्वानोने आ बाबतमां आथी विशेष शु जोइए ? "**कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य महाराजश्री** अने **चैत्यवंदन महाभाष्यकार श्री शांतिसूरिजी महाराजश्रीए** पण पूर्वाचार्य महाराजाओना परंपरा-

१. अनुष्ठानो करवा—ए शब्दनु व्याख्यान नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरीश्वरजी महाराजे—"पूजा-वंदन-यात्रा (वरघोडा) स्नान-(स्नात्रोत्सव) विगेरे" एम कहेलु छे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गत विधानोथी कांइपण नवुं कह्युं नथी." ए पण वांचक महाशयो सारी रीतेज जोइ शकशे. तेम छतां तेओ उपर आक्षेप करवामां आव्यो छे. जे तद्दन निराधार छे ते स्पष्ट करवानी हवे विशेष जरूर रहेती नथी **श्री पादलिप्ताचार्य महाराज** अने श्री चन्द्रसूरिजी महाराजनी **प्रतिष्ठा पद्धतिओना** अवतरणो पण प्रतिष्ठा पछी पण जे प्रतिष्ठा विधिने अंगे महोत्सव करवाना छे, तेनीज भलामण करे छे अने चौदमा सैका पछीना प्रतिष्ठा कल्पो पण एज भलामण करे छे. तेमां नित्य स्नान पूजाना निषेधनी के विधाननी गंध पण कयां छे ? के जेथी तेमांथी नित्य स्नान पुजानो निषेध तारवीने निषेधना प्रमाणो तरीके ते बन्नेय प्रतिष्ठा-पद्धतिओना प्रमाणो आपवानो एक वधु पडतो डोल करी लोकोने भ्रमणामां नाखवानु उत्सूत्रप्ररूपणारूप महापाप शा माटे व्होरवुं पडयुं हशे ? अने शा कारणे आम करवानी मनोदशा थइ हशे ?; ते समजी शकातुं नथी.

श्रीचन्द्रसागरसूरिजी महाराजनी प्रतिष्ठा पद्धतिमां 'द्वादश मासिक-स्नानानि' शब्दो छे. तेनो अर्थ लेखके—"१२ मासिक स्नानोत्सव" कर्यो छे अने ते बराबर छे. हवे ते पुजापद्धतिना तेमणे आपेला पाठोज वांचक महाशयोने स्पष्ट विचार करवानी तक मले माटे तेमना अने अमारा अर्थ साथे आपीये छीये.

"ततो मासं प्रति [एक मिति] द्वादश-स्नपनानि कृत्वा पूर्णे संवत्सरे अष्टा-हि-पूर्विकां विशेष-पूजां विधाय दीर्घा-ऽऽयुर्ग्रन्थि निबन्धयेदिति ।

[श्री पादलिप्तसूरि प्रतिष्ठापद्धति]

अर्थात्—"प्रति मास एकवार एवा बार स्नपनो करीने वर्ष पुरं थया पछी आठ दिवसना उत्सवपूर्वक विशेष पुजा करवी. अने दीर्घा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युष्य निमित्ते गांठ बांधवी." लेखकश्रीए लखेलो आ अर्थ छे. नीचे प्रमाणेना शब्दोमां एनो अर्थ अमे आपीये छीये, जे के बहु फरक नथी.

"ते बार पछी—महिने महिने एक स्नात्र महोत्सव करी वर्ष पुरु थये अट्ठाई–महोत्सवपुर्वक विशेष पुजा करीने दीर्घायुष्यनी वर्ष-गांठ बांधवी."

"प्रतिष्ठावृत्तौ द्वादश-मासिक-स्नानानि कृत्वा, पूर्णे वत्सरे अष्टा-ऽहिकां विशेष-पूजां च विधाय आयुर्ग्रन्थि निबन्धयेत् ।"

[श्री चन्द्रसूरि प्रतिष्ठा पद्धति]

अर्थात्—"प्रतिष्ठा वित्या पछी १२ मासिक स्नानोत्सव करा-वीने वर्ष पुरु थया बाद अट्ठाइ उत्सव अने विशेष पुजा करीने आयु-ष्यनी गांठ बांधवी."—प्रतिष्ठा वीत्या पछी महिने महिने एम बार स्नानोत्सव करीने वर्ष पुरु थये अष्टाह्निका महोत्सव अने विशेष पुजा करीने आयुष्यनी गांठ बांधवी. आमां बहु फरक नथी.

आज वात पाछलना चौदमा शतक पछीना प्रतिष्ठा कल्पोमां पण—

"द्वादश-मासान् स्नात्रं कृत्वा" (जेना ग्रंथनु नाम लेखके आप्यु नथी.)

"बार महिनाना स्नात्र करीने" एमां पण वास्तवीक रीते बार महिनाना बार स्नात्रो सूचित छे. तेमां रुख शु बदलाय छे ? ते सम-जाव्यु नथी. उपरना आ वाकयनो आवो आशय होय के—"बार महिना सुधी रोज स्नात्र महोत्सव करीने" तो जरूर रुख बदलाय छे. परन्तु ए प्रमाणे बार महिना सुधी रोज स्नात्र करवानो विधि शु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हालमां प्रचलित छे ? के जेथी ए आशय काढवो पडे कारण के १७ मा सैकामां प्रतिष्ठाविधिनी रचना करनारा श्री सकलचन्द्रजी उपाध्यायजी महाराज लखे छे के.

"प्रतिष्ठावृत्तौ द्वादश मासिकस्नपनानि कृत्वा पूर्णे वत्सरे अष्टाह्निकां विशेष-पूजां च विधाय आयुर्ग्रन्थि निबन्धयेत् । उत्तरोतर पूजा च यथा स्यात् तथा विधेयम् ॥"

(पृ० ६६)

उपरनो पाठ पण पुज्यपाद–महोपाध्याय श्री सकलचंद्रजी गणिकृत प्रतिष्ठाकल्प (अंजनशलाकाविधि) ना विधि विधानना अर्थ उपर प्रमाणे छे एटले चौदमां सैका पछीना कल्पो पण प्राचीन कल्पोथी आ बाबतमां कयां जुदा पडे छे ? अने ज्यारे नित्य स्नान विलेपन पुजानी भलामण शास्त्र सिद्ध छे. तो विशेष प्रतिष्ठा पछी नित्य स्नात्र विशेषमां करे तो पण जैनशास्त्रो के उपरनी प्राचीन प्रतिष्ठा प्रद्धतिओ साथे विरोध आवे तेम नथी कारण के बार स्नात्रोत्सवो करवानी खास भलामण छे. एटला उपरथी रोजना स्नात्रोनो निषेध तेओने पण इष्ट नथी. जे प्रतिष्ठा पंचाशकनी छेल्ली गाथा उपरथी स्पष्ट समजी शकाय छे. "नित्यं स्नात्रं कृत्वा" ए प्रमाणे लखेलु न होवाथी, बार महीनाना बार स्नात्रोत्सवोनीज शब्दान्तरथी भलामण समजवामां वांधो जणातो नथी एटले रुख बदलाती नथी. एम अमारी समज छे. रुख बदलाती होय तो पण विरुद्ध नथी.

हा स्नपन–स्नान अने स्नात्र–एम एकार्थक शब्दोनो फरक छे. आमां कोइपण ठेकाणेथी नित्य स्नान विलेपन पुजाना निषेधनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गंधनी संभावना पण लेशमात्र कल्पी शकाय तेम छे ? कहेवु पडशे के नथीज. छतां कयांनी वात कयां जोडीने केवो खोटो अर्थ उपजावी केवी भ्रमणा उभी करवामां आवी छे ? लेखकर्ना पासे आ जातनुं तद्दन असत्य विधान कया प्रकारनो मनोदशाए कराव्युं हशे ? तेनी हजु तो कल्पना पण थइ शकती नथी. *

(लेखांक–बीजो संपूर्ण)

*श्री पादलिप्त सूरिजीकृत प्रतिष्ठापद्धति अने श्री चन्द्रसूरिकृत प्रतिष्ठा-पद्धति अमारी पासे हालमां न होवाथी ते विषे विशेष हाल कांइ लखी शकता नथी. परंतु लेखके आपेल–ते ग्रंथोना उपरना प्रमाणोथी नित्य स्नान विलेपन पूजानो निषेध बिल्कुल फलित थतो नथी. ए वात बराबर सिद्ध थाय छे. नित्य स्नात्रमहोत्सव करवानी नियत फरज पडती नथी, ए जरूर साबित थाय छे. एटला उपरथी नित्य स्नपन पुजाना निषेध विधि साथे कांइपण संबंध ए पाठोने नथी, ए तो स्पष्टज छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"श्रीजिनपूजा पद्धति" पुस्तिकानी निष्फलता.

लेखांक—३ जो.

विभाग १ लो—चौदमा सैकाथी तिलकपूजानी प्राचीनता.

पृ. ३८-(४)— विलेपन ने स्थाने तिलक पूजा.

उपरना पृष्ठ उपर नं ४ मां उपरना मथाला नीचे एक ठेकाणे लेखक लखे छे के—"मालोद्-घाटनादिनी उछामणीओ, कोश वृद्धिना उपदेशोथी पण नित्य स्नान विलेपनादिना खर्चोने पहोंची वलवामां सफलता न मली एटले विलेपन उपर काप मूकायो. सर्वाङ्ग विलेपनने स्थाने हवे अमुक अंगोमां चंदनना तिलको करीने विलेपन मानी लेवानो निर्धार थयो. चौदमा सैकाना उत्तरार्धमां बधा मलीने ६ तिलको प्रचलित थया जेनो निर्देश श्री जिन-प्रभ-सूरिकृत पूजा विधिमां मले छे.

"छेवटे पंदरमा सैकाना अंत सुधीमां तिलको पांच वा छ न रहेतां नव थयां विगेरे."

देवद्रव्यादिक विषे जे अप्रासंगिक रीते, असंगत अने शास्त्राज्ञा विरुद्ध लेखके घुसाडी दीधुं छे ते विषे अहिं न लखतां स्वतंत्र रीते प्रसंगे विचाराशे. खरी वात ए छे, के दरेक आचार्य महाराजाओना ग्रंथोमां पूरा विधिओ नथी होता, तेओ तो मोटे भागे सूचित करता होय छे. कारणके विधिओ विस्तृत होय छे. तेमांनी घणी बाबतो प्रचलित होय, वधारे प्रसिद्ध होय ते बाबतो तेओ खास नथी लखता.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्यारे कोई आचार्य-महाराजाओ विधिओमां आवेली शिथिलता के जरूरी विस्तारना कारणे तेवी बाबतो ऊपर वधारे भार मूकता होय छे. आम ग्रंथकारोनी अनेक शैलीओ होय छे तेथी एक बाबत एक ठेकाणेथी मले त्यारे बीजु बाबत बीजे ठेकाणेथी मले. स्नात्र विधिमां स्नात्र पुरुं थाय एटले आगल कांई न लखेलुं होय परन्तु सामान्य विधिमां प्रत्याख्यान गुरु पासे, देव पासे, अने जाते लेवानी भलामण होय छे, एटले पूजा के दर्शननुं कार्य पुरुं थतांज पच्चक्खाण लेवानुं होय छे. ए पुजानी विधिनुं अंग नथी, पण मन्दिरमां प्रभु सन्मुख करवानुं धार्मिक कृत्य जरूर छे, आम उकतानुकत सम्मुच्चयो शास्त्रोमां करवाना घणे ठेकाणे होय छे.

ए प्रमाणे तिलकनी बाबतमां पण अमने तो प्राचीन कालथी ए परंपरा होवानो जैन शास्त्रो उपरथी भास थाय छे. श्री पंचाशकजीनी नीचेनी गाथा वांचो.

श्री संघपूजानो प्रसंग छे आखा संघनी पूजा शक्य न होवाथी तेना एक अंगनी पूजा पण आखानी पूजा गणाय. जेम देवनी (विलेपनादिकथी पूजा) अंगमां पूजा करवाथी समस्त देवना अंगनी पूजा गणाय, एम दृष्टान्त आप्युं छे. एटले चौदमो सैको तो शुं पण ठेठ श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजना समयमां पण ए प्रचलित होवी जोइए. एम पूरवार थाय छे.

तप्पूआ-परिणामो हंदि महा-विसयमो मुणेयव्वो ।
तद्देस पूयणम्मिवि देवय-पूयादि-णाएण ॥ ४२ ॥

श्री प्रतिष्ठा विधि पंचाशक आठमुं.

टीकाकार—"अथ-संघैक-देश पूजैव कर्तुं शक्या, न संघ-पूजा, तस्य सकल-समय-चेत्राश्रयत्वात्,"

इत्याशङ्क्य आह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दैवत-पूजा-ऽऽदि-ज्ञातेन देवतार्चन-प्रभृत्यु दाहरणेन । यथा हि-देवस्य राज्ञो वा मस्तके-पादा-ऽऽद्येक-देश-पूजनेऽपि तत्पूजा-परिणा-माद् दैवता-ऽऽदिः पूजितो भवति.

गाथाना भावार्थ—"देवता विगेरेनी पूजाना दृष्टान्तथी तेना एक भागनी पूजामां श्री संघनी पूजानो परिणाम महा विषयवालो जाणवो ४२"

टीकानो-भावार्थ—अपि शब्द "सामा पक्षे मानेली वातने पण स्वीकारवामां आवे छे." तेना सूचन माटे छे. ए कई रीते नक्की थाय ? ते कहे छे—

दैवत, देव विगेरेनी पूजाना दृष्टान्ते करीने, जेम देव अने राजाना मस्तके के पग विगेरे एक भागमां--एक अंगमां-पूजा करवाथी पण तेनी पूजा करवानो भाव होवाथी देव विगेरे पूजायेला बने छे ए प्रमाणे एक भागनी पूजा करवाथी श्री संघनी पण पूजा थई गणाय छे."

आ गाथा अने तेनी टीका उपरथी देवनी सर्वाङ्गीण पूजा, तेना कोइ पण मस्तक, ललाट, चरण विगेरे अंगोनी पूजा करवाथी तेनी समस्त पूजा थाय छे. एटले के—सर्वाङ्गीण-विलेपन पूजा पण खास खास अंगोनो पूजाथी थई शके छे. आ वात श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजना समय जेटली तो प्राचीन छे, ने तेथी स्पष्ट रीते अंगो-मात्रनी पूजामां समस्त पूजा जोइ शकाय छे. अने अपि शब्दथी सर्वाङ्गीण पूजा करवामां पण सम्मति बतावी छे.

आ सिवाय सती दमयन्तीना कपालमां प्रकाशमय तिलक जन्म-थीज हतुं, तेना कारण तरीके—"तेणे प्रभुने तिलके तिलकाभरण-पूजा करी हती" एम बतावेल छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ उपरांत श्री ऋषभदेव प्रभुना जमणा पगना अंगुठे-युगलिक लोकोए अभिषेक करीने अभिषेक कर्यानी वात शास्त्रोमां ने चरित्र ग्रंथोमां सर्वत्र प्रसिद्ध छे ते हकीकत नीचेना दोहामां संग्रहित छे.

जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत;
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायल भवजल अंत. १

संसार सागरथी पार पहोंचाडनार श्री ऋषभदेव प्रभुना अंगुठे युगलिक लोकोए कमलना पांदडाना संपूटमां पाणी भरीने पूजा करी हती. ॥१॥ पाछलनो छतां आ दूहो शास्त्रोनी वातथी जरापण दूर जतो नथी. आ साबीत करे छे के प्रायः करीने शास्त्राज्ञाथी जुदु जैन शासनमां खास कांइपण दाखल थई शकतु नथी, के जे शास्त्र साथे संगत या संबंधित न होय. परंपरागत जैनशासननी आ शिस्तनी लेखकने मालुम जणाती नथी. धर्म आध्यात्मिक शास्त्रना आधार उपर होवाथी तेना असंख्य विकल्पोमांना विकल्पो धर्मसाधक जुदा जुदा द्रव्य क्षेत्र काल भावमां प्रचलित होवाथी तेने असंगत कही शकाता नथी

आ रीते आज जेम दरेक काम पद्धतिसरना यंत्रथी करवामां आवे छे, अने दरेक नाना मोटा विज्ञानना शास्त्रो तैयार थाय छे. तेम भारतमां तत्त्वज्ञान सहकारी नाना नाना विज्ञानना अनेक शास्त्रो विद्यमाना होवाना पूरावा मले छे. तेने आधारे जुदा जुदा अंगो उपर तिलक करीने पूजा करवानु शास्त्रीय विधान होई, पूजा सत्कारनी एक प्रकारनी पद्धति साधार छे. प्राचीन शास्त्रोमां चोरी करवाना अने चोरी पकडवाना शास्त्रो होवाना पण पूरावा मली आवे छे. भारतना शिष्ट लोकोनी कोइपण प्रवृत्ति अशास्त्रीय यथाकथंचित् होती नथी. आ वातनो जेम परदेशीओने ख्याल नथी, तेमज आपणा आ जातना बहिर्वृत्ति धरावता लेखकोने पण नथी, जे खेदनी वात छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खर्च पूरो न थवाथी अंगोमां तिलक करीने विलेपन पूजा करवानो रिवाज पाडवो पड्यो. आ जातनी बेहुदी कल्पना जेम बहारना परदेशीओ करे छे, तेम लेखके करी छे. "तपस्वी महाराजे उपवास कर्यो," त्यारे परदेशीओ लखे के "भूखमरो भोगवतो ते माणस भूख हडताल ऊपर उतर्यो." आवुं तेओ लखे, तेम आ लेखक पण तेवाज भाषा वापरे छे. कारण के – तेओश्रीने जैनशास्त्रोना रहस्योनो स्पर्शज थयो जणातो नथी ए स्पष्ट देखाई आवे छे.

लगभग खोटा पाया उपरना आधुनिक इतिहासना लक्ष्यथी तेमणे जैन शास्त्रो वांच्या जणाय छे. ते "आत्मवादना अनेक आत्मिक विकासना परम विज्ञान सिद्ध अद्‌भुत शास्त्रो छे." तेवो तेमने भासज थयो जणातो नथी केमके—तेमां आत्मवाद उपरनी अनन्य श्रद्धा अने उंडा नय विज्ञाननुं गुरुगमथी अध्ययन करवुं पडे तेम होय छे.

कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य महाराजनी श्री कुमारपाल महाराजा सुवर्णमुद्राथी अंगो उपर मुकीने पूजा करवानो नोंध मले छे. तो पछी प्रभुनी नवांगे पूजा तेनी पहेलानी होवाथी चौदमा पन्नरमा सैकामां तेना उल्लेखो मलवानी वात शी रीते करी शकाय ? मात्र उल्लेखो उपरथी जैन दर्शननी वस्तुओ सिद्ध करी शकाती नथी. उल्लेखो न मलवा छतां पण घणी बाबतो सुविहित आज्ञा सिद्ध प्रचलित होय छे. आथी करीने पूजा करवाना अंगोनी पसंदगीमां जुदा जुदा विकल्पो पण शास्त्रमां बताव्या होय केमके–कोइपण विषयना शास्त्रमां तेने लगता संभवित अनेक विकल्पो अने विधानो होय तेमां मतान्तरोनी कल्पना करी तेना उपर पोतानो कटाक्ष छांटवो ए भारतना विज्ञानोनुं अज्ञान पूरवार करो जाय छे त्यारे एक करुण घटना बनी जाय छे अने लेखकनो निर्बलता जाहेर करी दे छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

અંગપૂજા શબ્દમાં "અંગ" શબ્દનો "અંગોની પૂજા" એવો અર્થ કરવાથી પણ અંગોની પૂજા મળી જાય છે. અંગનો અર્થ પુરું શરીર એવો થાય છે. અને "શરીરમાંના અંગોની પૂજા" એવો પણ કરી શકાય.

આ કાંઈ ચર્ચાનો વિષય નથી. પરન્તુ લેખકને નિત્ય-સ્નાન વિલેપન પૂજાને હડધૂત કરવી છે અને સાથે સાથે દેવ દ્રવ્ય ઉપર પણ કટાક્ષ કરી લેવાના હતો એટલે આ વસ્તુને પુસ્તિકામાં સ્થાન આપ્યું છે પ્રતિષ્ઠા પંચાશકની ઉપરની ગાથાનું રહસ્ય સમજાયું હોય તો આ વાત લખવાની જરૂર રહેતી ન હોતી. સૈકાઓ અને શતકો શબ્દો વાપરીને ઐતિહાસિક નિષ્ણાતતાનો ડોલ દેખાડવાની હમણાં હમણાં કુરુઢિ શરુ થઇ છે તેમાં કાંઈ તથ્યાંશ હોતો નથી.

લેખાંક ત્રીજાનો પ્રથમ વિભાગ સમાપ્ત.

લેખાંક-૩ નો બીજો વિભાગ.

ત્રણ અવસ્થાની ભાવનાના વિસ્તૃત વિચારનું પુસ્તિકામાં બીનજરૂરી સ્થાન.

આજના લેખકોની એક એવી રીત છે, કે પોતાની માન્યતાને વધારે પડતું જોર દેવા માટે બીજું એક ધાર્મિક બાબતને એટલું બધું વજન આપીને વાંચકોના દિલ આકર્ષવાની કોશિશ કરવામાં આવે છે. અને તેને આગળ રાખીને પછી જેના ઉપર કડક ટીકા કરવી હોય, તે બરાબર સારી રીતે કરી શકે છે. જેથી તે ટીકા ગમે તેટલો ખોટી હોય, તો પણ વાંચકોને કે શ્રોતાઓને તે સાંભળતાં આંચકો લાગતો નથી. દાખલા તરીકે:—પ્રતિમાઓની પૂજા બંધ કરાવવા માટે તેના

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिल्प, कला अने पुरातत्त्व उपर एटलु' बधु' महत्त्व मूकी देवामां आवे छे, के—तेना रक्षण खातर पूजा उपर प्रतिबंध मूकवामां जरा-पण आंचको न लागे. शिल्प, कला अने पुरातत्त्व ए जरूरनां छे, ए खरु' परन्तु पूजा-भक्ति करतां धार्मिक क्षेत्रमां तेनु' विशेष महत्त्व नथी. ए सघलाए तेना अंगो जरूर छे. एक आधुनिक संशोधक प्रतिमाजीना वखाण करतो करतो मंदिरमांथी बहार आवे छे, ते केवल तेनी कलाने ध्यानमां राखीने. त्यारे एक धार्मिक व्यक्ति प्रतिमाजीना वखाण करतो करतो मदिरमांथी बहार आवे, ते तेनाथी मलती आत्मिक प्रेरणाने ख्यालमां राखीने आवतो होय छे. आजना मुत्सद्दीओने न तो शिल्प के कलानी एटली महत्ता होय छे, के जेटली पोते धारेला परिवर्तन करवाना ध्येयनी सफलता माटे कबजो मेलववानो होय छे. माटे तेने गुप्त राखीने संशोधन करनाराओने उत्तेजता होय छे. ए ध्येय सफल थइ गया पछी, बीजी रीते मूर्ति के मन्दिरनो अनावश्य-कता लोकोना मनमां ठसावीने गमे तेवी कला के शिल्पने बीजां बहानां काढीने बाजुए मूकवामां तेओने जरापण आंचको आवे तेम नथी होतो. केमके—मुख्य तो कबजो मेलववानीज युक्ति होय छे वधारे उंची कला अने शिल्प पण तेणे अन्यत्र खोलव्या होय छे. मात्र धार्मिक लोकोना मानस आवर्जित करवा माटेनी एक युक्ति मात्रज होय छे. बीजी तरफ कारीगरना बालको वारसाथी वगर खर्चे मलता शिल्प अने कला कारीगरोना शिक्षणथी वंचित थइ, जींदगी-भर ते शिल्पादिना स्वतंत्र धंधाने बदले नोकरीना धंधामां भराई पडता होय छे; तेनी परवा करवामां आवती नथी.

आ रीते—प्रस्तुत पुस्तिकाना लेखके नित्य-स्नान विलेपन उपर पोतानो अणगमो वधारे सारी रीते उपसाववा माटे, ने वाचकना हृदयमां बराबर ठसाववा माटे, श्री जिनपूजा वखते भाववानी छद्मस्थावस्था, केवली अवस्था, अने सिद्धावस्था, तथा छद्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थावस्थामां पण जन्मावस्था, राज्यावस्था अने श्रमणावस्थानी भावनाओ विषे वधारे विवेचन कर्युं छे. अने घणा घणा शास्त्र पाठो आपी एक प्रकारनो घसारोज कर्यो होवानुं स्पष्ट जणाई आवे छे.

"आपणा शास्त्रकारो प्रतिदिन त्रणेय अवस्थाओनी भावना करवानो उपदेश करे छे." एम जणावी **प्रतिदिन जन्मावस्था** भाववानी मेरु स्नानादिने रोज करवाना कर्तव्य तरीके गर्भित रीते स्वीकारी ले छे, कारण के–जन्मावस्थानी भावना स्नपन वखते भाववानी छे; अने शास्त्रकारोनी ते प्रतिदिन भाववानी आज्ञाने लेखक स्वीकारे छे. एटले ए रीते प्रतिदिन स्नपन पूजा सहज रीतेज स्वीकृत थइ जवाथी लेखकनुं पोतानुंज लखाण **वदतो व्याघात** बनी जाय छे. ते तेमना पोतानाज ख्यालमां रहेलुं जणातुं नथी.

परंतु ए भावनाओ तीर्थंकर परमात्मानी पूजा वखते तेमना समग्र चरित्रने भक्तहृदयमां याद करवाना सतत तन्मय बनवाना एक भाग तरीकेना मुख्य प्रतीक तरीके होय छे. समग्र भव्य चरित्रमां तन्मय बनवानुं होय छे.

चिर संचित-पाव-पणासणीइ भव-सय-सहस्स-महणीए ।
चउ-वीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥

अर्थः—"घणा कालना एकट्ठा करेलां पापोने नाश करनारी अने लाखो भवनो नाश करनारी चोवीस तीर्थंकर भगवन्तो संबधिनी कथाओमांज मारा दिवसो पसार थाओ." **श्री वंदितु सूत्र.**

आ रीते, दिवसभर अने रात्रि जागरिका करीने रातमां पण प्रभुनी कथा अने गुणगानमां मोक्षाभिलाषी आध्यात्मिक भक्तने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पोतानो समय पसार करवानुं मन रहेज. छतां प्रमाद परिहरवा शास्त्रकार भगवंतो तेमां सतत जाग्रत रहेवा पण भलामण करता होय छे. हवे ते रीते जे न करी शके तेने पण पूजा वखते तो ते जातनो लाभ मले, माटे प्रतिमाजी अने तेनी आजुबाजुना प्रतीको. प्रभुना महत्त्वना ते जीवन प्रसंगोना स्मारक बनी शके तेम होय छे. तेनो लाभ उठाववानी योजना उपरोक्त भावना भाववानुं सूचववा पूर्वक बतावी छे. श्री जिनपूजा साथे प्रभुना जीवननो मानसिक चितार खडो थाय अने ते द्वारा प्रभुजीना जीवनमांथी प्रेरणा प्राप्त थाय, तथा ते द्वारा प्रभुजीना उपदेश तथा जीवननी महत्तानो निकट पूजक मानसिक रीते जइ शके अनें अनुसरण करवानी इच्छामांथी मोक्षानुकुल त्याग–तप-संयमादिमय जीवन जीववानी इच्छा थाय अने इच्छा थई होय, तो ते टकी रहे के तेनो अमल करी आगल वधी शकाय आवा पूर्वापरना अनेकविध आध्यात्मिक विकासना हेतुथी त्रण अवस्था भाववानी हकीकतनी पूजा प्रसंगे सूचना छे ते बराबर छे. "एक पदार्थ संबधि ज्ञान बीजी घणी वातोने याद देवामां उपयोगी थई पडे छे." आ मानसशास्त्रना सिद्धांतने आधारे त्रण भावना भाववानी योजना बतावी छे. अने ए रीते पूजकनी सामे पुजयना मात्र प्रतिमाजीज न रहेतां, तेमनुं जीवन मानसिक रीते मनमां खडु करवाथी "साक्षात् पूज्य परमात्मानीज पोते पूजा करे छे." एवो भास प्राप्त करी शके छे जे निर्जरामां वेग वधारे छे. तेथी जेने भावना भाववी होय, ते अनेकोमांना कोईपण प्रतीकोने लईने भावी शके छे.

परन्तु, लेखकने पूजक भावना भावे ते साथे खास सबंध नथी तेमने तो आभरण पूजा मुकुट आदि तथा आंगी आदिनी पूजा साथे, दूर दूरथी साम्यवादना आदर्शने झांखो झांखो नजर सामे राखीने कईंक विरोध बताववो छे. (जेथी साम्यवाद सत्तारूढ थाय त्यारे, "आवी बाबतो शास्त्रसिद्ध नथी, पाछलथी दाखल करेलो छे, माटे तेने अट-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कावत्रामां कोई दोष नथी." एम कहीने जैनशासनने पूरी रीते समज्या विना लखायेली आवी पुस्तिकाने एक मुनिना लखाणने आगल करी शके. तेम करीने लेखकने जिनपूजामां विकृतिनुं सविशेष प्रदर्शन कराववुं छे. अने तेना परिणामे नित्यस्नान विलेपन पूजाना पोताना निषेधमां औचित्य बताववुं छे.

जो पूजक पासे भावना भवरावत्रानो मुख्य उद्देश होत, तो जिनपूजा पद्धतिनो विचार आधुनिक ऐतिहासिक दृष्टिथी न करतां, आध्यात्मिक विकासमां तेनुं अगत्यनुं जे स्थान छे, ते मूल दृष्टिथीज विचार उपाड्यो होत, अने ते रीते विचार करतां तेने सर्वज्ञोपदृष्टि अने आगमिक ठराव्या विना न रहेत आम बधुं सहज रीतेज ठरावाई जात.

वर्तमान विचारना आंदोलनो अने आदर्शोनी असरनी परिणामे तेनी सफलता ने वेग आपवा घणा लेखको प्राचीन वस्तुओने विकृत स्वरूपमां रजु करवानी एक जातनी लेखन पद्धतिनो अने शैलिनो धृष्टताभर्यो आधार लेता होय छे. अहीं पण लेखके पोतानी लेखन-कला ए रीते वापरी छे. आ सिवाय, अवस्थाओनी भावनाओनो जे विस्तृत उल्लेख प्रस्तुत पुस्तिकामां करवामा आव्यो छे, तेनुं खास बीजुं महत्त्व आ पुस्तिकामां नथी. जो लेखकनी इच्छा अवस्थाओनी भावना विषे खास महत्त्व आपवानी होत तो तेमने मुगुट कुंडला-दिकथी बिभुषित जिन प्रतिमा "राज्यगादीए बेठेली कोई युवति राणी" लागेल न होत अने एवी उपमा आपवानी कल्पना पण मनमां न आवी होत. एता तुच्छतम शब्दो तेइनो लेखिनी द्वारा कागल उपर अंकितज न थया होत कारण के मनमांथी तेवा शब्दो जम्म्याज न होत. दाढी-मुच्छ-रहित प्रतिमानुं मुख जोईने तेना उपरथी पण लोच करेल श्रमण मुनिना मुखनो भास थवाथी ए प्रतीकना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवलंबने श्रमणावस्थानी भावना भाववामां तेमने जरापण बाधकता न जणाई होत कारण के-परिस्थिति गमे ते होय. छतां अमुक अमुक प्रतीकोने नय सापेक्षपणे मुख्य बनावीने ते ते अवस्थाओनी भावनाओ भाववानी होवाथी, भावी शकाय तेम होय छे. एटले अवस्थानी भावनाओनी बाबतमां आटलो बधो विस्तार कर्यो छे, ते उपरथी जरापण दोरवाई जवानी जरूर नथी, के—लेखके त्रण अवस्थाओनी भावनाओ भवरावषा माटेना उपदेशनो प्रचार विगेरे करवा माटे भारे जहेमत उठावी छे."

तेमनु तात्पर्य अवस्थाओनी भावनाओ भवरावषा करतां आंगी मुगटादिक प्रति सविशेष कटाक्ष करवा तरफ छे. अने ते कटाक्ष शब्दो विना आजुबाजुनी हकीकतोथीज बराबर उपसी आवे, स्पष्ट तरी आवे, ते माटे ते चित्रनी पाछल भावनाओनी भूमिका गोठवी, तेने उठाव आप्यो छे. तेथी विशेष त्रण भावना भाववानी बाबतना आटला विस्तारनु खास कांई महत्त्व नथी.

आंगी, मुकुट विगेरे पूजामां कांई वास्तविक खामी होय, तो ते जणाववी होत, अने ते दूर करावषा कांईपण कहेवु होत, तो सीधी रीते कहीज शकात. अवस्थाओनी भावना भाववानी वातने आटला शास्त्रीय पाठो आपीने विगतवार आपवानी जरूर नहोतीज. अने तेवी खामी दूर करवा सामे कोइनोय वांधो नथी होतो. आजना लेखको धर्मक्षेत्रमां आवेली व्यक्ति विगेरेनी भूलथी आवी गयेली खामीओने आगल करी, धर्मनेज उठाडी देवानी वात करता होय छे. कपडां उपर दाघ पडे तो तेने धोई नांखवानी भलामण सुधी तो बराबर होय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु कपडुं फाडी नांखवानी भलामण करवामां आवे तो ते बराबर केम गणाय ? नज गणाय. भ्रामक नामने बदले साचुं नाम राखीने अनेक शास्त्रोमांथी संशोधन करीने जैन शास्त्रमांनी जिनपूजा पद्धतिनुं सलंग विस्तृत स्वरूप आप्युं होत अने ते प्रसंगे स्तव परिज्ञा विगेरेने आधारे अनेक विस्तृत बाबतोनी साथे अवस्था भाववानी वातनो आथी पण विशेष विस्तार कर्यो होत तो ते उचित हतो.

परन्तु पुस्तिकानुं नाम "श्री जिनपूजा पद्धति" राखवामां आव्युं छे, परन्तु वास्तविक रीते पूजा पद्धति न बतावतां, तेना उपर कटाक्षोमय खंडननो वर्षादज वर्षाववामां आव्यो छे, तेथी ए ग्रंथ संदर्भमां त्रण अवस्थाओनी भावना भाववानी विस्तृत विवेचना करवानो कशोये अर्थ नथी, एम सहृदय बांचको स्पष्ट जोई शकशे.

आजकाल ग्रंथादि उपर नाम अने मथालां आकर्षक-रोचक तथा सामान्य शब्दथी सूचित करेलो होय छे. अंदर हकीकत पण केटलीक बराबर लेवामां आवी होय छे, परन्तु तेना उपरना अनुमानो अने कर्तव्योपदेशो तद्दन भलतेज मार्गे दोरवी जनारा होय छे. दा त आजे वधता जता आपघातोनुं कारण अमेरिका आदिमां खेंचाई गयेली संपत्तिने लीधे तथा उंचा भावोने लीधे उभा थयेला आर्थिक शोषणथी थती गूढ खेंचताण होवा छतां सारा रिवाजो पणु बेहुदो आकार धारण करे ए स्वाभाविक होय छे, त्यारे तेनो असह्य-असद् आरोप भारतीय आर्य प्रजाना उंचा जीवन व्यवहारो उपर करीने तेने नष्ट भ्रष्ट करवामां जोर देवामां आवतुं होय छे.

आ वस्तु दरेक प्रकारना आधुनिक-साहित्यमां स्पष्ट पणे जणाई आवे छे. अने ते प्रमाणे साचा के कपोल-कल्पित दरेक दोषोनो टोपलो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पण नित्य स्नपन-विलेपन पूजादि उपर आ पुस्तिकामां लई जवामां आवे छे.

१. तिलकपूजा अशास्त्रीय केम नथी ? तथा २. त्रण अवस्थानी भावनानो विस्तार बिनजरूरी केम छे ?;

ए बे मुख्य मुद्दाओनो विचार आ त्रीजा लेखांकमां करवामां आव्यो छे. प्रस्तुत पुस्तिकामां जे बे चार बाबतो विषे खास शास्त्रीय पाठो आपीने पोताना कल्पित मुद्दाओ वाचकोना मनमां ठसाववानी लेखके बीनपायादार कोशिश करी छे. तेनी पोल आ व्यवस्थित रीते त्रण लेखमां प्रथम खुल्ली करवामां आवे छे, घणा मुग्ध लोको शास्त्र पाठोना थोके थोक जोई भ्रमणामां न पडी जाय माटे आटली स्पष्टता करवी पडे छे.

बीजा विभागनी समाप्ति साथे लेखांक त्रीजो समाप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"श्रीजिनपूजा पद्धति" पुस्तिकानी निष्फलता.

लेखांक—४ थो.

बीन पायादार ऐतिहासिकता.

(१) "श्री जिनपूजा पद्धति" एवुं पुस्तिकानुं नाम भ्रामक अने केटलुं अनुचित छे ते चर्चा हाल बाजुए राखी आजकाल अंधश्रद्धाथी ऐतिहासिक सत्यने नामे जे पोलां नगारां वागी रह्यां छे, ते एक केवो हवाई महेल छे तथा आ पुस्तिका परत्वे तद्दन बिन पायादार केवी रीते छे ते बतावी आपवा आ लेखमालानो चोथो लेख छे.

(२) "जैन" पत्रमां आ पुस्तिका क्रमशः छापवामां आवी छे. लोकोनी जाण माटे कोई विचारपूर्ण प्रबंध पत्रकार छापे, ते एटलुं अनुचित नथी. परन्तु तेनी सत्यतानी कसोटी कर्या विना सर्टीफीकेट आपी देवामां प्रामाणिकता जलवाती नथी. तेमांये एक महत्त्वनी अने व्यापक एवी धार्मिक आचरणा विषे बुद्धिभेद करनारुं लखाण एकाएक छापतां पहेलां तो केटला गलणे गालीने प्रवृत्ति करवी जोईए? ए दृष्टिथी "जैन" पत्रे गंभीर भूल तो करी छेज ते तेने आगल जतां कदाच समजाशेज, छतां पाप करतां जरूर पाछुं वालीने कांईक जोयुं लागे छे, के जेथी आ पुस्तिकानी शरुआतना १२ पेईजो उपरांतनो भाग छोडी देवानुं जे डहापण वापर्युं छे, तेनी कदर करवा पूर्वकनी नोंध लेवीज घटे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) "खरा इतिहास" शब्दनी आडमां हवाई किल्ला उपर अने नित्य स्नान-विलेपन विषेनी लेखकनो विरुद्ध मान्यताने रजु करवाना मुख्य विषय साथे असंबंध जे वातो आ पुस्तिकानी शरुआतमां लखाई छे, ते "जैन" पत्रमां ते पुस्तिकानो उतारो करवानुं रजु करनारने पण मान्य थई नथी कारणके तेमां कोईपण प्रमाण-पूरावा के प्रमाणभूत कोईपण विद्वानना कोईपण पुस्तकना उतारा के मंतव्योना साक्षात फकरा रजु करी पोतानो वातनी पुष्टिमां कांईपण लखवामां आवेलुं नथी. तेथी कोई पण वाचकने सहज रीतेज लागी आवे तेम छे, के—'लेखके मात्र आडेधड कल्पनानाज घोडा दोडाव्ये राख्या छे, अने रेतीमां नाव तरावया हिंमत भोडी छे" तेथी तेटलो भाग छोडी देवामां उचितज कर्युं छे. आधुनिक इतिहासना कोई पण विद्वान् के अभ्यासीने पण ए जातना अभ्यास विनानो प्रलाप नकामोज जणाय, तेमां कांई आश्चर्य जेवुं नथी.

(४) खरी वात तो ए छे, के—पोतानी वातने पुष्ट करनारा जैन शास्त्रमांना ऐतिहासिक पूरावा लेखकनी पासे तो कोई नथी. तेमज आधुनिक इतिहासनी पण कोई असंदिग्ध बलवान् सामग्री तेमनी पासे नथी. जेथी ते आपी शक्या नथी तेथी—नित्य स्नान-विलेपननी विरुद्ध पोताना मंतव्यो रजु करवा पूरतीज विषय मर्यादा राखी होत तो आ पुस्तिका आटलो हास्य पात्र अने तिरस्कार पात्र भारतीयताना मर्मज्ञ विद्वानोमां अने परंपरागत तीर्थङ्कर परमात्माना शासनमां न बनत. शरुआतना लगभग १२ पेइजनुं अगडं बगडं लखाण विद्वान गणाती व्यक्तिनी बुद्धिनो यातो ना-हिम्मतनो एक करुण नमुनो बनी जाय छे ते पण एक तेमने माटे खेदकारक घटना छे. "जैन" पत्रमांना लेखके एटलो भाग छोडी देवामां जरूर औचित्यनो उपयोग कर्यो छे ते ठीकज कर्युं छे, एम कहेवुं जोईए.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) खरी रीते, आवी पुस्तिका–जैनशासनना जवाबदार अने जोखमदारोना विचार अनें अभिप्राय मेलववा पूरतीज होत, तो हजु कदाच उपयोगी गणात, परन्तु जैनशासन जेवां परंपरागत व्यवस्थाने आधारे चालता शासनमां सर्व सामान्य प्रजानी सामे एकदम बुद्धि-भेद करनारी प्रचारक दृष्टिथी द्रढ आग्रहपूर्वक वस्तु फेंकवी, तेमां श्री जैनशासननी शिस्तनु' पालन पण नथी ए द्रष्टिथी तो ए एक जैन-शासननो भयंकर गुन्हो पण थई जाय छे. सामान्य प्रजा ऐतिहासिक के शास्त्रीय रहस्यो समज्या विना तुलना कर्या विना मात्र कल्पना उपरथी त्याग के स्वीकार शी रीते करी शके तेम होय छे ? ते स्थितिमां तेमनी सामे आवी वस्तु फेंकवी एज विवेकनो अभाव अने अनुचितता दर्शावे छे.

(६) पुस्तिकानी शरुआतमांज लेखक तरफथी स्पष्ट करवामां आव्यु' छे, के "जिनपूजा" आगमिक छे के अनागमिक ? ए सर्वज्ञ प्ररुपित छे के छद्मस्थ प्रकल्पित ? ए वातोनी चर्चा न करतां अमे पूजानी सृष्टि कयारे थई ? आनु' प्रारंभिक रूप शु' हतु' ? विकसित थती थती ए कयी स्थितिए पहोची ? विकासनी अंतिम कोटिथी गब-डीने ए केवी रीते विकृतिने मार्गे चढे छे. अने विपरीत परिणामो लावे छे ? इत्यादि बाबतोनेज अमारा विचारोनु' केन्द्र बनावीशु'"

(७) उपसंहारमां जे जणाव्यु' छे, तेनो केटलोक भाग नीचे प्रमाणे छे:—

"अमारो मूल उद्देश जिनपूजा विधिनी जुनी अने नवी पूजा पद्धत्तिनु' दिग्दर्शन कराववानो अने कालान्तरे तेमां थयेला परिवर्तनो तथा तेना परिणामो बताववानो हतो. वाचकगण जोशे के—आ लेखमां अमे तेज वस्तुनो स्पर्श कर्यो छे, के—जे अमारा उद्देशनी मर्यादामां हती"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषमां लेखके स्पष्ट कर्युं छे, के—

"पूजानी नवी पद्धतिना अनिष्ट परिणामोनी बाबतमां अमने बे शब्दो लखवा पडया छे ते केटलाक भाईओने अरुचिकर लागशे ए अमे समजीए छीए पण इतिहास-लेखकना मार्गमां आवा प्रसंगो आववानाज खरो इतिहास लखवो अने सत्य छुपाववुं ए बे वातो एक साथे थई शकती नथी एटले इतिहासकारने माटे ए वस्तु अनिवार्य हती"

(८) आनी पहेलाना बे लेखो वांच्या पछी बराबर समजी शकायुं हशे, के—"नित्य स्नान विलेपनना निषेधनी बाबतमां खरो इतिहास लेखके आप्यो नथी अने जिनमूर्ति निर्माण तथा जिनपूजानो शरुआत थवानी बाबतना पण प्रमाणभूत कोईपण प्रकारना ऐतिहासिक पूरावा आप्या नथी. के जे वातने छेडवानीज जरूर नहोती एटले के—तेनो पण खरो इतिहास आप्योज नथो ए तो स्वतः ज पुरवार छे आ लेखथी ते वधारे स्पष्ट थई जशे. माटे तो जैन पत्रमां पुस्तिकानो उतारो आपवानी हिंमत करनारने पण शरुआतना लगभग १२ पेईज छोडी देवा पडया छे केमके—तद्दन पाया विनानी कल्पित वातोने जाहेरमां मूकवानी जोखमदारी शो रीते लई शकाय ?

(६) जुनी अने नवी पूजा पद्धति जेवी कोई वस्तुज जैनशासनमां नथी. जे छे ते एकज पूजापद्धति छे. पूजाना अनेक प्रकारो छे अने प्रत्येक प्रकारोमां पण अनेक पेटा प्रकारो छे एवी रीते चतुर्विंशति स्वत—के जे धर्मना मूल उपदेशक प्रचारक अने विश्ववत्सल परमेश्वर श्री तीर्थङ्कर देवोनो विशिष्टता अने लोकोत्तर विनय साथे सम्बन्ध धरावती जैनशासननी मुख्यमां मुख्य बाबत छे. तेनो एटलो बधो विस्तार छे, के जे प्राचीन शास्त्रोमां सूचित थयेल छे. जिनप्रतिमानी द्रव्यपूजा पण तेना एक भाग तरीके छे ते उपरांत चतुर्विंशति स्तवमां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घणी बाबतो समाय छे तेथी जुनी अने नवी पूजापद्धतिनी कल्पनाज तद्दन निराधार अने बेहुदी छे ते जैनशासनने न समजवाना एक पूरावारूप छे.

(१०) कोई वखते कोई प्रकार मुख्य थई गयो होय छे, अने बीजी वखते बीजो. तथा पूजकोमांनी समज, आध्यात्मिक भूमिका, साधन सामग्रीथी सज्जता विगेरे दरेक पूजको एक सरखीज धरावता होय एवुं न बने तथा अज्ञानता, गेरसमज विगेरे कारणे केटलीक भूलो पण कालान्तरे प्रवेश पामी गई होय. संजोगोए केटलीक गौण-मुख्यतामां परिवर्तन करावी नांख्युं ये होय. ने ए बधुं बनवाजोग छे. एटला उपरथी जुनी अने नवी पूजापद्धतिनी कल्पना तद्दन नकामी छे ए रीते पारिभाषिक शब्दो उभा करी तेनो प्रचार करवो ए एटलुंज बिनपायादार तथा खतरनाक छे अव्यवस्थित रीते उभा करेला पारिभाषिक शब्दो घणां अनर्थ जन्मावे छे. आजे तो ए वस्तु घणी रीते आगल वधती जाय छे.

(११) छेल्ला १००-५० वर्षमां जे कांई फेरफार देखायो होय, तेनी अहीं चर्चाज नथी. बीजी प्रजाओना संपर्कथी केटलीक बहारनी असरो थई छे, परन्तु तेने लीधे कोई नवी पद्धति कही देवी, उचीत नथी केमके—तेने पूजाविधिमां स्थानज नथी होतुं. पांच गुण्या पांच नो कोई विद्यार्थी २४ जवाब लखी लावे. तेनेज जवाबनो एक प्रकार न कहेवाय. "ते जवाब खोटोज छे." एमज कहेवाय. २५) जवाब खरोज छे. २६ जवाब खोटो छे. २४-२५-२६ एम ५×५ ना ए त्रण मतान्तरो नथी, पण बे खोटा अने एक खरो जवाब छे.

(१२) जिनपूजा करनाराओ—जिनपूजाने मोक्षानुकूल आध्यात्मिक आत्म-विकासमां स्थान छे, माटे ते जिनोपदिष्ट छे, अने तेथीज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगमिक होवाथी सुविहित पूर्वाचार्योए जैनशासनना इतिहास साथे प्रथमथीज संकलायेली होवानी खात्री समजीनेज ते करवाना वखती-वखत उपदेश अपायो छे. माटे अवश्य कर्तव्य छे." एम समजीने जिनपूजा करता आव्या छे अने करे छे.

एटले के—

(१) आध्यात्मिक विकासनी सामग्रीनुं अंग होव थी,

(२) सर्वज्ञजिनोपदिष्ट होवाथी,

(३) आगमिक होवाथी,

(४) जैनशासनना साचा इतिहास साथे प्रथमथीज सम्बन्ध होवाथी,

(५) अने सुविहित पूर्वाचार्य महाराजाओथी उपदिष्ट होवाथी,

आवा मूलभूत हेतुओथी जिनपूजा करवामां अने करावत्रामां आवे छे. एटलेज तेनो विरुद्धमां कोईपण जैनशासननो भक्त श्रावक-श्राविका आधुनिकनुं के भविष्यमांना कोईनुंये काईपण सांभली शकेज नहीं. परन्तु पुस्तिकामां—आगमिक अनागमिक अने सर्वज्ञ प्ररूपित छे के छद्मस्थ प्रकल्पित ? ते मुख्य बाबतोनी चर्चा करवानी लेखक ना पाडे छे. साथे साथे बीजी त्रण तेनो साथे सम्बन्ध धरावती बाबतोनी चर्चा न करवानी पण वात आवी जाय छे आ उपर जणाव्या ते मुद्दाओने आधारे चर्चा करी होत, तो ते कदाच उपयोगी थात, परन्तु तेने छोडी दवानुं लेखकने केम सूझ्युं हशे ? ते एक कोयडो छे. जेनी चर्चा कदाच वधु उपयोगी थई पडत, केमके तेना आधार उपर जिनपूजा व्यवस्थित रीते उपदेशवामां आवो छे.

(१३) पूज्य आगमोमां अने सुविहित पूज्य पूर्वाचार्य महा-राजाओना ग्रंथोमां कयांय संक्षेपमां, कयांक उपलक्षणात्मक निर्देशरूपे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कयांक कोई एक प्रकार सारी रीतना विस्तारथी तो कयांक संक्षेपमां तेनो निर्देश करेलो होवाथी, ते सर्वेने सामसामे गोठवीने ऐतिहासिक समालोचना करवी, के परस्परने प्रामाणिक के अप्रामाणिक कराववा प्रयास करवो, ए रीतज निराधार अने अप्रामाणिक छे. अभण विद्यार्थी पासे १ करतां ₹¼ नी किंमत वधारे आंकवा जेवुं बने छे, केमके शास्त्र शैलीज स्थान अने प्रसंग परत्वे विविध प्रकारनी होय छे. तथा केटलोक भाग विच्छेद पामेलो छे, अने छे ते पण संक्षेपमां छे छतां आजने माटे ते घणो विशाल अने गहन छे; अने एज एक शरणरूप छे. एटले दरेक वातना दरेक कडी सलंग न पण मली आवे, एटला उपरथी आखी सारी वस्तु खोटी ठरा जती नथी.

(१४) एटले जो आ पुस्तिका आधुनिक ऐतिहासिक परंपराने आधारेज लखवामां आवी होय तो "जैनधर्मनी इमारतनो के तेना कोई भागनो आधार के जिनपूजा पद्धतिनो पायो आधुनिक इतिहासनी परंपरा उपर मंडायेलज नथी" एटले ते दृष्टिकोणथी विचार करवाने स्थानज नथी तेथी तेवा दृष्टिकोणथी लखायेला आ पुस्तिकानी सामेज पूजा करनाराओए जोवानुं रहेतुं नथी, तो ते विषे विचारणा करवानी तो वातज शी ? ते भाविकवर्ग माटे आ पुस्तिका तो सदंतर नकामी अने निष्फल छे. पूजको अने आधुनिक ऐतिहासिक परंपराने कोई सम्बन्ध नथी. मात्र एक पदस्थ साधु मुनिराजने हाथे प्रस्तुत पुस्तिका लखाई छे, माटे प्रथम दर्शने कदाच ते ध्यान खेंचे, परन्तु आजकाल स्वच्छंदता फेलावता संजोगोमां एवी घणी बाबतो प्रसिद्ध थती होय छे के जे तद्दन उपेक्ष्य राखवी पडे तेम होय छे जो शास्त्रदृष्टिथी नित्य-स्नान विलेपनपूजानी विचारणा करवी हती, तो वच्चे ऐतिहासिक बाबतो घालवानी जरूर नहोती अने ऐतिहासिक दृष्टिवालाने पूजा करवानी नथी, शास्त्र दृष्टिवालाने ऐतिहासिक दृष्टि जोवानी नथी. नित्यस्नान विलेपन पूजा प्राचीन न होवानी लेखकनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान्यता छे. तो जिनपूजा पण प्राचीन अने आगम मान्य तथा सर्वज्ञ प्ररूपित न होवानो लेखकनो मान्यता छे. तो पछी नित्यस्नान विलेपननो विरोध अने तेनो चर्चाज पाया विनानी छे. लेखकना मते श्री जिनप्रतिमापूजाज बिनपायादार छे. अने अनिष्ट परिणामो आव्या होय, तो तेनु मूल तो जिनपूजाज छे. एम पण शा माटे ? आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष विगेरेनी वातो करीने जैनधर्मे लोकोने सांसारिक भावनाओथी उद्विग्न करी दीधा होय छे, अने तेथीज करीने मानवो स्वतंत्रपणे खुल्ला मनथी उड्डयन करी विहरी शकता नथी. चारेय तरफथी संयमना प्रतिबंधो तथा इंद्रियोना विषयोथी दूर रहेवानो उपदेश चालु होय छे; तो पछी मानवोना मनना उल्लास अन नवनवा विकास शो रीते थाय ? तेथी आत्मा जेवी कल्पित वस्तु उत्पन्न करीने आखो ईमारत खडी करनार जैन धर्मज सर्व अनिष्टनु मूल छे एम लेखके कहेवु जोईए.

(१५) उपसंहारमां जणाव्या प्रमाणे खरा इतिहासनी व्याख्या शु छे ! ते जणाववी जोईए कारण के आजे इतिहासनी बे परंपरा प्रचलित छे, कोने खरो इतिहास कहेवो ? ते स्पष्ट करवु हालमां घणु जरूरनु छे.

(१) परंपरागत चाली आवती इतिहासनी परंपरा के जेना आधारभूत साधनो विपुल प्रमाणमां विद्यमान अने प्रसिद्ध छे अने घणा अप्रसिद्ध पण छे. तेमांना घणा खरा साधनोनी विदेशीओए इरादापूर्वक उपेक्षा करी छे.

(२) छेल्ला बसो त्रणसो वरसथी युरोपीयन स्कोलरोए दरेक देशोमांना पोताना राष्ट्रीय हितोने वेग आपवा माटे स्थानिक प्रजाने आवर्जित करवाना ध्येयथी उभी करेली अनेक नवी परंपरा के जे वर्तमान राज्यसत्ताओना टेकाथी खुब प्रचारमां आवी रहेली छे. आ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बे परंपरा प्रचलित होवानुं आ सत्य कदाच पुस्तिकाना लेखकना ध्यानमां न पण होय. तो खास ध्यानमां लेवा अमारुं साग्रह सूचन छे. बन्नेय परंपराओ एकज प्रकारना साधनोनो उपयोग करे, तो पण दृष्टिभेदने लीधे आवी वस्तुज जुदो जुदो आकार धारण करे छे. ते ध्यानमां राखवा जेवी वस्तु छे.

लेखक जो २४ तीर्थङ्कर भगवंतोनी भक्ति खरा अंतःकरणथी करता होय, तो ते परंपराना इतिहासने आधारे मानवा पडे तेम छे. अने हालनो इतिहास २४ तीर्थङ्करो थया होवानुं मानतो नथी तेथी लेखके मौथी पहेलां ए स्पष्ट करवानी जरूर हती के—"तेओ बेमांथी कोने खरो इतिहास कहे छे ?"

(१६) जेओ पूजा करे छे. तेओ पहेली परंपराने प्रधान माने छे. केमके–हालनो ऐतिहासिक परंपरा उत्पन्न थया पहेलांथी पूजा अने तेना प्रकारो प्रचलित छे. अने सुविहित पूर्वाचार्योनी आज्ञामां पूर्व-परंपरागत साचा इतिहासनो समावेश थई जाय छे. केमके–सुविहित पुरुषोए तेने पण ध्यान बहार राख्यो होय एम बनेज नही. एटले–पूजकोने तेनी चर्चा करवानी के सांभलवानी रहेती नथी. पूर्वाचार्यो पण अनागमिक असर्वज्ञ प्ररुपित अनैतिहासिक बाबतो लखवानो अधिकार धरावता नथी. अनधिकार चेष्टा तेओ करे नहि एवो तेमना पर विश्वास छे केमके–तेओ सुविहित छे. माटे तेमना उपदेश प्रमाणे पूजको जिनपूजा आत्म-कल्याण समजीने करे छे.

(१७) सामान्य कक्षाना वाचको माटे–इतिहासनी बंनेय परंपराओनो सामान्य रीते भेद सूचित करवो उपयोगी थई पडशे तेथी तेनो सामान्य ख्याल आपीए छीए.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१८) आधुनिक ऐतिहासिक परंपरा केटला वर्षोथी चाल्या आवता राज्याश्रयथी पोतानो घोडो आजे कुदावी रहेल छे. अने ऐतिहासिक सत्यने नामे छाती काढीने आगल चाली सर्वत्र घुसे छे अने तेना प्रपंचोथी अज्ञात लोकोने गभरावी सन्मार्गथी चलित करवामां केटलेक अंशे फावे छे. जैनधर्म पूरती आधुनिक ऐतिहासिक परंपराना उत्पादक जर्मन प्रोफेसर हर्मन जेकोबी विगेरे छे, तेनो आधार भारतमांना तात्कालीन युरोपीय मुसाफरोए पोतानी समज प्रमाणे करेली केटलीक नोंधो सरकारी आर्कीलोजीकल अने संशोधन-खातानी नोंधो डॉ. हॉर्नल विगेरेए उभा करेलां केटलाक ऐतिहासिक निरुपणनां खोखां विगेरे छे.

भारतना जीवननु' रहस्य हजु आजे पण तेओने समजायु' नथी तो भूतकालमां तो क्यांथी समजायु' होय ? कदाच समजायु' होय, तो पण तेओ पोताना स्वभाव प्रमाणे पोतानी स्वार्थी दृष्टि तरफ खेंची गया विना रहेताज नथी. निर्भय सत्य तो तेओ आपो शकताज नथी. प्रथम हकीकत तटस्थ पणे जणावे परन्तु तेना उपरथी फलीतार्थ पोताने इष्ट होय छे तेज काढीने मूकता होय छे आथी तेओ नी प्रामाणिता शंकित अने अप्रमाणभूत बनी गई छे. खरी रीते ते बाबतोनी साथे तेओने सम्बन्ध पण नथी होतो कारण के तेओनो उद्देश स्वस्वार्थानुकूल परिवर्तन दरेक देशोमां करी नांखवानो पहेले-थीज छे. "तेमां अनुकूलता थाय, स्थानिक प्रजा तरफथी विघ्न न आवे, तथा रोचकता अने लोकप्रियता रहे अने प्रजाने बुद्धिभेद थया करे एवी प्रवृत्तिओ हलवे हाथे शरु करी होय छे. सत्यनी कोईनेय कांय पडी नथी होती आ दृष्टिथी वखतो वखत तेने बहलावे छे. पोतानी वातोने प्रमाणभूत बताववानो एक चालाक व्यपारीनी माफक एटलो बधो डोल करे छे, के—जेथी तेमने भारतमांथीज अनुयायिओ मली रहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छे, अने तेथी एक तरफी एक स्वतंत्र आधुनिक ऐतिहासिकोनी जुदी जमात उभी थई गई छे. ते जमात पोताना विदेशीय गुरुओ तरफ जेटलुं लक्ष्य राखे छे तेटलुं बीजी बाजु राखता नथी. ज्यारे परंपरागत मान्यताओ धरावतो वर्ग तेनी परवा करतो नथी, तेने उपेक्षित राखे छे तेम तेम असत्यनो राफडो ऐतिहासिक सत्यने नामे झेर प्रसरावतो रहे छे. आ रहस्य भारतना वफादार भारतवासीओए समजवुं जोईए. दरेक धर्मगुरुओए तो खास समजवुं जोईए.

शरुआतमां तेओ तरफथी जाहेर थयुं के—

"जैनधर्म बौद्धधर्मनो एक संप्रदाय छे."

एटले शालाओमां कोलेजोमां भणनारा अने वकील बेरीस्टरोए एम भरडवा मांड्युं.

पछी—"ना, ना एम नथी जैनधर्म तो एक स्वतंत्र धर्म छे अने ते श्री महावीरस्वामीए फेलाव्यो छे." एम राग आलापावा लाग्यो.

पछी—

"तेनी पहेलां श्री पार्श्वनाथ नामना एक तीर्थंकर थई गया छे. ए वात साची छे. एम चाल्युं.

पछी वली.

"श्री नेमिनाथजीने ऐतिहासिक मानवामां वांधो नथी विगेरे." आ छे आधुनिक ऐतिहासिक परंपराना रंगढंग. छेल्ले छेल्ले जर्मन प्रो. ग्लाझे नापे पोताना "जैनीझम" पुस्तकमां लखी मार्युं छे,—के जेने श्वे. मू. कोन्फरन्सनी एज्युकेशन बोर्डे घणा वर्षो सुधी पाठ्य-पुस्तक तरीके पसंद कर्युं हतुं--छेल्ला बे तीर्थङ्करो ऐतिहासिक छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाकीना बावीस कथा-जनित-कल्पित छे." आवुं ते जैनीझम नामना पुस्तकमां छे आवी वात उपर मस्तान रहीमे आ देशमांना तेंओना अनुयायी केटलाक जैन गणाता लेखकोए पण पोताना लखाण तथा भाषणोमां ए वातने स्थान आपी दीधुं छे, अने पोतानी बुद्धिनी बालीशता बतावी दीधी छे.

जेम जेम बहारथी ऐतिहासिकने नामे हकीकतो बहार पडती जाय. तेम तेम शाला कोलेजोमां भणनारा अथवा तेमांथी बहार पडेला अने तेमनी पाछल चालता बीजा लोको आवी वातो उपाडी ले छे. अने आधुनिक दृष्टिना वर्तमानपत्रो द्वारा तेनो प्रचार करता रहे छे. अने ए रीते परंपरागत धर्मनुं संचालन करनाराओना मार्गमां विघ्नो खडा कर्या करे छे. अने ढगेढग जुठाणांओथी वातावरण कलुषित राख्या करे छे. श्री संघना आजना कुसंपनुं मुख्यमां मुख्य कारणज विविधरीते जुदी जुदी जातना आजना बुद्धिभेदोनो प्रचार छे. छतां, धर्मना संचालको जाग्रत होवाथी मूलभूत इतिहासना आधारे श्री २४ तीर्थङ्करो सद्भूत होवानी वात टकावी रह्या छे, तेओए पण जो अंधश्रद्धामां आवीने परिवर्तन करी नाख्युं होत, तो आजे शी दशा थई होत ? छतां ते जैन लेखको बे के चार शिवाय बीजा तीर्थङ्करो थया नथी." एम चोकखुं बोलवानी हिंमत करी शक्ता नथी. परन्तु बे के चारनी वात पोताना लखाणमां एवी रीते आगल करता होय छे, के-जेथी करोने बीजा बावीश के वीस थया नथी "ए जातनी पोतानी मान्यता प्रमाणिक छे" ए जातनो भास वाचकोना हृदयमां उभो करवानी कोशिश तो करीज होय छे. आम तेओनो दंभ सेवातो होय छे.

(१९) विदेशीय आधुनिक-ऐतिहासिकोए एकपक्षीय स्वार्थ खातर नवी परंपरा उभी करी छे. अने तेओनो सौथी मुख्य स्वार्थ धार्मिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकोना मनमां ऐतिहासिक सत्यना नामे शंकाओ उभी करी संशयमां पाडी तेओना मन डहोली नांखी, धार्मिक आचार-विचार छोडावी प्रगतिशील गणाता आचार-विचार उपर लई जवानो होय छे. एने माटे पोतानो प्रमाणिकता पूरवार करवा शोधखोल खातुं उभुं करी, मोटा खर्चे चलाववामां आवे छे. अने ए रीते एक उपयोगी खातुं छतां प्रजाने माटे ते खातुं श्रापरुप बनी रहे छे. आ रीते प्राचीन परंपरागत इतिहास पासे जे अनेकविध सामग्री छे, तेमांथी पण जे वखते पोताने जेटलो जरूरनो होय, तेनो स्वीकार करी. बाकीनो इरादापूर्वक छोडी दे छे. पाछळथी तेनो एटले छोडी दीधेल सत्य-सामग्रीनो स्वीकार करे छे, परन्तु एकवार नो बुद्धिमां डहोलाण कर-वानो प्रयोग करी ले छे. अने प्राचीन परंपरानी विरुद्धमां कल्पित रीते पण मूकी शकाय तेवो रीते कोई बाबत मळी जाय, तो तेनो कागनो वाघ करी नांखवानुं चूकता नथीज. जगत्‌मां ख्रीस्ती के वैज्ञा-निक एक धर्म करी नांखवा अने बीजा सर्व धर्मोने तेमां विलीन कर-वाना ध्येयथी—अकबरना "दीनेईलाही" धर्मनी वातो तेना तेवा फोटा साथे अपाय छे, के जेथी विद्यार्थीओनुं ध्यान खास खेंचाय, अने तेना दरबारमां तेना ९ रत्नोने नामे जुदा जुदा धर्मगुरुओने बेसाडया होय छे. केम जाणे ते धर्मगुरुओ पण राज्य अने राजाना ताबेदारो होय. आ वस्तु आ देशना ते विदेशीओना घणा भोला शिष्यो समजो शकया नथी, समजी शकता नथी. विदेशीयोनी एक खुबी तो ए छे के—एक बाबत तेओनी खोटी जाहेर थाय, त्यां तो बीजी नवी नवी वातो खडी करीने सविशेष गुंचवी नांखी युरोपीय विद्वानो पोतानी प्रतिष्ठा टकावी राखे छे. आ तेओनी खुबी छे. आ देश-मांना ते परंपराना अभ्यासीओने एकज द्रष्टि प्राप्त थई होय छे, बीजी द्रष्टि भाग्येज कोईनेय प्राप्त थई होय छे. तेमज तदनुकूल विपुल आर्थिक साधनो न होवाथी स्वतंत्र शोध करोने तेओनुं पोकल उघाडुं पाडी शकातुं नथी. त्यारे तेओनी पाछळ राज्य विपुल साधन सामग्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्पण करे छे. भारतमां शुं के बहार शुं ? ओक्सफर्ड अने केम्ब्रीज युनिवर्सीटीना मूलभूत प्रचारक ऐतिहासिक विद्वानो विगेरे राज्याश्रित होय छे. तेथी राज्य अने राष्ट्रोना हितोनी दृष्टिथी स्वैच्छित ऐतिहासिक परंपरा खडी करी, आगल अने आगल धपाव्ये राखता होय छे. तेओनी शोधोना केटलाक प्रमाणो सत्य होय छे. पण ध्येय ठीक न होवाथी बधुंए घातक बनी जाय छे.

(२०) महान् भोगोने परिणामे महापुरुषोए उभी करेली श्रद्धाने अने मनोवृत्तिने लोकोना मनमां बुद्धिभेद उभो करी डहोली नांखी, वातावरणने कलुषित करी मूको, पन्नभेदो खडा करी, धर्मसंचालननी आखी इमारत आजे हचमचावी मूकवामां आवे छे. केमके-एटला माटेज तो मुख्यपणे ए परंपरा खडो करवामां आवी छे ते पूरी प्रामाणिक साबीत थई नथी. केमके तेमां फेरफार रोजबरोज थयाज करे छे. आवा आवा अनेक कारणोथी जैनाचार्यो तो तेने रीतसर प्रामाणिक तो मानताज नथी; परन्तु तेनी सामेय जीवा के जोवा देवाये इच्छता नथी होता. एटले ते लोकोए गमे ते लख्युं होय, शोध्युं होय, तेनो साथे जैनधर्मना कोईपण आचारनो आधार नथी. तेनो आधार छे पोतानो मोक्षानुकूल आत्मवादी विकासमार्ग भारत जेवा देशनां प्राचीनतम कालथी संस्कारसंपन्न प्रजा धरावती देशोमां शोधाया छे तेना करतां हजारो ऐतिहासिक साधनो हजी मली आवे तेम छे. हजीपण कांईक कांईक बहार आव्येज जाय छे. ते साधनो बहार निकल्या होय के न निकल्या होय, परन्तु जे वखतना साधनोने आधारे जे कांई कर्तव्यमार्गो घडाई गया छे, अने परंपरागत चाल्या आवे छे, तेनी पाछल प्रामाणिक ऐतिहासिक परंपरानोये अचूक आधार छे. एम मानीनेज तेने वलगी रहेवामां एकंदर मानवजातिनुं हित समायेलुं छे. केमके वीतराग संतोनी भावना हितज करवानी हती. तेमां बुद्धिभेद करवा भारतीय लोकोज निकली आवे, ते केटली खतर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाक वस्तु छे ? अने बुद्धिभेद करवा ईच्छता विदेशीओने माटे ते केटली बधी उपकारक अने आदरदायी वस्तु बनी शके ? ते सुज्ञोए विचारवा जेवुं छे. परन्तु भारतनो प्रजाना हितस्वीओ अने जैनाचार्यो हजु तेने (नवां परंपराने) गणकारता नथी. तेमांज मानव जातनुं हित समायेलुं छे. केमके लोको घणी जुठी भ्रमणानी जाल थी बचे छे. अने सन्मार्गमां टकी रहे छे. आजे सन्मार्गमां टकी रहेवुं अने टकावी राखवा एज मोटामां मोटो जनता उपर उपकार छे.

(२१) जो जैनाचार्यो तेना उपर आधार राखता थई जाय, तो जिनपूजा तो शुं ? परन्तु जैनधर्मनी आखी इमारतज उथलावी नांखवी पडे. एटले के तेनुं अस्तित्वज मोटावी देवुं पडे. ए आजना परिवर्तननोनुं पर्यवमान छे. दुःखनो विषय ए छे, के—लेखक जैनाचार्यने मान्य परंपरानी वफादारो जालववाने बंधायेला छतां आधुनिक ऐतिहासिक-परंपराने खरो इतिहास मानीने तेने अनुसारे जैनधर्मना आचार विचारनी तुलना अने समालोचना करे छे. आधुनिक साथे तुलना करतां एक पण जैन सिद्धान्त आचार के विचार मूल स्वरूप उपर टकी रहे तेम नथी. कारणके—जैनशासन आत्मवादना पाया उपर स्थिर छे; त्यारे आधुनिक दरेक विचार परंपरा अनात्मवादना आदर्शना आधार उपर रचायेल छे. आ बेनी तुलना शी रीते करी शकाय ? छतां लेखक–पोते आधुनिक परंपराने खरो इतिहास माने छे. जो के-शब्दथी ते पुस्तिकामां आ वात तेओश्रीए स्पष्ट करेल नथी, तेनी पाछल पण दंभ धबके छे. ते स्पष्ट करवामां प्रामाणिकता हतो, जे तेओ बतावी शकया नथी. अने पोते मूलभूत सार ऐतिहासिक परंपराने पण माने छे. तेओए मात्र भरतचक्री विगेरेनो उल्लेख करीने डोल तो देखाडयोज छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२२) आधुनिक ऐतिहासिक दृष्टिथी पण आ पुस्तिकामां लगभग १२ पेईज सुधीमां एक पण प्रमाण आप्युं नथी. के जेथी तेना गुणदोष उपर कोईपण लेशमात्र पण समालोचना करी शके. मात्र कोथलामां पांचशेरी मूकीने परंपरागत इमारतना जुदा जुदा भागो उपर शब्द कटाक्षो योजा मूढ घा मार्या कर्या छे.

पुस्तिका पृ० ५ उपर—"पण जिनो कांई सदा-काल एकज स्थाने रहेता नहि, जगतना जीवोना हितार्थे तेओ जुदा जुदा देश प्रदेशोनुं पर्यटन करता रहेता. जे देशमांथी तेओ विहार करी जता, ते देशना तेमना परमोपासक बनेला गृहस्थो तेमना विरहमां तेमनुं दर्शन करवाने तरसता अने झुरता, पण ते कंई एवी वस्तु न हती के कोईनी ईच्छा मात्रथी मली जाय. परिणामे तेओ पोतानी दर्शन इच्छाने पूर्ण करवा तेमना आकारो चीतरावीने के तेमना प्रतिबिंबो करावीने पोतपोताना घरोमां राखता अने तेमना दीदार निरखी-निरखीने नयनोने तृप्त करता. आम मनुष्योनी दर्शनेच्छामांथी मूर्तिनो प्रादुर्भाव थयो."

"आ लखाणनो पाछल मात्र कल्पनाज छे ? के कोई प्रमाणभूत आधुनिक इतिहासनुं मजबुत प्रमाण छे ?" एम आपणे आधुनिक इतिहासनी परंपराने आधारे पण तेओने पूछी शकीये छीये कारण के—तेओए ए दृष्टिथी पण कोई जातना प्रमाणोनो उल्लेख करेलो नथी. कोई ग्रंथ के विद्वाननुं प्रमाण पण आप्युं नथी तेमज, पोतानी स्वतन्त्र शोधखोल होय तो तेना पण कोई पूरावा टांक्या नथी. मात्र हकीकत कही राखो छे. केवल दोडये जता कल्पनाना घोडा सिवाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते हकीकतांने कई जातनो मानी शकाय तेवी छे ? कया तीर्थङ्कर देशना वखतमां श्री जिनवर चाल्या जवा पछी भक्तो झुर्या अने जिननु' चित्र पहेलवहेलु' काढयु' ? या मूर्ति बनावी ? कोणे बनावी ? केटला वर्ष पहेलानो ए समय हतो ? कया स्थलना गृहस्थोए पहेली वहेली ए घटना खडी करी ? तेमांनु' एक पण प्रमाण के कशी चोखवट ऐतिहासिक प्रमाणो आपीने करी नथी; जे खरो इतिहास लखनारे करवी जोईए. नहिंतर, खरो इतिहासज्ञ शानो ? आवी वातोने "खरो इतिहास" पण कहेवानो अधिकार शी रीते प्राप्त थाय ? भींत विना चित्रामण शानु' संभवे ?

(२४) लेखकनो आशय ए छे के-भक्त गृहस्थोए मूर्तिनु' निर्माण कयु' अने पूजाना प्रकार योज्या. तथा पाछळथी सुविहितोए शास्त्रोमां तेने स्थान आप्यु' एम जणावीने आडकतरी रीते जिनपूजा ते सर्वज्ञोपदिष्ट न होवाथी वास्तविक रीते अनागमिक छे एम ठरावी देवानो गर्भित प्रयत्न करी दीधो होवा छतां, बीजाने तेनी चर्चानु' बारणु' बंध करी देवानी युक्तिरूपेज शरुआतमां पुस्तिकानी विषयमर्यादा बांधी दीधी छे. अने छेल्ले लखे छे, के "म्हारा अंगत विचारोने अम्हारे माटे छोडी देई" परन्तु मन, वचन, काया अने स्वस्वने भोगे जैनशासनने खरेखरी रीते समर्पित होय, तेने अंगत विचार जेवु' होयज शु' ? होईज शके केम ? अंगत विचारोनी वातो आजकाल शास्त्राज्ञामांथी छटकवानो बारी तरीके करवामां आवे छे आजे पोतानी स्वतंत्र विचारधारा होवाना बणगा घणा फू'कता होय छे. परन्तु ते केवल बणगाज होय छे; कोईनी पण स्वतंत्र विचारधारा होई शकती नथी, ते विचारधारानो कांईने कांई आधार होय छे. भारतमां प्रचलित विचारधाराओ करतां जुदो बहारनी विचारपरंपराओने आधारे लखता लेखको पोतानी स्वतंत्र विचारधारा गणावे छे जेथी बहारनी विचारधाराओथी अपरिचित अज्ञान लोकोने "स्वतंत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विचारधाराओ रूपे" समजाववामां आवे छे अने पोते स्वतंत्र विचारक तरीकेनो ढोल जाहेरमां खडो राखे छे. आ बधी वस्तुस्थिति आजे चालु छे. परन्तु सांस्कृतिक के प्रागतिक बेमांथी एक विचारधाराना आधार उपरज आजना बंनेय तरफना लोकोनो विचारणा होय छे.

(२५) धर्मार्थ-काम-मोक्षाणामुपदेश-संवलितम् ।
कथा-युक्तं पूर्व--वृत्तमितिहासं प्रचक्षते ॥१॥

अर्थः—"धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष, ए चार पुरुषार्थनो उपदेश जेमां गुंथायेलो होय तेवी कथा सहित जे पूर्वकालना बतावोनुं वर्णन, तेने विद्वानो इतिहास कहे छे."

आ प्राचीन परंपरानी ऐतिहासिक परंपरानुं लक्षण छे त्यारे आधुनिक परंपराना आदर्शमांथी ज्यारे धर्म अने मोक्षने तो बाद राखवामां आव्या होय छे. अने अर्थ अने काम पुरुषार्थने पण धर्म निरपेक्ष-सेक्युलर--स्वीकारवामां आव्या होय छे. ने तेने मददगार थाय तेवी रीते प्राचीनकालना साधनोनुं निरुपण करवुं ते आधुनिक ऐतिहासिक परंपरानुं लक्षण छे. प्राचीन धार्मिक पुरुषोनी वातो लखीने तेमांथी ऐतिहासिक पूरावाओ शोधवा मात्रथी तेओ" प्राचीन धार्मिक मान्यताओने मानता होय छे एवी भ्रमणामां घणा अज्ञान जीवो पडी जाय छे अने तेमना उपर विश्वास मूकी दे छे. "परन्तु ए तो मात्र प्रतिष्ठा जमाववा पूरतो स्टंट मात्रज होय छे." एम समजी जवुं जोईए. आ रीते बंन्नेय ऐतिहासिक परंपराना स्वरुप, आदर्शो अने ध्येयमां आकाश पाताल जेटलुं अंतर छे. आ वातनो आछो ख्याल पण लेखके आप्यो होत तो तेमने हाथे आवो छबरडो न वलत.

(२६) आ पुस्तिकामां एक ठेकाणे लख्युं छे के-"पंचोपचारी अने अष्टोपचारी पूजा असंख्य वर्षो सुधी चाली" हालनी ऐतिहासिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परंपरा प्रमाणे तो वर्तमान पृथ्वीनी उत्पत्तिने करोडो वर्षो करतां वधारे वर्षो मनाता नथी. अने मानवजातनी उत्पत्तिने तेनाथीये ओछा करोडो वर्षो थयानु मनाय छे. परन्तु जैन कालगणना प्रमाणे ते संख्याताज वर्षो गणाय छे त्यारे "असंख्यात" शब्दनो प्रयोग जैन इतिहासना आधारे कर्यो छे ? के आधुनिक इतिहासने आधारे कर्यो छे ? ए प्रश्न उभो थाय छे. परन्तु असंख्य एटले "घणा घणा" आवो अर्थ ध्यानमां राखीने जेने गर्भित रीते खरो इतिहास मानीने आ पुस्तिका लखाई छे. तेने आधारे--"असंख्य" शब्द लखायो छे. परन्तु जैन वाचकोना दिलमां-"जैन इतिहासिक परंपराने ध्यानमां लईने आ पुस्तिका लखाई छे." एवो खोटो भ्रम उत्पन्न करवा माटे ए शब्द योजवामां शब्द छलनी युक्ति सेवाई छे. नहिंतर, जैनशासन जेटलोज प्रतिमा निर्माण अने जिनपूजा पद्धति प्राचीन होवानी कबुल राखीने आ पुस्तिका लखाई होत. देवकृत पूजा अनादिनी मानी होत. स्नात्रनी उत्पत्तिना २५००-२७०० वर्षो पहेलांना जेटलोज लगभग प्राचीनकाल न आप्यो होत. अथवा तेनाए समय अने प्रवर्तकना नामो आप्या होत. २७०० वर्षोए प्रभुश्री महावीरदेवनो पहेलानो वखत छे. एमनी शोध प्रमाणे स्नात्र महोत्सवो श्री पार्श्वनाथ प्रभुना वखतथी के तेना पहेलाथी शरु थाय ? कोणे कर्या ? तेने प्रभुश्री महावीर सर्वज्ञ प्रभुए अनुमोदन आप्यु ? के नही ? अथवा छद्मस्थ प्रकल्पित तेनो निषेध के विरोध कर्यो के नही ? ते बधु लखवानो बोझो लेखक उपरज छे. भरतचक्रवर्त्ती अने नंदीश्वरादि द्वीप विगेरेना नामो पण एवीज युक्तिथी पुस्तिकामां दाखल करेला छे के ते विषेनो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विचारणा हवे पछी हाथ धरीशुं. कुयुक्तिओ करवा अने तेने पाछी छुपाववा माटे पुस्तिकामां घणी महेनत लेवी पडी छे. ते पण हवे पछी स्पष्ट करीशुं.

(२७) वैदिक-संस्कृति अने श्रमण संस्कृति एम बे संस्कृति जणाववामां पण आधुनिक ऐतिहासिको उपरनी अंधश्रद्धाथी गोथुं खवाई गयुं छे. जगत्मां चार पुरुषार्थना पाया उपरनी विश्ववत्सल पुरुषोए प्रचारमां मूकेली एकज मानवी संस्कृति छे. सर्वदेशोमांनी सर्व संस्कारी प्रजाओना जीवनमां वणाई गयेली एकज मानवी महा अहिंसक संस्कृति सदाने माटे-जगतमां छे. भारतादिदेश अवसर्पिणी आदि काल अन्य संयोगो अने पात्र भेदे तेना जुदा जुदा आकार जरूर थया छे, परन्तु आकार भेदे, संस्कृति भेद मानवामां विचार मुग्धता गणाय छे. आधुनिकोए पोताना एक पक्षीय स्वार्थ माटेनी अनात्मवादी प्रगतिने संस्कृतिमां भेलवी दई, अनेक संस्कृतिओ मानी एक संस्कृति तरीके तेने गणावरावी लोकोना जीवनमां व्यापक करवा माटे ए जुठाणुं उभुं कर्युं छे. अने तेना आधार उपर वैदिक संस्कृति, बौद्ध संस्कृति, जैन संस्कृति, इस्लाम, ख्रीस्ती बेबीलोन श्रमण ब्राह्मण संस्कृति विगेरे संस्कृतिओनी नामावली प्रसिद्ध कर्या करे छे. ने ईरादा पूर्वक मोटापाया उपर जुदा जुदा निमित्तोथी प्रचार करे छे अने करावे छे. तेनुं अनुकरण अहींना तेना अंध भक्त लेखको करे छे. ने केम जाणे के ते पोतेज कांई नवुं शोधी काढयुं होय? तेवा डोल दमामथी प्रसिद्ध करे छे. खरी रीते कोई अंग्रेजी विगेरे पुस्तको के तेना भाषांतरोना लेखोमांथी घणुं खरुं लीधुं होय छे. आधुनिकोए मानव-जातनी उत्पत्ति तेवा प्रकारनां माछलामांथी. त्यारे सारुं थयुं के एक अमेरिकन विद्वाने डार्विननी आ वातोने "टाढा पहोरना गप्पा" ठरावीने "प्रत्येक प्राणीनो विकास तेनी कोई मूल जातीमांथीज थाय छे" एम जणाव्युं छे. जे वात केटलेक अंशे व्याजबी छे. मानवी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम जंगली हता, पण ए युरोपनी वात छे. एच. जी. वेल्सनने पण एक ठेकाणे लखवु पडयु छे के—"पूर्वमांथी निडरथाल जातिओ युरोपमां आवी ते संस्कारी हती" वांदरामांथी माणस थयां तो माणसमांथी शु थशे ? के बस प्राणीओना विकासनी ए छेल्ली हद छे ? अने जो तेमांथी कोई बीजी जाति उत्पन्न थवानी होय तो तेना कोई नमुना जगतमां छे ? जो मानवोना पूर्वजरूप वांदरा पण विद्यमान छे. तेना पूर्वजरूपमां माछला पण विद्यमान छे. तेम मानवो जेना पूर्वज छे, ते जातिना पण कईंक आगलना नमुना तो जगत्मां जोईए ने ? के हजी ते उत्पन्न थया नथी ? शो अभिप्राय छे ?

आ रीते जेनो कोई ढंगघडो नथी, तेने खरो इतिहास मानीने तेने आधारे भारतनी प्रजाने चलाववामां चालवामां शी प्रमाणिकता छे ? ते कोई बतावी शके तेम छे ?

एक लेखके तो त्यांसुधी ऐतिहासिकताने नामे एवी मतलबनी हकीकतोनो प्रचार कर्यो छे, के—"भगवान् ने लोको मानता थया तेना मूलमां भग एटले योनि—योनीवाली ते भगवती एटले के स्त्री जे प्रागैतिहासिक कालमां मुख्य हती ते शिकार करतो बाप भाई पौत्र नो भेद राखवामां आवतो नहि, दरेक साथे भोग करती हती पछी पुरुषोनी मुख्यता थई. एटले भगवतीने बदले भगवान मनाता थया." वगेरे वोल्गासे गंगा पुस्तक वांचवाथी वांचकोने लगभग आ जातनु विधान जाणवामां आवशे.

इतिहासना नामे छेल्ला ५०–१०० वर्षना गालामां आपणा देशना आधुनिक शिक्षित विद्वानोए आंधलु अनुकरण करीने अंधा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धूम चलावीने ऐतिहासिक क्षेत्रे पण भारे गोटाला उभा कर्या छे. तेमां वली छेल्ला दश वर्षमां निशालोमां इतिहासना नामे जे साहित्य अने चोपडीओ चाली रही छे, तेमां तो जेम केटलाक जुठाणां सुधर्यां छे, त्यारे केटलाए टका पहेलां करतां जुठाणानुं प्रमाण वधी गयुं छे. आधुनिक जडवाद अने विदेशीय दृष्टि पोषवा केटलाक तो तद्दन जुठ्ठाणां इरादापूर्वक फेलावाई रह्या छे. अने इतिहासना पाठ्य पुस्तकोना लखनारा प्रस्तावनामां स्पष्ट निर्देश करे छे, के विद्यार्थीओनी आधुनिक दृष्टि केलववाना आदर्शने सामे राखीने आधुनिक ढबे आ पुस्तक लखवामां आव्युं छे. वगेरे वगेरे" आम एक पक्षीय इतिहासने खरा इतिहास तरीके मानीज केम शकाय ? कारणके बनाव भारतनी संस्कृतिक दृष्टिथी बन्या होय, तेने आधुनिक अनात्मवादी प्रागतिक दृष्टिथी घटावाय अने महत्त्व पण अपाय तेमां प्रत्यक्ष मूलभूत जुठाणुं छेज. अज्ञान कुमला बालकोना मगज तेना पृथक्करण शी रीते करी शके ? एटले तेना मगजमां पहेलेथीज भारत देशनी महा प्रजानी जीवन संस्कृति अने आचार विचारो, सिद्धान्तो. विगेरेथी विपरीत बाबतो ठसाववामां आवे छे. अने ५० वर्षे एवा एक वर्गनी मोटी संख्यामां एकज जातनो सूर काढनारी फोज उत्पन्न थाय, पछी तेमनी बहुमतीनुंज साचुं गणाय. बीजी गमे तेटली साची वात कोई सांभलेज नहीं. आ रीते, हवे तो मोटा पाया उपर फेलावाता जुठाणांनो अहीं तो निर्देश मात्र करवामां आव्यो छे. जेने खरो इतिहास मानीने पुस्तिका लखवामां आवी छे, ते पोते इतिहासज केटला असत्योथी भरपूर छे ? तेनी तो मात्र अमे अहीं झांखीज करावी छे. जेथी आ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तिका साचा इतिहास अने शास्त्राज्ञाओ साथे जरा पण संगत नथी. परन्तु अनेक रीते विसंगत छे. माटे निष्फल अने त्याज्य छे.

श्री जिनपूजा पद्धतिनी पाछल जैन शास्त्रोक्त इतिहासना शा शा आधारो छे ? ते बतावयानो प्रयास करवानी अमारे आ स्थले आवश्यकता नथी. परन्तु "खरो इतिहास" मानीने जेना आधार उपर आ पुस्तिका लखवामां आवी छे, ते केटलो निराधार अने अनुपादेय छे ? तेज बतावयानो उद्देश आ लेखनो छे. तेथी उक्त पुस्तिका न खरा शास्त्र पाठोने आधारे लखाई छे माटे निष्फल निरुपयोगी अने केवल धांधल फेलावनारी छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"श्री जिनपूजा पद्धति" पुस्तिकानी निष्फलता.

लेखांक—पांचमो.

भाषानी तोछडाई अने हकीकतो मरडवानी कला.

भारतनी महा आर्य प्रजाना सांस्कारिक जीवननो कोईपण अंश निर्हेतक तथा जेनी पाछल तत्त्वज्ञान-सिद्ध कोईपण मजबूत सिद्धान्त न होय एवु छे नहिं. धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष आ चार पुरुषार्थना आधार उपर आर्य-जीवननी दरेक बाबतो महा-पुरुषोए हित जाणीने प्रचलित करेली छे. अने तेनी पाछलना हेतुओ तथा पूर्वापरना संबधोने ते विषयना शास्त्रोथी जाणी शकाय तेम छे. शिल्पशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, वैद्यक-शास्त्र, संगीतशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, धर्मशास्त्र, भाषाशास्त्र, तर्कशास्त्र, मानसशास्त्र, विश्वविज्ञानशास्त्र, भूतल, भूगोल, खगोल, भूस्तर विगेरे शास्त्रो, धातुवाद, नीति, तंत्र, जीवन, व्यापार, कृषि, अर्थः राज्यनीति, समाजः काम, कर्म, आत्म, भौतिक, वनस्पति वाद्य, नृत्य, कला, चित्रकला, गुन्हो शोधन, न्याय, अनुवंश शुद्धि, वायु शास्त्र विगेरे विगेरे. संख्याबंध शास्त्रोनी अने तेना परस्परना संबंधोनी तथा तेनी पाछलना मूल आधारोनी विद्यमानता होवानी भारतनो मूलभूत साचो इतिहास ज्यारे पूरेपूरी साक्षी पूरे छे, त्यारे तेनी सामे आंख केम मींची शकाय ?

अने ए सर्वनु शिरोमणि-अध्यात्म-धर्म अने मोक्षशास्त्र विगेरे मूल आधारभूत शास्त्रो ज्यारे अस्तित्व धरावे छे, अने ते सर्वनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाछल-आत्मा, तेनुं नित्य स्वतंत्र पदार्थपणुं. तेनामां कर्म कर्तृत्व अने भोक्तृत्व, सर्वकर्मबंधनथी छुटवारूप मोक्ष-मुक्ति, अने तेना उपायोरूप रत्नत्रयी; एम विज्ञानसिद्ध एवी आधार-शिला सिद्ध छे. अने तेना आधार उपर हेय, उपादेय, उपेक्ष्य अने ज्ञेयरुप जीवन अने तत्त्वज्ञान शास्त्र छे. तेनी पाछल एटले तेनी स्थिरता खातर उच्च चारित्र पाळी जीवन सर्वस्वनो भोग आपनारा महानुभावो, मानव जीवनमां प्रचलित उपर जणावेला छ मूलभूत आधारो उपर रचायेला शुद्ध जीवन व्यवहारो तेनो आजसुधी परंपरागत चाल्यो आवतो वारसो, कुटुम्ब-परंपरागत रीतरीवाज अने दृढ आचाररुपे प्रवाहबद्ध रीते चाल्या आवता जीवनधोरणो; के जेनी पाछल उपरना शास्त्रो अने हेतुपूर्वकना अनेक सिद्धांतोनुं बल छे. महापुरुषोनी सुव्यवस्थित, सहेतुक, सोदाहरण, सशास्त्र हितकारिणी आज्ञा, उच्च सिद्धान्तो, इतिहास अने सांस्कृतिक सम्बन्धो जोडायेला छे अने श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी जेवा महामर्मज्ञ पुरुषो पोताना ग्रंथोमां जेना बुद्धिपूर्वक उल्लेखो करे छे, तेमना कोईपण विधाननी पाछल कोरी कल्पनानो अंश पण नथी होतो. तेनी पाछल आगमो; तदनुसारी पूर्व पुरुषोना वचनो अने अन्य-लौकिक लोकोत्तर विज्ञानशास्त्रना प्रमाणो होय छे. ते गुरुपरंपरामांथी मळेला या अनुयोगमांना कोईपण अनुयोगसिद्ध आधार विनाना होय, एवी संभावनाज करी शकाय तेम नथी; आ एक साची वस्तु छे. अने आ स्थितिना टकाव माटे लाखो तो शुं पण करोडो अभिजात स्त्री पुरुषोए पोताना जीवनसर्वस्वना त्यागमय भोगो आपेला छे. आजे पण सांसारिक जीवनथी दूर रही विशाल संख्यामां भोगो आपी रहेला त्याग, संयम, शांति अने यथाशक्ति धर्ममय जीवन जीवनाराओनो मोटो वर्ग जगत्‌ना पट उपर पोतानुं असरकारक अस्तित्व, धरावी रह्यो छे. आम छतां युरोप-अमेरिकाना स्वार्थी लोकोए पोताना केवल भौतिक स्वार्थ माटे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनीति अने अन्यायपूर्णरूपे जगत् उपर पोतानो कब्जो धरावी, तेमां आगल वधी–वधारे पडता भावि स्वार्थो सफल करवा अनेक जातना जुठाणां, प्रपंचो, कुट युक्तिओ फेलावी रहेल छे; अने तेने अनुसरतुं विशाल-साहित्य उत्पन्न कर्युं छे. छापखानाओ द्वारा तेनो मोटा पाया उपर प्रचार कर्या करे छे. विशाल यंत्र वाद तथा-अनात्मवादी भौतिक विज्ञानशास्त्र पण स्वतंत्र रीते उभुं कर्युं छे. एटलुंज नहीं. परन्तु मानवजीवन के बीजी कोईपण जगतनी दुन्यवी बाबतो विषे विचारणा अने तदनुकूल व्यवहारो, रुढियो, वादो, विगेरेनुं सर्जन करी प्रचारमां मूकेला छे अने यु. एन. ओ. विगेरे तेमां विशेष आगल वधी, तेने स्थान अपाववा तथा आत्मवादना अंशेअंश व्यवहारने मानवोना मानव–जीवनमांथी विदाय अपाववाना असाधारण प्रयासो चालु करी रहेल छे. आ–मूल–चूल–परिवर्तन करवा प्रयास करी रहेल छे, तेथी तेओनी दृष्टिथी जोतां "आधुनिक सर्जननी महत्तानेज मुख्य स्थान मलवुं जोईए." एवी तेओनी मन्यता होय छे. तेथी तेओना मनमां ए आदर्शने आधारे तुलना करीने जोतां, भारतनी महा प्रजानी उपर जणावेलो विश्वव्यापक अने सनातन व्यवस्था रचनानो तेना रचनारा अने निभावनाराओनो शो हिसाब होई शके? रेडियो, फोटोग्राफी, अणुबोम्ब के हाईड्रोजन बोम्ब के बीजी शोधो करनार अने प्रो आइन्स्टाईन विगेरेनी तुलनामां श्री हरिभद्रसूरिजी के कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य, शंकराचार्य के एवा बीजाओनी शी गणत्री होय? **नाना मोटा पीट**, मी. चर्चील, लोर्ड कर्जन, मी. कलाईवनी तुलनामां श्री तीर्थङ्कर प्रभुनो पण तेओना हृदयमां शो हिसाब होय? हेमरशिल्ड के जे यु. एन. ओ. द्वारा एक महान्–परिवर्तनरुप मानव-जीवनना भौतिक नवसर्जनना केन्द्रमां एक संचालक मंत्री तरीके भाग लई रहेल छे, तेनी आगल श्री आदीश्वर प्रभु जेवा अहिंसक मानवीय संस्कृतिना आदि व्यवस्थापकनी पण शी गणत्री होय?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आजना आधुनिक इतिहासकारो लेखको तथा ऑक्सफर्ड अने केम्ब्रीज. हावर्ड के बीजी मोटी मोटी बहारनी युनिवर्सीटीओना ग्रंथ-कारो. अने के एम. मुन्सी विगेरेनी आगल वाल्मिकी के कालिदास के बीजा भागवतकार के बीजा भारतीय ग्रंथकारोनो शो हिसाब ? श्री शालिभद्र. धन्नाजी. मीरां. नरसिंह मेता, ज्ञानेश्वर, स्कन्धक मुनि गजसुकुमार के श्री स्थूलभद्र मुनि के एवा बीजाओनो आजना मार्टीन ल्यूथर –रवीन्द्रनाथ टागोर, नानालाल, बर्नार्ड शो, मी. एन्थनी ईडन, मी. आईसेनहोवर के एवा बीजाओ आगल शो हिसाब ?

आथी करीने आजना कोईपण युरोपीय स्कोलर अने आ देश-मांना तेओना अनुयायि शिष्यो जेवा. तेओना विचारोथी अनुप्राणित अहींना विद्वानो विगेरे "हरिभद्र" "हेमचंद्र" "महावीर" 'सिद्धसेन' "शंकर" "व्यास" "वाल्मिकि" विगेरे उचित विशेषणो विना मात्र नामज लखे के बोले तेमां शी नवीनता छे ?

कारण के–तेओनी दृष्टिमां ए महापुरुषो छतां एक सामान्य कोटिनाज मानवो मनायेला होय छे. विद्वत्ता करतां तेनी साथेना तेओनां उच्च त्यागमय जीवन तेओनी महत्तामां करोडोगणो वधारो करतां होय छे. ते वस्तुने तो ध्यानमांज लेवामां आवती नथी. कारण के त्याग तो तेओनी दृष्टिमां एक जातनु गांडपण जणावेलु छे. कोट, पाटलुन पहेरनाराज महत्त्वना मानवो गणवामां आवे छे. कारण के त्याग तो तेओनी मात्र तेओनी विद्वताने ध्यानमां लईने पोताना मंतव्य साथे बहारथी मलती देखाती बाबतो शोधी काढीने ते तरफ स्थानिक आ देशना जन–समाजने आकर्षवा पूरता तेमना नामो अने प्रमाणो लेवामां आवतां होय छे. वस्तुतः तो आपणने आपणी भावि प्रजाने समग्र भूतकाल भूलावी देवानोज तेओनो आदर्श छे. आ वात इंग्लांढमांनी भारत ओफीसनी लाईब्रेरीना मोटा लाईब्रेरीयन पोताना एक वखतना भाषणमां बोली चूकया हता, के "वर्तमान अने भविष्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपर दृष्टि राखो, अने भूतकाल भूली जाओ !" आ मतलबनु' तेमनु' कथन हतु'.

आजना विद्वानोनु' कहेवु' छे के "भारतना शास्त्रो, अने तेना केन्द्रमां रहेलो आत्मवाद तद्दन अप्रमाणभूत, नजीवो, वहेमरुप अने अंधश्रद्धारुप या तो हवाई ख्यालो रूप छे आत्मानु' अस्तित्व मानीने मानवोए हवे शा माटे चालवु' ? आधुनिकताथी सिद्ध थयेली बाबतोनेज प्रमाण मानीने चालवु' जोईए. तेनेज महत्व आपवु' जोईए, तेनेज प्रतिष्ठित अने सन्मानित करवी जोईए, "सर ओलीवर विगेरे आत्मानो शोध चलावी रह्या छे." एवो विश्वास—धरावीने जगतना आत्मवादी लोको भले आशाने तांतणे बंधाई रहे."

"हेमचंद्र कहे छे, के" त्यारे बीजी तरफ "आचार्यश्री जिनविजयजी कहे छे, के" "हरिभद्र कहे छे, के" बीजी तरफ "काका साहेब कालेलकर कहे छे, के" आ जातनो आधुनिक भारतीय विद्वानोनो पण भाषा भेद हवे स्पष्ट थई चूकयो छे, केमके तेमनी दृष्टिमां भारतनी महाप्रजा कोई पण रचना बुद्धिपूर्वकनी खास जणातीज नथी. दरेकमां "रुढि, अंधश्रद्धा, अज्ञानता, गतानुगतिकता" तेओने देखाय छे, कारण-तेओना विदेशीय गुरुओने विदेशमां बेठा बेठा अने भारतमां शोधो करतां करतां एम जणायु' छे. माटे तो नवरचना नव सर्जननी धुनमां तेओ पण विदेशीयोनी पाछल जोडाई गया छे. आना जेवी पर-प्रत्यय-नेम बुद्धिता बीजी कई होई शके ? आना जेवी बीजी अंधश्रद्धा कई होई शके ?

ज्यारे वास्तविक रीते एम नथी. परन्तु जे वास्तविक छे, ते जोवानी आंख तेओनी पासे नथी. केमके-तेओनो गुरुवर्ग-तेओने साचु' समजवामां सहायक थाय तेम नथी. कारण के तेम करवा देवामां तेओनो दूरगामी स्वार्थी हेतुओनी सफलतामां अगवड आवे तेम छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आम छतां, दरेक देशनी स्थानिक प्रजाने राजी राखी. तेओनीज मारफत स्वानुकूल परिवर्तन करावी लेवाना उद्देशनी सफलता माटे काम चलाउ-देखाव पूरती -अनेक बाबतो तेओनेज हाथे चालु राखवामां आवे छे. अने संशोधनने नामे तेनी शोधो कराववामां आवे छे. अने अनात्मवादी नवजीवन व्यवस्थाना सर्जनमां उपयोगी थाय, ते रीते तेनी प्रतिष्ठा अने उपयोग प्रचारवामां आवे छे.

आ एक चालु परिस्थिति छे.

आ जिनपूजा पद्धतिना लेखक पण जो के-पोतानु जीवन भारतीय महाप्रजानो विश्व व्यापक अहिंसक संस्कृतिना केन्द्रभूत मुनिजीवननो आश्रय स्वीकारीने चलावे छे; छतां तेओ मानसिक रीते आधुनिकताना गतानुगतिक मात्र पक्षपाती अने प्रोत्साहक छे. ए तेमना घणा खरा लखाणो, लखाण पद्धति, अने तेमांना केटलाक विधानो उपरथी स्पष्ट जणाई आवे छे. जो के समुद्रनी भरतीनी माफक धुधवता आजना विचार-वातावरणना जुव लथी बुद्धिने बचावी तेनी पार लई जवी, ए असाधारण पुरुषार्थ छे. ते बधा माटे शकय होवु मुश्केल होय छे. तेथी ए रीते दोरवाई जवाय छे. अने तेथी, तेओना साहित्यमां एवी वस्तुओ जणाई आवे ए स्वाभाविक छे. आ स्थितिमां तेओनी पासेथी बीजी आशा राखवी, ए वधु पडतु छे. भूतकालमां जेओए एवी आशा सेवी होय, तेओ ठगाया छे, अने तेमां तेओ निष्फल गया छे. एम समजी लेवु जोईए.

आ पुस्तिकामां:—भाषानी तोछडाई जे जणाई आवे छे. तेना मूलमां उपरनां कारणो जेनु अमे स्पष्टीकरण प्रथमथीज आ रीते कर्यु छे.

तथा वास्तविकताओने मरडोने पोतानी धारणा मुजबनी छाप वांचकोना मगजमां उपसाववानी विदेशीय लेखकोना जेवी कलानो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपयोग ठाम ठाम नजरे पडे छे. तेनु पण कारण ए छे, के—"तेओनु मानस आधुनिक परंपराथी वधारे घडायेलु छे. भारतीय वस्तुस्थितिओनु मूल्यांकन लगभग तेज मानसथी करायेलु होवानु स्पष्ट जणाई आवे छे. तेथी ए स्पष्ट जणाई आवे छे, के—भारतीय आदर्शोनी मूलभूत रहस्यात्मक-भूमिका सुधी तेओनु मानस पहोंची न शकवाने लीधे, तेमने हाथे गमे तेम लखी नंखाई जाय छे."

"भारतीय आर्य जीवन प्रवृत्तिनी पाछल, तेनीये पाछल, ने तेनीये पाछल कोईपण महत्त्वना हेतुनो के सिद्धांतनो टेको नथी होतो. प्रजानी यथाकथंचित् प्रवृत्तिओ थई गयेली होय छे. सारी लागवाथी सारा अने मोटा गणाता माणसो तेने चालवा दे छे." "आवीज कोई निराधार कल्पनानी उपर लेखके पोतानो आ संदर्भ तैयार कर्यो छे," एम स्पष्ट जणाई आवे छे,

"लोकोने जे वखते जे गम्यु, जे ठीक लाग्यु. ते थयु. विद्वानोए तथा संतोए तेनो स्वीकार करी लीधो बस" आ धारणा उपर आ पुस्तिका तैयार थई छे.

धर्म, दर्शन के शासननी पाछल कोई भूमिकाओ न होवानु मानीने लगभग आ पुस्तिका लखाई छे. अने तेमां लगभग आधुनिकतना साहित्यने गर्भित रीते प्रमाणभूत मानीने, आधुनिक केटलाक वादो अने आदर्शोने गर्भित रीत प्रमाण मानीने, अने भारतना साहित्यने लगभग प्रमाणाभाससमान मानीने आ पुस्तिकानु लखाण थयु होवानु बराबर स्पष्ट जणाई आवे छे.

जो के—जैन शास्त्रोमांनी केटलीक प्राचीन अतिप्राचीन घटनाओनो उडती नजरे उल्लेख करीने, शास्त्रोने प्रमाणिक मानवानो देखाव आ पुस्तिकामां कयांक कयांक थयो छे, ए खरु छे. परन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाछलनी मनोवृत्ति तो बीजी रीतनी होवानी स्पष्ट जणाई आवे तेवा घणां प्रमाणो आ पुस्तिकामांज भर्या पडया छे,

भाषानी तोछडाई अने हकीकतो मरडवानी बाबतोनुं पृथक्करण करीने तेमना उपर दोषारोपण करवा कोई काचो पोचो माणस जाय, तो तेने लेखकनी सामे हार खावी पडे, शाब्दिक खुबीओ अने कुशलता जरूर छे. परन्तु मर्मज्ञोनी आगल पोतानो ए निर्बलता पोतानेज कबूल कर्या विना चाले तेम नथी.

"जमवुं, भोजन करवुं, आरोगवुं, गलचवुं, खाई नाखवुं, पेटमां ओरवुं. घालवुं," आ शब्दोना अर्थमां शो फरक छे ? लेशमात्र फरक नथो. परन्तु भाषानी दृष्टिथी सभ्य भाषा अने असभ्य भाषा तरीकेनो केटलो बधो भेद जणाई आवे छे ? शब्दो वापरवानी पाछल वापरनारना दिलनी सभ्य के असभ्य मनोवृत्ति, सद्भाव के असद्भाव, सन्मान के तिरस्कार विगेरे शब्दोना वपराश उपरथी जणाई आवता होय छे.

"माताजीने चरणे नमस्कार कर्यो," "बापनी बैरीना टांटीयामां माथु भटकाव्युं" "चोवीहारो उपवास तप कर्यो" "पाणी विनानी भूख हडताल उपर उतर्यो."

आ रीते-एकज अर्थना शब्दो अने वाकयो वापरवामां सभ्यता, सद्भाव, सन्मान जणाई आवता होय छे, अने एज अर्थना बीजा शब्दो एवी रीते वपरता होय छे, के—तेनी पाछल मनोवृत्तिनी असभ्यता. असद्भाव, तिरस्कार, अणगमो मश्करी, मीठी मश्करी, कटाक्ष विगेरे जणाई आवता होय छे.

एक माणसनुं खुन करी नाखवामां आवे, त्यारे तेना स्नेही संबंधीओने मन एक भयंकर उत्पात थई गया जेवुं लागे, अने तेओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमकमी उठता होय छे. त्यारे खुनीने पूछवामां आवे के-"तें खुन केवी रीते कर्यु ?" तो ते ठंडे कलेजे जवाब आपशे. के-में तो आम करीने आमज म्हेजज तलवार हलावी, के ते मरी गयो. हुं शुं करुं ?" मोडो आवनार कलार्कने साहेब ठपको आपे, के "आज मोडा केम आव्या ?" एटले कलार्क कही नांखे, के-"साहेब ! जरा मोडुं थई गयुं. ए तो थई जाय." छतां बन्नेनी समज अने मनोवृत्तिमां मोटो फरक होय छे. ज्यारे उपरी अमलदार भूलने मोटुं स्वरूप आपता होय छे, त्यारे कलार्क नजीवी बाबत तरीके गणी गणावी काढवा मथतो होय छे.

आ दृष्टांत उपरथी आपणे समजी शकीशुं, के-भारतना शास्त्रकारो जेने महत्त्वनी बाबत तरीके जणावता होय छे, तेने आधुनिक लेखको अने वक्ताओ एक नजीवी वस्तुओ तरीके गणी काढता होय छे.

आनुं एक दृष्टांत आधुनिक जैन लेखक गणाता एक लेखके ए मतलबनुं लख्युं, के—

"ऋषभदेवना बहु दूरना अंधकार युगने जवा दईए." त्यारे भारतनो वफादार लेखक लखे, के—

"मानव संस्कृतिनी सुव्यवस्थानो पायो नांखीने श्री ऋषभदेव आदि ईश्वरे सौथी पहेलां मानवजाति उपर तेने प्रकाशमय जीवन—धोरणने रस्ते चडावीने महान् उपकार कर्यो हतो."

भारतीय जीवनने महत्त्व आपनारा लेखको जेने एक सामान्य वस्तु गणे छे, तेने आधुनिको वधारे पडतुं महत्त्व आपता होय छे.

दा. त. मूर्तिनुं निर्माण अने तेनो पूजा-सन्मान विगेरेनो मुख्य हेतु आदर्श पुरुषो तरफथी आत्मोत्कर्ष करनारी आध्यात्मिक—प्रेरणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेवानी होय छे. तेमां–कला–कारिगिरी, उत्तम शिल्प विगेरे जरूर सहकारी तत्त्वो छे, परन्तु, तेने गौण स्थान छे, पण प्रेरणा लेवा जेवु मुख्य स्थान नथी. आ वस्तु कोई पण समजी शके तेम छे.

परन्तु. "कला–कारिगिरी–के–शिल्पाकृतिने के शिलालेखने हरकत पहोंचे, माटे पूजा न करवी" आवी वात प्रेरणा लेवानो हेतु धरावतो वर्ग स्वीकारेज नहीं. त्यारे आजनो संशोधक पूजा के प्रेरणा लेवानी वातने महत्त्व आपे नहिं. कला अने शिल्पाकृतिनु रक्षण करवा ईच्छनारनी पाछलना मूल प्रचारकोना हेतु तो तेनु ये रक्षण करवानो नथी होतो. परन्तु, आधुनिक दृष्टिथी जणाती पूजा अने प्रेरणा लेवानी कुरुढिनो विरोध ए बहाने करवानो होय छे. त्यारे तेनी छायामां आवी गयेला अहींना आधुनिक लेखको सन्मान सत्कार–पूजा अने प्रेरणा लेवानो लाभ मेलवी आध्यात्मिक विकास साधी मोक्षमार्गमां आगल प्रयाण करवाना लाभने बदले एक सुन्दर दृश्य तरीके जोवामां महत्ता मानशे.

आम विकृति दृष्टिथी शास्त्रोनी अने भारतना शिष्ट जीवन व्यवहारोनी कोई पण बाबतनो समालोचना ने विचारणामां विकृति आवेज, ए स्वाभाविक छे.

जिनपूजा पद्धतिमां विकृति दाखल थई छे ? के नहीं ? ते गौण प्रश्न छे परन्तु आजकालना लेखकोमां आ उपर जणावेली खोटी दृष्टि रुप विकृति महाभयंकर बनी बेठी छे. ते ज खरेखरो चिंतानो विषय छे. भारतमां आ मोटामां मोटो रोग चेपी रोगनी माफक–चक्रवर्ति व्याजनी माफक–फेलातो जाय छे. तेवी विकृत दृष्टिथी आ पुस्तिकामां संख्याबंध शब्द प्रयोगो अने वाक्य प्रयोगो थया छे, तथा विना प्रसंगे–हकीकतो मचडवाना पुष्कल प्रयासो थया छे. पुस्तिका लखाई छे संक्षेपमां, परन्तु आवा शब्द प्रयोगो, वाक्य प्रयोगो, पेरेग्राफो, अने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रासंगिक विवेचनोथी लगभग आखीए पुस्तिका भरी पडी छे. आ पुस्तिकानी भयंकरता आ छे.

ते सर्वनो उल्लेख करी तेनी विकृतता बतावी आपवानु टुंकामां तो घणु मुश्केल काम छे. परन्तु थोडाक दृष्टान्त रुपे अहीं सूचित करीने--आ लेखांक पूरो करीशु. पुस्तिकामांनी विकृततानु स्पष्ट दर्शन कराववा माटे अमारे आटलु प्रासंगिक विवेचन करवु पडयु छे.

पृष्ठ ४-'तीर्थङ्करो जिनो पर्यटन करता हता' तेने बदले 'श्री तीर्थङ्कर भगवंतो विचरता हता.' विगेरे शब्दोथी सन्मान सूचक जैन परिभाषाथी लखावु जोईतु हतु.

पृष्ठ ५-'तीर्थङ्करोनी योग विभूतिना फल विपाकरुप प्रातिहार्योनु चित्रण पण प्रतिमाओनी साथे थवा लाग्यु.' "सवि जीव करु शासन रसी." ए प्रकारनी स्वतःसिद्ध तथा-भव्यताने बहार लावनार तीर्थङ्कर नामकर्मना फल विपाकरुप अष्ट महा प्रातिहार्यो स्वरूप विभूतिना दर्शनथी अन्य बाल जीवो खेंचाई आवीने-शासन रसिकतानो आत्मिक लाभ मेलवी जाय, माटे "प्रतिमाजी तीर्थङ्कर भगवंतना छे." एवो भास उत्पन्न करवा माटे प्रतिमाजीनी साथे प्रातिहार्य विभूतिना दर्शनरुप परिकरोना जोडाणनी—व्यवस्था चाली आवती हती." आम लखावु जोईतु हतु.

बहु लंबाण थई जाय माटे—लेखकनी भाषानी तोछडाईनी सामे खास स्थल शिवाय जैन शास्त्रीय सभ्य भाषाना उल्लेखो करी बतावी शकीशु नहीं.

पृष्ठ ६-"शिवाय बीजी पूजामां कोई समजतु नहीं" "श्री बाहुबलीजीए श्री आदीश्वर प्रभुना चरणने स्थाने धर्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्रनी स्थापना करी, अने पूजाना द्रव्योथी तेनी पूजा करी अने रोज पूजा चालु रहे," माटे—पूजारीओनी व्यवस्था करीने पोतानाज नगरमां गया. आ उल्लेख जैनशास्त्र ग्रंथोमांज छे तेना तरफ ध्यान लेखके केम नहीं आप्यु होय ?

प्र ६—'हु आ सुख साधनोनो उपयोग करु, अने मारा आराध्य देव जिनेश्वर भगवानने माटे कांई नही ?' भगवान उपर उपकार करवानी भगतनी मनोदशा केवी बतावी छे ?

"सुगंधी चूर्णनी पूडी देवने चडावी दीधी"
"फूलनी माला पहेरावी दीधी"

केवी तोछडी भाषा छे ? 'दीधी' शब्दनो प्रयोग न होत, तो पण कईंक ठीक देखात.

खरी वात ए छे, के-'आरंभ समारंभमां पडेलो गृहस्थ पोताना भोगने माटे अनेक वस्तुओनो सहज रीतेज उपभोग करतो होय छे. तेनो त्याग करीने सुपात्र दान वृत्ति अने भक्तिनु मानस केलववा माटे 'पोतानी वस्तुओनो उपयोग करवाथी आध्यात्मिक विकासमां आगल वधाय छे. अने गृहस्थनी पासेनी सारी वस्तुओनो ए शिवाय बीजो उंचा प्रकारनो त्रण जगत्मां उपयोग नथी' आवो उंचा प्रकारनो उपयोग करीने भक्ति द्वारा आध्यात्मिक लाभ मेलववानी संधिनो पारमार्थिक लाभ प्राप्त करवा माटे तेम करवानु होय छे. आ वात श्री पूजा पंचाशकमां श्री हरिभद्रसूरिश्वरजी महाराजश्रीए चर्चा करीने अति स्पष्ट करी छे. त्यारे लेखक केवी भाषा वापरे छे ? केम जाणे-के-देव उपर गृहस्थ उपकार करतो होय, या तेमना तरफ बाप के मा दीकरा तरफ प्रेम बतावे, अथवा दीकरो भोग भोगवतो होय, अने मा बाप तेथी वंचित रही जता होय, तेनु दुःख दीकराने उभराई आवतु होय, एवी भाषा वापरवामां आवी छे. आमां जैन विवेक के सभ्यतानो छांटो पण छे ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृष्ठ ७.—"अमो ताजां फलो, मधुर पकवान्नो जमीए, तेम आराध्य देवने चड़ावीए. तो विशेष लाभ थशे." एम विचारीने तेमणे मूर्तिनी आगल ताजां पाकां मीठा फलो अने मधुर पकवान्नो पण चढावबा चालु कर्यां. जलपात्र पण आगल मूकवानुं चालु कर्युं"" विगेरे. आवुं तोछडाई पूर्वकनुं सत्यथी विरुद्ध लखे छे.

पृष्ठ ११.—"अने मूर्ति पूजा के जेने मनुजी जेवाए दारुना पीठानी हीनोपमा आपीने धिक्कारी हती." पूजा पद्धति विषे लखनारने आ हकीकत अहिं लखवानी शी जरूर हती ? मूर्तिपूजाना खंडनना पुस्तकमां लखवानी वस्तु छे.

अहीं—मनुजीनुं वाक्य टांकयुं नथी. तेमणे शुं मूर्तिपूजाने धिक्कारी हती ? के तेनो दुरुपयोग करनाराओनी प्रवृत्तिने धिक्कारी हती ? तो ते पाठ मूकयो होत तो समजी शकात दरेक सारी वस्तुनो दुरुपयोग थतो होय तो तेना उपर टीका करवीज पडती होय छे. परन्तु तो टीका करवानुं मुख्य तात्पर्य शुं छे ? ते आजुबाजुना संदर्भथीज समजाय. एमने एम कोथलामां पांचशेरी मारवाथी शुं वले ?

जैन उपदेशकोए गृहस्थ धर्मिओनी भावनाने पोषण आपवा खातर पोतानी उपदेश धारा कांईक आगल वधारीने उत्सवो अने पर्वोना महत्त्वपूर्ण प्रसंगोने अनुलक्षीने "स्नानोत्सव" नो उपदेश कर्यो.

आवो आध्यात्मिक सरणिना विशाल शास्त्रने छ आवश्यकना एक जातनां व्यवहारु स्वरुपमां केन्द्रित करीने साधको माटे सुलभ आराध्यता व्यवस्थित करी छे. तेमांना चतुर्विंशतिस्तव नामना आवश्यकना—द्रव्यस्तव अने भावस्तव रुप—द्रव्य क्षेत्र—काल अने भाव पात्र वय विगेरेनी अपेक्षाए सेंकडो बल्के हजारोथीए विशेष प्रकारो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांना एक प्रकार तरीके उत्सवो विगेरेनी पण योजनाओने स्थान आपवामां आवेलुं छे. अने ते दरेकनी पाछल वैज्ञानिक आधार, शास्त्रीय पद्धतिनी विचारणा तथा सहेतुक गोठवणोनी विशाल व्यवस्था भरी पडी छे. शुं गृहस्थोनी ए समजवानी ताकात होय छे ? आ विचारणाओ, आ तत्त्व गवेषणाओ महामहा ऋषि मुनिओ विगेरे सिवाय शक्यज नथी. पूर्वधरोनो पण शक्तिनी बहारनुं काम छे. तेथी तेनुं मूल ठेठ सर्वज्ञ वीतराग तीर्थङ्करोपज्ञता सुधी लई जवुं पडे छे. आ सत्य वस्तुस्थिति छे.

परन्तु जैन शास्त्रोना रहस्य जेने हाथमां लाग्या नथी, तेनी आगल आवी वातोनो प्रकाश, ते आंधला आगल आरसी जेवुं थाय. तेमां नवाई शी ? क--ख--ग--घ न जाणनार ग्राम्य खेडुतने कोई जुदा जुदा शब्दोना जुदा जुदा उच्चार करी बतावे तो ते "काला काला मंकोडा" मानी लडवा कदाच उभो न थाय, तो कुतुहल वृत्तिथी बोलनारना म्हों सामे तो जोईज रहे. त्यारे भणेला माणसनी कदर तो ते शी रीते करी शके ?

पृष्ठ १३—"देखनाराओ पोताना जीवनने सफल मानता हता." देखनारा नहीं पण, "दर्शन करनारा" शब्दो लख्या होत तो ठीक गणाय.

पृष्ठ १६—"सर्वोपचारी पूजाना एकंदर १७ भेदो सुविहित कालमांज नियत थई चूकया हता, जेनुं निरुपण जीवाभिगमादि उपांगोमां करायेलुं छे." एम कहीने "तेनो उल्लेख अंग आगमोमां नथी." अने अंग आगमो वखते--१७ भेदी पूजा नियत थई नहोती. एम आडकतरी रीते लेखकनो वांचकोने ठसाववानो आशय छे ते गर्भित राखवामां आवेलो छे. नहींतर, "जीवाभिगमादि उपांग" शब्द न वापरत.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७ भेदी पूजानो उल्लेख उपांगोमां छे, छतां सती द्रौपदीना पूजाना अधिकारमां "जहासुरियाभ" कहीने सुरियाभदेवनी १७ भेदी पूजानी भलामण छद्वा श्री ज्ञाता धर्मकथांगमां स्पष्ट शब्दोथीज करी छे. ए रीते, अंग आगमोमां पण तेनो उल्लेख छेज. ते वात उपर लेखक पडदो नांखवा इच्छे छे. अने खुबी भरेली उपर प्रमाणेनी वाक्य रचना वापरे छे. एटले के—"अंगोनी रचना पछी तेना शरुआत थई अने उपांगोनी रचना सुधी सुविहित काल तो हतो. त्यांसुधीमां नियत पण थई गई." आम कहीने—'ते १७ भेदी पूजा पण अंगोनी रचना पछीज प्रचलित थई छे.' एम कहेवानो लेखकनो उंडे उंडे आशय छे.

परन्तु उपांगोमां—तो देवकृत १७ भेदी पूजानुं वर्णन छे. तेने प्रमाण मानीये, तो—देवोमां १७ भेदी पूजा करवानो प्रचार छे. ते क्यारथी थयो हशे ? एम लेखकने पूछी शकाय; अने जो तेओ जैन शास्त्र उपर श्रद्धा अने विश्वास धरावता होय, अने तेनी प्रामाणिकता हृदयना उंडाणमां होय तो तेने "अनादिकालथी होवानो" जवाब आपवोज पडे, नहींतर पछी मरजीमां आवे, ते गमे ते बोली नांखे ते जुदी वात छे.

पृष्ठ २३—"मारा देवने अमुक द्रव्यो वडे पूजुं." आ तेमना लखाणनी तोछडाईनो नमुनो छे.

पृष्ठ २४—"लोहीनी नदीओ वही छे. निर्दोष मनुष्योना प्राण गया छे." नित्य स्नान-विलेपननोज निषेध सूचवता लखायेली आ पुस्तिकामां आ प्रसंगने स्थानज नहोतुं.

लेखकने आपणे पूछी शकीशुं "धनं त्याज्य छे ? के सदाने माटे उपादेय छे ?" आनो निर्णय एक मते आज सुधी थई शक्यो छे ? अने तेने माटे केटला गणी लोहीनी नदीओ आजसुधीमां चाली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छे ? छतां संत पुरुषोए तेने "हेय" तरीके गणावेल छे. ते वात साची छे ? के खोटी ? ते संतोनुं निराकरण मानवा लायक छे ? के नहीं ? बीजा अज्ञानी जीवो ते न माने, तो पछी पवित्र-विश्व-वत्सल-संतोए करेला निर्णयोने निराकरण विनानाज मानवा ?, तेने मतभेदनी वस्तु मानवी ? ए रीते कोईपण वस्तु निराकरण पामेली छेज नहीं, अज्ञान लोकोना मूर्तिविरुद्ध मानसने उश्केरवाने लखेलां ए वाक्यो केटली भयंकर मनोदशामांथी जन्म्या हशे ? ते वांचको जराक शांतिथी विचार करवा थोभशे. तो जरूर चमकशे.

जिन मूर्तिपूजानोथे उंडे उंडे मनना उंडाणमां केटलो विरोध भर्यो पडयो छे ? तेनी कल्पना कर्या विना ममज्ञ वांचको रही शकशे नहीं.

पृष्ठ २५—"दहेरां बनतां, प्रतिमाओ बनती, कोई गुफाने तोडी फोडी मंदिर बनावी दीधुं. पहाडमांथी मूर्ति खोदी काढी. तीर्थङ्करोना स्मारकसमा—" विगेरे.

"कोई भाविक भक्त आवी जतो. पुष्प मुष्टि चढावी जतो. धूप बत्ती उवेखी जतो." "कोई धन संपन्नने ईच्छा थई कोई उपवनमां, नदीतट उपर के कोई गिरिशिखर उपर सुन्दर चैत्य बनावी दीधुं. सुलाक्षणिक जिनमूर्ति बनावरावी. कोई ऋषि मुनिना हाथे वास क्षेप करावी बेसाडी एटले प्रतिष्ठा थई गई. न नित्य स्नान-विलेपननी चिंता हती, अने न पूजा करनार पगारदार गोठीओनी आवश्यकता." आ आखुये लखाण तोच्छडाई भरेली तद्दन सामान्य सभ्य भाषाना पातला पडदा पाछल केवुं थयेलुं छे ? ते सहृदय वाचको बराबर समजी शके तेम छे.

श्री सम्मेत शिखरजी जेवा वीश प्रभुना निर्वाण कल्याणकनी भूमि, अन्य कल्याणक भूमिओ, श्री शत्रुंजयगिरि जेवा-शाश्वत तीर्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमि, तेना उपरना सहेतुक मंदिरोने–"मात्र गृहस्थनी इच्छा थई, आम थयुं, तेम थयुं, अने आम थई गयुं." आवी भाषामां लखी नांखीने तद्दन नर्जीवो अने महत्त्व विनानी ठरावी देवानी भाषा वापरवामां आवी छे ते पूज्य वस्तुओ माटे अनुचितताना पराकाष्ठा-रूप शुं नथी लागती ? अवश्य लागे छे

चैत्यवंदना जेवी महत्त्वनी ध्यान प्रक्रिया साथे संबंध धरा-वती मंदिर जेवी प्रसिद्ध संस्था माटेना वपरायेला शब्दो उपर कांई-पण वधारे लखवुं, त ते तोछडाईनेज महत्त्व आपवा बराबर थई जवानो भय रहे छे.

"सुलाक्षणिक जिन मूर्ति" शब्दमां मात्र कलाप्रियतानोज ध्वनि व्यक्त थाय छे. गुफाओ अने पहाडमांथी मंदिर अने मूर्ति उभा कर-वामां–सविशेष कला बतावी ते खरी रीते तो ते बनावनाराओनो तो भक्ति बताववानो हेतु हतो. बीजा नगर विगेरेना मंदिरो तरफनो उदासीनता अणगमो के ते करवानी अशक्तिमांथी गुफादिकनो जन्म नहोतो थयो.

"वासक्षेप करावी बेसाडी." आ शब्दो पण हेतुपूर्वक लखवामां आव्या छे. तेमां पंचकल्याणादिकमय विस्तृत **अंजनशलाका-प्रतिष्ठा** विधि उपर गर्भित कटाक्ष छे. परन्तु, एम तो–संक्षेपमां वासक्षेप विना पण मानसिक-मनमां प्रभुनी प्रतिष्ठा करीने तेनां प्रतिमाजी उपर आरोप करवाथो पण प्रतिष्ठा थई जाय छे. एटला उपरथी विस्तृत, अति विस्तृत, मध्यम विगेरे प्रकारना विधानोनो अविधेयता साबित थई शकती नथी. नहींतर नवकार मंत्रना स्मरण मात्रथी मोक्ष मली जतो होवाथी, क्रोड क्रोड पूर्वो सुधीना अने भवांतरो सुधीना दीक्षा पालनना शास्त्रीय विधानो व्यर्थ जाय. परन्तु तेम थतुं नथी दरेकने सुविहित आज्ञा तरीकेनुं स्थान छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु, गमे तेम कलम चलाववी होय, तेने शुं कही शकाय ? "दीधुं" "थई गई" विगेरे शब्दो "गलचवा" जेवी भाषानी तोच्छडाई स्पष्ट पणेज सूचवी दे छे.

पृष्ठ २६ "भरत चक्रवर्तिनी इच्छा थई" "अग्नि संस्कार स्थान पर सिंह–निषधा चैत्य बनावी दीधुं."

"चिर स्थायी स्मारक बनावी पोतानुं कर्तव्य पूरूं कर्युं."

"कोई देव के विद्याधर आवी पहोंचतो अने ईच्छा थती तो यथेच्छ भक्ति करी लेतो, नहीं तो दर्शन तो करतोज अने भरतनी पितृभक्ति अने जिनभक्तिने संबंधे बे शब्द बोलतोज."

आ आखो पेरेग्राफ घणी विचारणा अने घणीज कडक टीकाने पात्र छे. ने ते विषेना घणा पूरावा आपीने लंबाणथी लखवुं जोईए. परन्तु अहीं तेने माटे अवकाश नथी छतां टुंकामां जरूरी निर्देश करवामां आवे छे.

"अग्नि संस्कार स्थानपर" ए शब्दो एक आधुनिकता प्रिय पंडिते "चैत्य एटले चिता उपरनुं स्थान" एवो अर्थ करीने मोटुं पण खोटुं भाष्य रच्युं छे. जेनुं खोटापणुं पंडित हंसराजजीए साबित करी आप्युं छे. ते पंडितनी ए खोटी वातने गर्भित रीते टेको आपवा ए शब्दो लख्या छे. नहींतर, त्रण चिता उपर देवोए त्रण स्तूपोकरवानी वात शास्त्रमां छे. स्तूपो उपर सिंह निषधा प्रासाद केम करी शकाय ? छतां ए वात लेखके कया आधुनिक के प्राचीन इतिहासने आधारे लखी छे ? ते जणाववुं जोईए. परन्तु मात्र कल्पनानो घोडोज दोडाव्यो छे. सिंहनिषधा प्रासाद के मंदिर शब्दने बदले चैत्य शब्दनो उपयोग पण एज गर्भित हेतुथी करवामां आव्यो छे. अष्टापदजी उपर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभुनुं निर्वाण अने त्यां **सिंहनिषधा** प्रासाद,एटला उपरथी चिता उपर ते रचावानी कल्पना खडी करी दीधी. खरी रीते तेम करवानो कोई आधार नथी. जो मात्र ते स्मारकज हतुं अने भक्तिस्थान नहोतुं, तो मरिचि मुनिने भावि २४ मा तीर्थङ्कर श्री वर्धमान स्वामि मानीने वंदन शी माटे कर्युं ? देव के विद्याधर भक्ति करतो तो भरतने भक्ति करवामां शो वांधो हतो ? वली देव के विद्याधर शी रीते भक्ति करतो हतो ? बाहुबलीजीए पूजानी सामग्रीथी प्रभुना चरणस्थाननी पूजा करी, तो शुं भरतचक्री ते शिख्या नहोता ? अने तेमने पूजारी नहीं मल्या होय ? भरतचक्रवर्तिए पण अष्टापदजी उपर जिन प्रतिमाजीओनी द्रव्यपूजा कर्यानां शास्त्रमां प्रमाणो छे. परन्तु, शास्त्रोने प्रमाण मानी लखायेला पुस्तकना लेखकनी साथे वात थई शके ने ? अने तेने प्रमाण माननारनी आ रीते कलम चालेज नहीं.

भरत चक्रवर्तिए मात्र स्मारक तरीके अष्टापद उपर सिंह निषधा प्रासाद बनाव्यो नहोतो. परन्तु जिनेश्वर देवनी भक्ति करीने आत्म कल्याण साधवानो पण हेतु हतो. तेमणे त्यां विधिपूर्वक पूजा कर्यानो उल्लेख **श्री महापुरुष चरित** नामना पूर्वाचार्य महाराज विरचित प्रसिद्ध ग्रंथमांनी त्रण गाथा नीचे प्रमाणे छे:—

सक्कसहायो राया सुमेरुसिहरेव्व कणय-कलसेहिं ।
अहिसिंचिउं सयं चिय हरिचंदणचच्चए देई ॥ ४ ॥
पुप्फोपयाय—बलि—धूवचंदणं देवरायजोए वि ।
विम्हइओ चिरो एं थूहा सेलो विभावेति ॥ ५ ॥

अन्यत्राऽप्युक्तम्—

पडिमाउ तत्थ तेसिं पइट्ठिआ एहवणभाई-सक्कारं ।
पूयंतकयपणामा भत्तीइ स-परियणो भरहो ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थः--शक्रेन्द्र साथे राजाए सुमेरु पर्वत उपर जेम अभिषेक करवामां आवे, तेम सोनाना कलशो वडे पोताना हाथेज अभिषेक करीने हरिचंदननो विलेपन करे. ४. पुष्पोपचार, नैवेद्य, धूप, चंदन देवना राजानी साथे चित्तमां विस्मित थाय छे. स्तूपोथी पर्वत केवो शोभे छे. विगेरे आगलनी गाथामां छे.

बीजा शास्त्र ग्रंथनी पण साक्षी छे केः—

"त्यां तेओना प्रतिमाजी प्रतिष्ठित कर्या. स्नपनादिक सत्कार पूर्वक अने पूजाने अंते परिवार सहित भरत महाराजाए भक्तिपूर्वक प्रणाम कर्यो हतो. ८.

आ पाठो उपरथी स्पष्ट थाय छे, के ते प्रसाद विगेरे मात्र स्मारकोज नहोता परन्तु खास भक्तिना स्थानो हता.

पृष्ठ २७.—"आजनी पद्धतिमां कृत्रिमताना बंधनो छे" "फरज-कर्तव्योनी कडीओ संकलायेली छे" विगेरे.

एवी कई धर्मक्रिया छे ? के जेमां बंधन नथी ? ने जेमां फरज अने कर्तव्यनी कडी संकलायेली नथी ? मुनि जीवनमाटे पण एमज ? के नहीं ? अनेक प्रकारनी धार्मिक प्रक्रियाओनी योजनाओज भावनाओना मुक्त विहारनी योजनाओ छे. सांसारिकताथी दूर राखवा धर्मना बंधनो तो मोक्षमार्गमां अनिवार्यज छे. "आजनी पद्धति" शब्दनो उपयोगज खोटो छे. कोई पद्धति आजनी नथी. पूर्वापरथी चाली आवे छे. व्यक्तिओना दोष ससजावटथी दूर करी शकाय तेम होय छे. आवा आडा अवला साहित्य बहार पाडी डहोलाण उभु करवाने बदले योग्य मार्गे उपदेश आपी व्यक्तिओनी खामी दूर करी, शास्त्रकार भगवंतोना उमदा उद्देशोनी सफलता वधारे सारी रीते करी—करावी शकाय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृष्ठ ३३.—"श्री शांतिसूरिने सर्वोपचारी पूजामां लखवु' पडयु', के"—"नीचेनी युक्तिओथी दबावो दीधो."

आमां—"लखवु' पडयु'" शी रीते? पूर्वाचार्योथी परंपरागत चाली आवती वात तेओश्रीए लखी छे. तथा एमां युक्ति पण शी? अने दबावी देवानी वात पण शी? परंपरागत विधानो अने दलीलोथी कोईपण शास्त्रीय बाबतने समृद्ध करवामां आवे, तेना उपर आ रीते टीप्पण करवु' योग्य नथी. पोतानी मान्यतानी दृष्टिने सामे राखीने पूर्वपुरुषो उपर विना कारण टीका टीप्पणनो खोटो मारो चलाववो ते योग्य नथी.

पृष्ठ ३४.—"नित्य स्नानना प्रचार कालने अंते संदर्भित"—"विकृति करी दीधी" "कूट ग्रंथ" आमांना दरेक शब्दो तद्दन नकामा अने जुठाणांथी भरेला छे. श्री संबोध प्रकरणकार आचार्य लेखकना संकोचित अने अशास्त्रीय मतथी जुदा पडता होवाथी, ते ग्रंथने कूट-ग्रंथ कहेवामां लेखकनी कलमने संकोच नथी थयो, ते खेदनो विषय छे. बाजुना टीप्पणो के—बाजुमां हांसीयामां टांकेली गाथाओ संदर्भमां कोई कदाच भली गई होय. एटला उपरथी आवा ग्रंथने कूट ग्रन्थ कहेतां संकोच थयो नथी. खरी रीते-लेखकने पण विदेशीयोनी जेम भारतनु' साहित्य मोटे भागे-जंगलीपणाथी बदबदतो व्हेम-कुरुढिमय-देखाय. अप्रमाणिक अने कूट ग्रंथ रुपे देखाय, ए स्वाभाविक छे.

"आम नित्यस्नानना सर्वतोमुखी प्रचारने परिणामे नित्य स्नान विलेपननो प्रचार सार्वत्रिक थई गयो."

तेमां कया गच्छवालाओनो विरोध केवी रीते हतो? तेना प्रमाणो, पाठो, हेतुओ, कारणो साथे बताववानी जरूर हती. कारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के वस्तुस्थिति कांई जुदी होय छे. अने लेखक जुदीज रीते घटावे छे. जेना घणा प्रमाणो अमे आपता आव्या छीए, एमनी आ एक विचित्र रीत छे. प्रतिष्ठा पछीना महोत्सवनी वातने नित्य स्नान विलेपननो अभाव साबित करवामां केवो उपयोग कर्यो ?

जिनपूजा माटेना चैत्यो आधाकर्मिक न होवानी सुविहितोनीज चर्चाने चैत्यवासीओना सामेनी चर्चा तरीके ठरावी देवामां आवी छे.

क० का० स० श्री हेमचन्द्राचार्य महाराजनुं वचन–पुष्पामीष स्तोत्रे० उपलक्षणात्मक शब्दोथी अंगअग्र अने भावपूजानी पूर्वाचार्योना अभिप्राय प्रमाणेज बतावी छे. अने टीकामां पण जे कांई लख्युं छे ते पोताना घरनुं लख्युं नथी. परन्तु पूर्वाचार्य महाराजाओना अभिप्रायनेज अनुसर्या छे. जे विषे अमे प्रथम लेखांकमां स्पष्ट करी चूकया छीए.

पृ० ३५.—"गृहदेवालयोनी उठांतरी"

"उपदेशकोने पोताना उपदेशनी सफलता थतां आनंद थयो."

"श्रीमंत श्रावकोने जिनभक्तिमां तन-धन खर्चवानो मार्ग जडयो."

"मार्ग भारे पडयो."

नित्य प्रतिमाओ न्हवरावची, नित्य चंदन घसवा, नित्य प्रतिमाना परिकरमां पाणी के चंदनादि न रहे तेनी चिंता."

शुं एकला पुष्प चडाववाथी अंगपूजा थती हती ? पुष्प शब्दना उपलक्षणथी अंगपूजामां बीजा द्रव्यो लेवाना नथीज ? उपलक्षण रूप ए शब्दोने राखवामां आवेल छे, ते न स्वीकारीये, तो धूप–आंगी विगेरे पूजा क्यांथी काढवी ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतना लोको पासे मशीनो नहोता. घरना तमाम कामो हाथेथी करता हता अने कंटालता नहोता. रोज रसोई करवी, वासण मांजवा, अने पाणी भरवुं, खेती करवी. रोजना कामोमां चिंता शी हती ? ते प्रमाणे प्रभुभक्ति निमित्ते वैयावृत्य अने विनयदृष्टिथी करवामां चिंतानी वातने स्थानज क्यां रहे छे ? उंटनां शिंगडा कल्पीने पछी तेने भांगी नांखवानी वात जेवी वात छे.

जैनोनी वसति न होय, त्यां तो दरेक काले ते वस्तु रहेवानीज छे छतां कोई ठेकाणे संजोग विशेषमां पूजा न पण थाय तेथी सर्वत्र एम मानी लेवुं ? अने एटला उपरथी शुं विधानो उडावी देवा ?

परन्तु आजे गमे तेम अभिप्राय आपवामां अने गमे तेम लखी मारवामां के गमे तेम अर्थ मरडवामां क्यां वार लागे तेम छे ? घर दहेरासरो तथा परिकरो ओछा थवाना खास कारणो तो विदेशीयो अने विधर्मीओना हुमला, व्यापार धंधाओनी उत्थलपात्थल अने स्थलांतरमां गमन, स्थानिक धंधाओनुं तुटवुं, नवा स्थलोमां धर्मने बदले हालना भौतिकवादना प्रतीकोना प्रचारने उत्तेजन आपवानी हवा, अने धर्मने माटे तो मात्र कामचलाउ अने नामनुंज स्थान विगेरे छे.

आवा बहारथी आवी पडेला कारणोने लीधे थयेला नुकशानोनो आरोप शुं नित्यस्नान विलेपन पूजा उपर ? अने तेना उपरथी जुनी अने नवी पूजा अने नवी पूजा पद्धति होवानी परिभाषा उभी करी देवानुं साहास करवुं ते शुं व्याजबी छे ?

संजोग विशेषमां कोई वात अशक्य बनी जाय तेनो आरोप शुं धार्मिक विधानो उपर ? आजे वेजीटेबल घी अने पाउडरना दूधने बदले चोखा घी अने दूध प्राप्त थवा अशक्य बनी गया, तेनो आरोप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पण नित्य-स्नान विलेपन अने मंदिरमांना घीना दीया उपर लई जवामां नथी मूकयो ते लेखक माटे आश्चर्य थाय छे.

पृ. ३६ 'पगारदार गोठीओ राखवानी आवश्यकता उभी थई, खर्च वध्यो.'

परन्तु पगारनी पद्धतिनी शरूआत खास करीने युरोपीयनना संपर्क पछी थयेली छे ते पहेलां पगारनी पद्धति नहोती. चडावामांथी कांई मली रहे. तेओना कुटुम्बनो खर्च ओछो हतो. मेवाडमां एक मजुरनो मासिक खर्च रु. १५ लगभगनो हतो. मंदिरोमां पूजारीओ राखवानी पद्धति बहुज प्राचीन कालनी होवाना दाखला छे. परन्तु देवद्रव्य, तेनी वृद्धि, तेना उपयोग विगेरे विषे पोतानी ईच्छा प्रमाणेना केटलाक कटाक्षो साथे साथे करी लेवाना होवाथी आ वात आ रीते मूकी छे.

'इन्द्रमालोद्‌घाटन आदिनी उछामणीओनो प्रचार थयो ने जेम तेम खर्च नभवा लाग्या.'

"दहेरासरनी आर्थिक स्थिति सुधारवा माटे एकवीश प्रकारी पूजानी योजना करी,"

आ बधी कल्पनाओ पोताना मनथी उभी करवामां आवी छे एम स्पष्ट जोई शकाय छे.

देवद्रव्यादिक द्रव्योना भक्षणादिथी नरकादिक दुर्गति थवाना वर्णनो युक्त केटलीये चोवीशीयो पूर्वनी शास्त्रोक्त प्राचीन कथाओ उपरथी देवादिद्रव्योनी वृद्धि विगेरे जैनशासननी मूलभूत बाबतोमांनी वस्तु होवा छतां, तेने कोई विचित्र रीते घटाववामां आवेल छे. धार्मिक संपत्तिओ धर्म पुरुषार्थना मुख्य अंगोमांनुं मुख्य अंग छे. ते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विना पण धर्मशासनमां घणी अगवडो पडे; माटे ज्यारथी धर्म, धर्मशासन त्यारथीज धार्मिक संपत्तिओनुं अस्तित्व छे; आ तेनो खरो इतिहास समजवानो छे.

पोतानी कल्पनाओमां आडे आवती गमे तेवी महत्त्वनी वस्तुनो पण केवो रीते विरोध करवामां आवे छे, ते पण आ लेखकनी एक चमत्कारिक रीत जोवा जेवी छे पूर्व पुरुषोए प्रामाणिक तरीके स्वीकारेला श्री उमास्वाति महाराजना पूजा प्रकरणने अप्रमाणिक ठरावत्रा सुधी पहोंची जवामां लेखक जरा पण संकोच अनुभवता नथी. ते प्रकरणमां सदैव कोशवृद्धि अने कुमतिभिः, ए त्रण शब्दोनो प्रयोग तेमने खटकयो छे. सदैव शब्द रोजनी स्नपनादि पूजाने टेको आपे छे. कोशवृद्धि शब्द–देवद्रव्यनी वृद्धिने रोजनी पूजामां स्थान आपे छे. तेने आ लेखक केम चलावी शके? तेथो प्रकरण अने प्रकरणकार उपर पोतानो रोप ठालवे छे. कुमति शब्दना प्रयोगने आधारे प्रकरणकारश्रीने क्षुल्लक हृदयीनुं बिरुद आपी दई अर्वाचीनतामां लावीने पटके छे.

पोताने अनिष्ट बाबतोने अप्रमाणिक अने घुसी गयेली ठरावत्राना लेखक पासे घणा वणा साधनो छे. आ पुस्तिका परत्वे पण–प्राचीन वस्तु होय तेने—"पौराणिक कालनो असर", मध्यमकालीन जणाय तो 'चैत्यवासनी असर', थोडाक सैका पहेलांनी जणाय तो 'यतिओनी असर' गणावी तेओ उपर दोष ढोली नांखतां वार लगाडवामां आवती नथी. छेवटे 'शास्त्रोमां घालमेल', 'अन्य धर्मोनी असर' अथवा कोईनुं अनुकरण, 'सुविहितो उपर पण जनतानो असर' इत्यादि कल्पनाओ खडा करवामां जरापण संकोच अनुभवातो नथो.

श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजा जेवा आजकाल समभावी अने उदार गणाता आचार्यश्रीए पण जिनपूजामां हिंसानी कल्पना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठावता जीवो माटे मुग्धमति शब्द वापरेलो छे लेखकना मते तेमने पण ज्ञुल्लकहृदयी केम न कहेवा ?

सदैव जिनपूजाना विधानो श्री महानिशिथादि सूत्रोना पाठोथी प्रामाणिक छे छतां लेखकने खटके छे.

कोश वृद्धि ए तो जैन धर्मना सात क्षेत्रमां अनिवार्य रीते समावेश पामेल छे अने नयसापेक्ष रीते तेनी पूजा प्रकारना पण अव्याहत छे जिनमदिरमां कलाविधान पण प्रभुनी एक प्रकारनी पूजा छे. सारा कपडां पहेरीने दर्शन करवा जवुं, जिनपूजा माटे स्नानादिक पण एक प्रकारे प्रभुनी पूजा छे. नयज्ञान विना जैन शास्त्रोक्तनी नानामां नानी बाबत उपर पण लखवानो अधिकार प्राप्त थतो नथी.

परन्तु "जिनपूजा पद्धतिनी उत्पत्ति" "तेनो मानी लांधेलो विकास' 'विकासनी टोच' 'विकृति' 'नीचे गबडवुं', अने 'अनिष्ट परिणामो' आम कल्पो राखेला चोकठांमां आखी जिन भक्तिने गोठवी देवानुं लेखकनुं लक्ष्य होवाथी जे रीते शास्त्रकारोए उपदेशी छे तेनी उपेक्षा करी गमे तेम कल्पना दोडाववामां पोतानोज प्रमाणिकता शी रीते जलवाय छे ? तेज प्रथम तो विचारवानी जरुर हतीं.

पृ. ३८–३९–४० -जुदा जुदा अंगोनी पूजानुं मूल श्री ऋषभदेव प्रभुना चरणने अंगुठे जलाभिषेक युगलिकोए कर्यो हतो. ते उपरथी शरीरना विशिष्ट अंगोनी पूजा कोई वैज्ञानिक हेतुसर सिद्ध थाय छे. तथा योग–प्रक्रियामां जुदा जुदा अंगोमां जुदा जुदा चक्रो गणाव्या छे जे मर्म स्थानरुप होय छे अथवा ज्ञान तंतुओना धन–जथारुप होय छे. जेमा ब्रह्मरन्ध्र, ललाट, कंठ, वक्षस्थल, नाभि विगेरेनो शरीरमां तथा शाखारुप अंगोमां चरणना अंगुठाथी मांडीने जानुं, हाथना कांडा, खभानो समावेश थाय छे. आम स्वाभाविक रीते नव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंग गोठवाई जाय छे. पूजक चरणने अंगुठेथी पूजा शरु करतो करतो नाभि सुधी पहोंचे छे. नाभि ए शरीररुपी फलनुं मूल-डींट छे. ज्यांथी आखा शरीरनो उद्भव थाय छे, अने ते सर्व शरीर यंत्रनुं मूल केन्द्र छे, मध्यबिंदु छे. नाना मोटा सर्व अवयवोनुं प्रसरण सीधी के आडकतरी रीते ज्यांथी थाय छे. त्यां आवीने अंग पूजा विराम पामे छे. पूजक पूज्य करतां अपकृष्ट होवाथी चरण अंगुठेथी पूजा करतो नाभि सुधी पहोंचे छे. आवी कोई वैज्ञानिक आधारशिला उपर अंगपूजानी रचना होय, तो ते कल्पनाथी ठरावायेली केम कही शकाय ?

एम तो-वडीलोने पगे लागवानो-चरणमां नमवानो मानव सभ्यतानी शरुआतथीज रिवाज छे. ते पण एक अंगनोज सत्कार छे. ते पण पाछलथी शरु थयो हशे ? बधाए अंग पकडीने केम न नमवुं ? आवी पण कोई कल्पना उभी करे, तो तेने शो जवाब आपी शकाय ? परन्तु एक अंगे नमवाथी एक अंगनी पूजा समस्त अंगनी पूजा गणाय छे, तेथी समग्र अंगने नमस्कार थाय छे. अथवा अंदरना पवित्र-आत्माने अंदरनी पूज्यतारुप भाव गुणने पण नमस्कार थाय छे-पूजा थाय छे. ए पंचाशक ७ मानी गाथा उपरथी समजी शकाय छे. जे गाथा त्रीजा लेखांकमां आपवामां आवेली छे. पूज्यना चरण जेवा निष्कृष्ट अंगने पण नमीने पूजक पोतानी अत्यन्त नम्रता-निष्कृष्टता बतावी शके छे.

आवी घणी बाबतो वैज्ञानिक आधार उपर युगोना युगोथी प्रचलित होय छे. तेथी घणी घणी बाबतोना शास्त्रीय पाठो लुप्तप्राय होय तेथी न पण मले. एटला उपरथी अमुक बाबतने अमुक वखतथी शरु थई होवानुं जणाववुं भारतने माटे घणुं मुश्केल काम छे. भारतनी शोधो पण हजी उपर उपरथीज थई छे घणा घणा थरो खोदाशे त्यारे घणी घणी अवनवी बाबतो जाणवामां आवशे त्यारे भारतनी महा आर्य प्रजाना जीवनना गूढ, गूढतर-तप रहस्यो उके-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाशे. मात्र जुदा जुदा प्रकारो उपरथी मतभेदो मानी लेवा ए भारतने न समजनारा तेना रहस्योथी अपरिचित विदेशीय लेखकोनी माफक भारतवासीओ पण भारतने खोटी रीते समजता थाय छे. ते केटलुं बधुं हानिकारक छे ? लेखक शुं लखे छे ? वांचो—

'ज्यां नवी व्यवस्था थाय त्यां आवा प्रकारना मतभेदो स्वाभाविकज होय छे.' एम कही प्रचलित धार्मिक प्रवृत्तिओ उपर एक वधु कटाक्ष करी लेवानी तक साधी लेवाय छे ? केटली बधी विचित्रता ?

पृष्ठ ४० थी ४३ मा पृष्ठ सुधीना त्रण अवस्थानी भावना विषे तथा अंग पूजा विषे २ जा लेखांकमां विस्तारथी आपी गया छीए.

पृ० ४४—श्री आचारोपदेश ग्रंथमांनो पाठ पण कोई एक अपेक्षानी अष्ट प्रकारी पूजा छे. तेथी ते बीजा कोईपण प्रकारनो विरोध करे छे, एम कहेवुं बराबर नथी. चैत्य वंदन महाभाष्यमां अंग पूजाना आठ प्रकारोमां स्नान–विलेपनने गणावेल छे. तेने शी रीते संगत करी शकाशे ? खरी रीते लेखकनी आवी कल्पनाओ निराधार छे. कांईक व्हानुं मली जतां कागनो वाघ करी देवामां आवे छे, ज्यारे बीजी तरफ प्रत्यक्ष अने स्पष्ट हकीकतो होय, तेनी उपेक्षा करवामां आवे छे. अने वस्तु स्थितिने मरडवानी अनेक युक्ति प्रयुक्तिओ करवामां आवे छे. जिनप्रतिमा अने तेनी पूजामां न माननारा संप्रदायने चैत्य शब्दना ज्ञान–साधु–के चिता संबंधी एवा अर्थ करतां जरापण अचकाय छे ?

नग्नपणामांज जैन साधुपणुं स्थापन करवा जतां केटलो बधो फेरफार करवो पडयो ? आगमोनेज लुप्त मानवा पडया. कारणके प्रस्तुत आगमोमां–ठाम ठाम स्त्री दीक्षा, मुनिना कल्पोमां वस्त्रादि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रहण विधि भिक्खु वा भिक्खुणी वा शब्दो सूत्रोमां वारंवार आवे, एटले केटलेक ठेकाणे फेरफार करी शकाय ? केटलेक ठेकाणे प्रक्षिप्त भाग मानी शकाय ? एटले आखा आगमोनेज लुप्त मानवा सिवाय बीजो उपाय नहोतोज, अने लुप्त मानवा छतां तेना आधार उपरथीज जरूरी वस्तुओ लईने आखी नवीन शास्त्रसृष्टि खडी करवी पडी. ते प्रमाणे प्रस्तुत पुस्तिकाना लेखकने पण अनेक उथल पाथलोमां पडवुं पडेल छे, छतां पोताना प्रयासमां सफलता प्राप्त करी शकेल नथी.

पृष्ठ ४५—आभरण विधि पण पर्वगतज हतो. ए पण लेखकनी कल्पना छे. शास्त्रोमां नित्य आभरणनो निषेध नथी. श्री पंचाशकजीमां नित्यपूजामां पण तेने स्पष्ट स्थान अपायेलुं छे, ते बीना पहेला लेखांकमां सारी रीते जोई शकाय तेम छे. श्री आगमोमां देवोनी १७ भेदी पूजामां पण आभरण पूजाने स्थान छे. देवो नित्य पूजा नथी करताज ए पण लेखकनी कल्पना छे. केई देव नित्य पूजा न पण करता होय, तेथी सर्वने माटे एम कहेवाय नहीं. उत्तम साधुपणुं पालीने देवलोकमां गयेला सम्यग्दर्शनी देवथी जिनपूजा कर्या विना रहेवायज केम ? आभरण पूजा—ए संक्षेपमां—त्रिभुवन पूज्यता—ख्यापन माटेना प्रतीक समान पण छे. जेथी बाल जीवोनी सामे परमात्मान्भगवान् रुपे त्रिभुवन पूज्य रुपे—घणुज मोटा—ठाठमाठथी भरपूर देखाय. राजा महाराजाओनी अने शेठ साहुकारोथी पण बाल जीवोनी नजरे बहु मोटा देखाय. एम दर्शन शुद्धिनुं आध्यात्मिक निमित्तनो पण आभरण पूजामां संकेत छे. श्री भक्तामर विगेरे स्तोत्रोमां—प्रतिहार्यादिक शोभाना वर्णनो एवीज भव्यताथी वर्णववामां आवेला छे. पछी जेम जेम भक्त विज्ञ थतो जाय तेम तेम—मुनिपणुं, पछी वीतरागपणुं, पछी सर्वज्ञपणुं बराबर समजी शके छे. एटला माटे जुदा जुदा पात्र जीवोनी अपेक्षाए सर्व अवस्थाओनी भावना करी शकाय, तथा कोई सर्व अवस्थाओनी पण भावना करी शके,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेवा प्रतीको प्रतिमाजोना निर्माणमां पूजाना व्यक्तिगत अने सर्व सामान्य माटेना तथा श्री संघने जालववाना पूजा भक्तिना प्रकारोमां व्यवस्था राखवामां आवी होय छे. जिनप्रतिमा पूजानु नयसापेक्ष विज्ञान एटलु बधु अद्भूत छे के—जेना उपर ग्रंथोना ग्रंथो लखी शकाय. कला-विज्ञान. अध्यात्म शिक्षण खानगी अने जाहर कार्यक्रम एक संस्था अने तेनी मर्यादा विगेरे हजारो दृष्टि-बिंदुओथी तेना उपर बहुज व्यवस्थित रीते लखी शकाय तेम छे. आम छतां -लेखक लखे छे. के—"आमरण विधिनो प्रचार पण अतिशय वध्यो." "प्रत्येक मूर्तिने माटे चांदीनी आंगीओ होवीज जोईए. मूलनायक त्रिगडाने तो डबल. एक हंमेशानी ! एक वारे तहेवारे पहेराववानी ! भले, आ अंगीओना घसाराथी प्रतिमाओ घसाय, खंडित थाय. घरफाडु लुंटाराने हाथे चढे, अने मूसमां गलाय, पण आंगी तो हमेश जोइएज."

आ रीते जे कांई नुकशान थतु होय ते बाबत विवेक जालववा सामे तो कोनो वांधो होय ? दरेक बाबतमां विवेक अने सावचेतीओने जरूर अवकाश छे. अने विधिना उपदेशमां तेनी भलामणोनो समावेश थाय छे. परन्तु शु पर्वो दिवसोमांज आंगा चडाववामां आवे, तो शु तेने लुंटी जनारा नहीं मले ? शु ते दागीना मूसमां नहीं गले ?

परन्तु आटली बधी अतिशयोक्ति भरी कल्पनाओं करीने लेखके जे भाषा आ प्रसगे वापरी छे. ते कोईपण धार्मिक हृदयने कर्ण कटु अने सभ्यता रहित तोच्छडाई भरी जणाई आवे तेम छे ? अने तेनो अंदर रोजनी आभरण पूजा उपर केवा अद्भुत कटाक्षो करवामां आव्या छे. परन्तु खरी वातज ए छे के लेखकने तेना उपर जणावेला महत्त्वना आध्यात्मिक हेतुओज समजाया नथी.

दिगंबर संप्रदायना केटलाक लेखको श्री मल्लिनाथ प्रभुना स्त्रीपणानो निषेध जणाववा माटे **रजस्वलापणानी** कल्पनाओ करीने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पोताना मंतव्योनी श्रेष्ठता अने सामा पक्षना मंतव्यनी कनिष्ठता बतावी आपवा सुधी पहोंची जाय छे. परन्तु तीर्थङ्कर प्रभुना अतिशयोनो तो तेमने ख्याल आवे तो एवी कल्पना करवानी हिम्मत न ज करी शके. परन्तु सामान्य समजना लेखक पासेथी एवी आशा न राखी शकाय. ते प्रमाणे आ लेखक पण एवीज कल्पनाओ तरफ दोरवाई जाय छे. ते वांचकोना ख्यालमां बराबर आवी गयुं हशेज.

विधवा विवाहनी हिमायत करनारा बालविधवाने आगल करीने पोतानी दलीलो करीने कडकमां कडक टीका करता हता, अने साथे साथे एवी दलील पण करता हता, के—'अमे प्रौढ विधवाना पुनर्लग्न विषे भलामण करीए छीए एम समजवानुं नथी.' परन्तु छुटाछेडानो कायदो थयो (के जे विधवाना पुनर्लग्न करतां घणी आगल वधी गयेली बाबत गणाय) तेनो कोई बालविधवाना पुनर्लग्ननी हिमायत करनाराओए विरोध न कर्यो एटले लेखक लखे छे के आथी अमे आभरण पूजानो के आंगी पूजानो विरोध करीए छीए, एम समजवानुं नथी विगेरे. परन्तु तेमना मानसमां साम्यवादना प्रचारना झांखा झांखा किरणो घुसेला छे, ते अमो प्रथम जणावी गया छीए. अने तेथी उपरना बचावोमां कांईक भय अने अने लुलापणुं छे. वास्तविक रीते-आभरण पूजा उपर पण टंडे टंडे अणगमो छे. ते पाछलना तेमना लखाण उपरथी पण सारी रीते समजी शकाय तेम छे.

पृष्ठ ४५—"चक्खु=चक्खु" शब्दने बदले 'वत्थु' शब्द होवो जोईए. अने 'वत्थु' पण 'वत्थ' शब्दनुं रुपान्तर लहीयाओनी भूलथी थई गयुं होय. आ कल्पना पण कोई बलवान कल्पना नथी जणाती. कारणके—'चक्खु जुअल' शब्द युक्त प्राचीन गाथाओ होवानुं लेखक पोतेज कबुल करे छे. अने-वत्थ उपरथी वत्थु, वत्थु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपरथी चक्खु ए वस्तुने पूर्वाचार्यो स्वीकारी ले ए संभवित बनवुं शक्य नथी. एटला तेओ अज्ञान नहोता. बंनेय वस्तुओ परंपरागत चाली आवती होवाना प्रमाणोने आधारेज तेओए ए प्रमाणे प्रचार कर्यो होवानुं मानवुं ए वधारे संगत छे.

जुदा जुदा रंगना प्रतिमाजी माटे-सर्वने समान एवा चक्षुनुं विधान-प्रतिमा निर्माणमांथी शी रीते प्राप्त करी शकाय ? शरीरनो रंग गमे तेवो होय, परन्तु सामान्य रीते मनुष्योनी चक्षुओ-आजुबाजु धोली होली अने वच्चे काली कीकी ए जातनी मुख्य कुदरती रचना मानवोना चक्षु माटे छे. एज प्रमाणे प्रतिमाजी जो श्याम होय तो चक्षु माटे वच्चे श्यामता कायम राखीने आजुबाजु सफेद भाग करवामां न आवे, तो चक्षुनुं स्वरुप बने नहीं. जो प्रतिमाजी महाराज सफेद होय तो आजुबाजु सफेद रंग कायम रहेवा दईने वच्चे कीकी काली बतावया माटे कालाश करवी ज जोईए. तोज चक्षु अंग बराबर जणाई आवे, सिवाय ते अंग बराबर जणाय नहिं.

वली, चक्षु ए आकर्षक अंग छे. भक्तोने एवो भास थवो जोईए के प्रशांत कृपा भरेली दृष्टिथी भगवान आपणी सामे जोई रह्या छे. तेथी भगवाननी चक्षु खुल्ली होय, तोज दर्शनकारोने भक्ति सविशेष जागे.

तथा समवसरणमां त्रिभुवननाथ ए रीते खुल्ली दृष्टिथी देशना देता होय छे. जाज्वल्यमान रीते बिराजमान होय छे. ते वखते ध्यानस्थ अवस्थामां नथी होता. शास्त्रमां पण ते वखते ध्यान अवस्था नहीं, परन्तु ध्यानान्तरिका अवस्था होवानुं जणावेल छे.

कारण के-शुक्ल ध्याननो बीजो पायो १२ मा गुणस्थानके समाप्त थाय छे. अने त्रीजो पायो १३ मा गुणस्थानकने अंते छेल्ला अंतर्मुहूर्तथी शरु थाय छे. चोथो पायो चौदमे गुणस्थानकेज होय छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेथी १३ मा गुणस्थानके छेल्ला अंतर्मुहुर्त शिवाय ध्यानान्तरिका होय छे. जेथी ध्यानस्थ अवस्था नहीं, परन्तु खुल्ला चक्षुधारी अवस्था व्याजबी ठरे छे. समवसरणमां तो ए अवस्था वधारे उचित छे.

चक्षु केवा चढाववा ? तथा तेनु' कलाविधान केवु' जोईए ? ते वातमां विचार करवो भले उचित होय. परन्तु शरीरथी आ प्रधान अंगनु' जुदापणु' बताववा जुदी रीते चक्षुनु' निर्माण ए प्रतिमा-विधानमां एक महत्वनी बाबत होय, तेमां अमने जरापण शंका नथी अने पूज्य श्री आगमोमां ज्यां शाश्वत प्रतिमाजी महाराजाओनु' वर्णन छे, त्यां पण—चक्षुनु' वर्णन छे, के—"चक्षु एक रत्ननी सफेदी अने रिष्ट रत्नथी श्याम कीकी युक्त छे." विगेरे.

अहीं नयनिक्षेपनी दृष्टिथी केटलु'क विचारी शकाय तेम छे, प्रतिमाविधान, तीर्थङ्करप्रभुनी अवस्थाओ, श्री प्रतिमाजीमां आरोपाता बीजा भावो, विगेरेनी अपेक्षाए चक्षुयुगल चडाववामां आवे छे. तेमां औचित्य जणाय छे. तेथी चक्षु चडाववानी बाबतने उडाडवाना केटलाकना विचारो योग्य लागता नथी. कला अने उचित विवेक राखवा सामे तो कोईनोये विरोध होई शकेज नहीं, परन्तु तेवी गौण बाबतोनी खामीने आगल करीने मूल वस्तु उडाडी न शकाय. तेम छतां आ बाबतमां शास्त्रकार भगवंतोना शा अभिप्राय छे ? ते गीतार्थ पुरुषो जणावे, ते प्रमाण मानवामां कोईनोये वांधो न होय. परन्तु ज्यां सुधी १७ भेदी पूजामां तेने स्थान आपनारी जुदा ग्रंथोनी गाथाओ पण मले छे, त्यां सुधी तेना विरोधमां वगर विचार्ये ते बाबतमां बोलवु' के लखवु' ते अमे उचित मानता नथी.

अहीं आ विषे जरा संक्षिप्त पण विगतवार निर्देश करवामां आव्यो छे. लेखक—अहीं पण केवो भाषा वापरे छे ? ते जरा वांचवा जेवी छे ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"भक्तो अस्वाभाविक उपनेत्रधारी बन्या, पण पोताना भगवानने पण पोतानी आंखोने सारा लागता शणगारोथी शणगारीने तेमना स्वाभाविक रूपने ढांकी बेठा."

आ रीते उपहासात्मक लखाणो भाषानी तोछडाई सिवाय बीजु शु बतावे छे ? एम कहीने चक्षु चडाववाना निषेध खुबीथी सूचववामां आवे छे, ए पण लेखकनी वस्तुने मरडीने लखवानी एक कला छे.

कलारहितपणे चक्षु चडाववानी वात उपरथी ते चडाववाना निषेध सुधी वात खुबीथी पहोंचाडी देवामां आवी छे. परमात्मानी केवल वीतरागदशाने ध्यानमां लेनारना ख्यालमां आंगी पूजा खटके ए स्वाभाविक छे. तेना ख्यालमां दिगंबर संप्रदायनी मान्यता वधारे उचित जणाय. तेज प्रमाणे चक्षु चडाववाना विरुद्ध मानसवाला जीवोने चक्षु चडाव्या विनाना प्रतिमाजी स्वाभाविक लागे. वास्तविक रीते चक्षुरहितपणु देखाय, ते अस्वाभाविक छे. अने चक्षु रहित प्रतिमाजीना दर्शनथी उल्लासमां वेग न आववाना अनुभवना घणा दाखला मले छे.

पृ० ४७—"लोकाकर्षण घटे छे. ए तो हानि छेज विगेरे." त्रण अवस्थाओनी भावनाने लगतु जे आ पुस्तिकामां लखवामां आव्यु छे, ते पण जिन-प्रतिमाजीनो पूजाना विधानना दूरगामी घणा रहस्यो समजाया विना लखायु छे. अवस्थाओ भाववी होय तेने कशी अडचण पडे तेम नथी. कारणके आरोप करवा माटे जुदा जुदा बाह्य निमित्तो प्रतिक रूपे शोधीकाढवाना होय छे. लेखांक ३जामां विस्तार थी समजाववा मां आव्यु छे.

पृ० ४८—"ज्यारे आपणा शास्त्रकारो प्रतिदिन त्रणे अवस्थाओनी भावना करवानो उपदेश करे छे." एम कहीने रोज त्रण अव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थानी भावना करवानु जणाववामां आवे छे. त्यारे-पृ० ५१ उपर लखवामां आव्युं छे, के—

"राज्यावस्थानी भावना जे कादात्मिक हती."

आ रीते परस्पर विरोध पोतानाज लखाणमां छे.

जलाभिषेक विना-जन्मावस्थानी भावना शी रीते लावी शकाय ? आम एक तरफ त्रणेय अवस्थाओ रोज भाववानी जणाववामां आवे छे, अने बीजी तरफथी नित्य स्नान विलेपन पूजानो निषेध करवामां आवे छे. आ पण पोतानाज लखाणमां परस्परमां विरोध छे.

"अम्हारी मूर्तिओमां" "अमारी जिनपूजा पद्धतिमां नित्य स्नान-नित्य विलेपन-नित्याभरण अने आंगीओ प्रविष्ट थवानां परिणामो" विगेरेमां कटाक्षमय मिताक्षरी भाषा छे.

पृ० ५०—"श्रमणावस्थासूचक निष्केश मस्तक रह्यां तेमां मस्तक तो सदाय मुकुटथी ढांकयुंज होय अने मुख पण कुंडलादिके अलंकृत एटले श्रमणभाव तो नहिं पण राज्य गादीए बेठेली कोई युवति राणीनी भावना तो जरूर करावे" युवति राणीनी भावना जरूर कोने करावे ? वीतराग प्रभुना मंदिरमां बिराजमान वीतराग प्रभुना प्रतिमाजी उपरथी "जरूर" युवति राणीनी भावना थाय ? कोने थाय ? जे दर्शन करवानी इच्छा विना मात्र ते जातना मनोभावोथीज सतत वासित होय ने मंदिरमां जाय तेने पण एवी भावना करावे के केम ? ए प्रश्न छे. लेखकने आ जातनी भावना जरूर थती होवानो अनुभव शाथी थयो ? के जेथी आवी हीनोपमा अलंकार वापरवानी इच्छा थई आवी ? घणाज दुःख साथे अजब आश्चर्य थाय छे.

देहरा (देवगृह) मां नहिं परन्तु देहरासर (देवगृहेश्वर) मां बिराजता त्रिभुवन पूज्य सर्वज्ञ वीतराग जिनेश्वरदेव स्वरुप श्री जिन प्रति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माजी महाराजने माटे गमे ते निमित्तं पण आ जातना शब्दो कोई-नीये कलममांथी बहार पडी न शके-प्रतिमापूजाना विरोधिओनी कलममांथी पण बहार न पडी शके तेवा शब्दो एक पदस्थ जैनमुनिना वेशमां रहेल व्यक्तिनी कलममांथी बहार पडे अने तेनी प्रसिद्धि माटे सगवड मले, अने श्री संघना जवाबदार अने जोखमदार आचार्य-महाराजाओ आदि वांची ले, परन्तु कमनसीबी छे, के हालना संजोगोमां श्री संघ आवुं आजे चलावी ले छे. शुं मादी वाक्यरचनार्थी आ वात समजावी शकाय तेम नहोती ? के जेथी आवी जिनेश्वर देवने न छाजता हलकट शब्दोथी युक्त हीनोपमा भरी वाक्य रचना वापरवी पडी. कमनसीब आपणी आंखो छे, के आवुं वांची शकी, अने नालायक आपणा कान छे. के आवुं सांभली शके छे, अने अतिनिष्ठुर आपणुं हृदय छे. के ते निरांतनो अनुभव करी शके छे. जे देवाधिदेवना नाम पाछल लाखो करोडोनुं धन न्योच्छावर करवामां आवे छे, जेनी पाछल अनेक पुरुषो अने स्त्रीओ पोतानी समग्र जींदगी न्योच्छावर करीने सर्वस्वनो त्याग करी संयमना महाभार उपाडे छे. परन्तु जेना दिलमां "जिनपडिमा जिन सारिखी " एवो भाव जाग्यो न होय," "जिनप्रतिमानां पूजननुं विधान आध्यात्मिक मार्गना महान प्रणेतानी प्रतिमाजी मारफतनी भक्ति आध्यात्मिक उन्नतिना महाप्रतिक समान छे. ए उपदेश सर्वज्ञ तीर्थङ्कर प्रभुनो छे, अने आगमिक छे." एवो विश्वास जेना दिलमां जाग्यो न होय, के स्थिर न थयो होय, पद्मासनादि युक्त वीतरागमुद्रा छतां जेना हृदयना उंडाणमां युवति राणीनो अध्यास थया कर्यो होय, अने प्रतिमा पूजानुं आध्यात्मिक रहस्य स्पर्श्युं पण न होय, तो तेवी व्यक्तिओना मुखमांथी के कलममांथी आवा गमे तेवा शब्दो सरी पडे, तेमां कांई पण आश्चर्य पामवा जेवुं लागतुं नथी. आश्चर्य तो ए वातनुं जरूर थाय छे, के—परमात्मानुं आ जातनुं अपमान परमात्माना स्थापेला महाविश्वशासननो संचालक परमात्मानोज स्थापेलो श्रमण प्रधान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्विध श्री संघ ठंडे कलेजे सहन करी रह्यो छे. आथी विशेष आश्चर्य बीजुं क्युं होई शके ?

जेओने जिनागमो उपर–जैनधर्म उपर विश्वास न होय, तेओए श्री संघमां मानवी प्रमाणिकतानी दृष्टिथी पण शा माटे पडया रहेवुं जोईए ? वफादारी जालवी न शकाती होय, तो जेनी वफादारी जालवी शकाती होय, तेनो आश्रय करवो जोईए. खरा खोटानो प्रश्न बीजो छे. जेनी साथे रहेवुं होय, तेनुं सारा खोटापणुं जोवातुं नथी. सारुं के खोटुं जोया विना वफादारज रहेवानुं होय छे. नहिंतर ते पक्ष छोडीने तेनुं पूरती प्रबलताथी खंडन करवामां प्रमाणिकता अने पुरुषार्थ छे, परन्तु जे शेठनी नोकरी करता होईए, तेज शेठना खोचरा काढवा तत्पर थवुं ए सामान्य नीतिथी पण विरुद्ध छे. नोकरी छोडीने सत्यनी खातर जरूर खोचरा काढी शकाय छे. अने खंडन पण करी शकाय छे. "सुधारा करावबानी इच्छाथी एम करवामां आवे छे." ए बचाव चाली शके तेम नथी. कारण के–आ पुस्तिकानो उद्देश मात्र खोटी प्रवृत्तिओमां सुधारा करवा कराववानो नथी. ए आ पुस्तिकाना विचित्र संदर्भ उपरथीज कोई पण समजी शके तेम छे. प्रभुने माटे आ जातना तोच्छडा अने अयोग्य उपमा आपवानी अयोग्य कला वापरवा जतां वपरायेला शब्दो लखवा ते श्री जैन शासनना मोटा गुन्हारूप शिवाय बीजुं शुं गणी शकाय ? आज सुधीमां ते शब्दो पाछा खेंची लेवाया नथी, ते बदल प्रायश्चित्त लेवायुं नथी, के खुल्लो रीते 'मिच्छामि दुक्कडं' पण देवायुं नथी. के गुरुजनोनी क्षमा याचवामां आवी नथी. शुं आ विचारणीय नथी ? विशालहृदयी जैनशासन आत्मकल्याण माटे योग्य रीते योग्य पात्रोने जरूर पोतानामां समावीने उत्तम तक आपी शके छे, परन्तु अनन्त जीवोना कल्याणने हानि थाय, तेवा अयोग्य मूढ मार जैन शासन चलावी शके नहीं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृ० ५२—"श्रमसाध्य अने व्ययसाध्य" आ पण मात्र कल्पनानो घोंडोज छे. श्रम अथवा व्यय विना धर्मनी आराधनाज शी रीते थाय ? अने ते विना आत्मकल्याण पण शी रीते थाय ? कोई बतावी शके तेम छे ?

पृ० ५३—"आजे ? प्रक्षालन थई अंगलुछणां थाय तेनी प्रतीक्षामां भक्तो बहार उभा रहे छे. आजना नित्यस्नानमां कंईज भावना जेवुं रह्युं नथी. जेम वैष्णवधर्मिओमां "स्नान" ए गृहस्थना नित्य कृत्योमां परिगणित छे तेज प्रमाणे आजे आपणी "प्रतिमाओना" प्रक्षालने एक नित्यकृत्यनुं रूप लीधुं छे. बाकी एमां कंईज सजीवता रही नथी."

आ लेखकनो मनोवृत्तिनुं बाह्य शब्द चित्र सिवाय बीजुं कांई जणातुं नथी. एक पण व्यक्ति आखा भारतमां सजीवता पूर्वक प्रक्षालन करे, अने एक व्यक्ति पण रहेज पण तेनाथी आत्मकल्याणना मार्गमां एक डगलुं आगल भरे. तो–तेटलाथीज पण–सर्व सार्थक छे. एम जैन शास्त्रकारोनो मत छे. आखो संघ जमाडवामां एकाद पण श्री तीर्थङ्करदेवनो जीव लाभ आपी जाय तो बधुं सार्थक सार्थक गणाय छे. परन्तु आ वातनी श्रद्धा तेनेज बेसे के–जेने आध्यात्मिक लाभ लेवो केटलो किंमती होय छे तेनी कदी पण कल्पना आवी होय. कोई दिवस जेने भावना जेवुं थयुं न होय, अने सजीवतानो अनुभव न थयो होय, तेने शी रीते तेनुं महत्त्व समजावी शकाय ? व्यक्तिनी भूलनो आरोप धार्मिक प्रवृत्तिओना विधान उपर करवो, ते केटलो अन्याय छे ? विधान अखंड रीते जालववानुं होय छे, पछी व्यक्ति तेनो लाभ उठावी शके के न उठावी शके. कोर्ट कचेरीना प्रोसीजरोनी माहिती होय, ते आ रीते न लखी शके.

पृ० ५३—"नित्य प्रक्षाल अने तिलकोनी उपाधि वधतां तेवां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगल चैत्यो (घर मंदिरो) नो व्यवहार आजे नामशेष थई गयो छे."
"पगारदार"

पृ० ५४—"नित्य स्नाननी खटपट वधतां."

"अवस्थाओनी भावनाना प्रतिको खलास थया." व्यापार-धंधानी उथलपाथलमां पडेला गृहस्थाने वारसानी अनुभव परंपरा तुटी गई, अने ठाम ठाम रोकायेला यतिवर्गनुं वजन घटयुं. तथा मुनिवर्ग तेना प्रमाणमां वध्यो नहीं, तथा बीजी शाला कोलेजोनी प्रवृत्तिओमां—आ ज्ञातना उपदेशो मोटा प्रमाणमां आपी न शकाया तेथी, ते परंपरा सांधी शकाई नथी. ते परिस्थिति घणा अनिष्टोनुं कारण छे. तेनो आरोप-नित्य स्नानादिक उपर ओढवाडवामां अन्याय अने असत्य छे.

७. "नित्यस्नाननी प्रवृत्तिए आपणी जिनप्रतिमाओने जे नुकशान पहोंचाडयुं छे, तेनी तो कल्पना करतां पण हृदय कंपे छे" विगेरे

"वालाकुच्चिओना प्रहार के अंगलुछणाना घसरका" आवा आवा घणा तोच्छडाई भरेला वाक्यो छे. मात्र निर्देश पूरता खास खास अहीं टांकवामां आव्या छे.

पृ० ५५—"सुन्दर प्रतिमाओने क्यां सुधी चैत्यालयोमां रहेवा देशे ए कहेवुं मुश्केल छे."

लेखकना नित्य स्नान विलेपन पूजा सामेना विरोधनुं खास कारण शुं छे ? ते हवे खुल्लुं थाय छे. अने ते ए छे, के—

प्रतिमाजीना प्राचीन शिल्प, कला, अने ऐतिहासिक लेख विगेरे अक्षत राखवाना आजना आर्कोलोजीकल अने प्राचीन शोधखोल खातानी कामगीरी अने कामचलाउ आदर्शोना लक्ष्यने पुष्ट करवानी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूरदूरनी अव्यक्त इच्छामांथी आ वाक्यो बहार आवी शक्या छे. एकंदर आ आखी पुस्तिकानी इमारत आवाज ख्यालो उपरथी खडी थई छे.

"केम जाणे के-प्रतिमाजीओना निर्माण मात्र कला अने शिल्प कारीगिरी माटेज थता होय, एटले के तेनी मारफत आध्यात्मिक लाभ उठाववानो हेतु केम जाणे के साव नकामोज होय" एम मानीने राज्यतंत्र मारफत गूढ रीते प्रचारायेला आजकाल आ जातना विरोधो तथा तेने सहायक कायदा पण वधता जाय छे. लेखकनुं मानस दूर दूरथी पण तेमां राचे छे. आ रहस्य छे.

आ प्रश्नमां बहु महत्त्वनी बाबतो घणी समजवा जेवी छे. परन्तु तेने कोई प्रसंग उपर राखीशुं.

पृ० ५५—नित्य स्नान विलेपन पूजाना विरोधनुं व्हानुं काढीने जिन प्रतिमा पूजानी आखी वस्तुनेज अशास्त्रीय—अनागामक अने सर्वज्ञो तथा सुविहितोथी वास्तविक रीते अनुपदिष्ट ठराववाना गर्भित आशयथी आ पुस्तिका लखवामां आवी छे ते हवे वाचको बराबर समजी शकशे. नहींतर नित्य स्नान पूजाना विरोधना प्रसंगमां लोकाशाहने याद करवानी शी जरूर हती ? जो के तेने याद करवामां लेखके अति अद्‌भुत कलानो उपयोग कर्यो छे. हृदयमां सहानुभूति छतां बहारथी तेनी टीका करी छे. अने तेनी उत्सूत्र प्ररुपणानो बचाव करवा माटे तेना उपरनो आरोप मूकवामां आव्यो छे. नित्य स्नान विलेपन उपर परंपरागत जैनशासनना पूर्वाचार्योए नित्य स्नान विलेपन उपर वधारे पडतो भार आप्यो तेथी लोकाशाहे मूर्तिपूजा सामे माथुं उंचक्युं. आ कहेवामां दोष पूर्वाचार्यो उपर ढोलवामां लेखक खुबी वापरे छे.

"परमात्मा तो निरंजन निराकार छे ते वली जड मूर्तिना रूप केम होई शके, माटे मूर्ति मारफत तेनी पूजा करवी, ए परमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्मोनुं अपमान छे. आवा इस्लाम धर्मना धर्मगुरुओ मंदिर-मूर्ति अने तेनी पूजानो विरोध करी रह्या हता. अने ते सत्ताधारी तेना अनुयायिओ ए विरोधनी प्रबलता बतावावा मंदिरो अने मूर्तिओ तोडता हता. ते वातावरणनी असर लोंकाशाह उपर थई छे. ते वखत केटलाक जुलमथी, केटलाक दबाणथी, केटलाक लालचथी, केटलाक संपर्कथी मुसलमान थई गया छे. त्यारे केटलाक मुग्धभावे पोताना ज्ञाते पण मुसलमान थई गया हता. त्यारे केटलाक पोतपोताना धर्म-क्षेत्रमांज विरोध करता थई गया हता. लोंकाशाह तेमांनी एक व्यक्ति छे. तेमणे हिंसा अहिंसाना बाह्य मुद्दा उपर विरोध कर्यो. कारणके तेना समाधानना पूर्वाचार्योना ग्रंथो तेना वांचवामां आवेला नहोता. तेमनी एटली शक्ति पण न होती. लोंकाशाहनुं एक लीटी जेटलुं पण लखाण मलतुं नथी. परन्तु तेनी पाछल चालेला लोंकागच्छना मुनिओए जे कांई लख्युं छे, ते उपरथी मात्र एटलुं जणाय छे, के-तेमणे "अहिंसा अहिंसा" ने आगल करीने सामायिक-पौषध विगेरे घणी घणी धार्मिक क्रियाओनो विरोध कर्यो हतो त्यारे तेनी विचार-धारामां ते वखते आवेलाओए समजाव्युं छे, के—आ तमारी वातो जैनशासन आगल टकी शकशे नहीं, अने कोई मानशे नहीं, अने लोंकागच्छना चलावनाराए थोडो थोडो फेरफार कर्यो. मूर्तिपूजानो पण तेमणे सदंतर विरोध कर्यो नथी. आथी करीने तेने पूर्वाचार्योए पण एक संप्रदाय तरीके जुदो न पाडी देतां मात्र थोडी थोडी प्ररुपणामां फरक होवाथी एक गच्छ तरीके स्थान आप्युं. अने लोंका-गच्छना श्रावकोए बांधेला देहरासरो छे. आजे पण तेओमांना मोटा मोटा तीर्थोना वहीवट करनारा छे एटले लोंकागच्छे मूर्ति अने तेनी पूजानो एटलो विरोध कर्यो नथी.

परन्तु पाछलथी लवजीस्वामि अने धरमशीस्वामि थया के जेमणे मूर्तिपूजानो सदंतर विरोध कर्यो. अने मोंढे मुहपत्ति बांधवानी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शरूआत दाखल करी, जेथी जुदा संप्रदाय तरीके ते वर्ग जुदो पडतो गयो. श्री मेघजी ऋषि विगेरेए तो मोटा प्रमाणमां लोंकागच्छ छोडीने मूल परंपरामां फरीथी दीक्षा लीधाना पुष्कल दाखला मले छे.

त्यारपछी युरोपीय लोको आव्या अने तेओए गुप्त रीते भारतमां पोताना धर्मनो फेलावो करावदा माटे दरेक धर्मनी क्रियाओ अने आचारो उपर कटाक्ष करनारो प्रचार कर्यो तथा शिक्षणना आधारे जुदा जुदा संप्रदायोमां अंदर अंदर विरोध करनारा थया, तेने आड-कतरो टेको आप्यो. अने ए रीते मुसलमानोनी माफक सीधी मूर्ति भांगवानी प्रवृत्ति शरू न करी, परन्तु विचारणा फेलाववा माटे अंदर-थीज बहार आवेला माणसोने टेको आप्यो. तेने अनुसरीने कानपुरमां एक अंग्रेज जडजनी सामेनी चर्चामां दयानंद सरस्वतीना पक्षमां जीत जणावी तथा बीजी आडकतरी रीते तेना प्रचारने उत्तेजन आप्युं छे. एज प्रमाणे ज्यां ज्यां जैनाचार्योनो बहु विहार नहोतो त्यां त्यां श्रावकोने जैन साधुओने पुरो ख्याल पण नहोतो तेवा प्रदेशोमां तेओ जई पहांच्या अने घणा लोकोने पोताना मतमां लई लीधा. अने साथे तेओए थोडाक वर्षो तो तप-त्याग-वैराग्य, संयमना आचरणो एटला बधा उंचा प्रकारना बताव्या हता, जेथी एमज लागे, "खरेखरा त्यागी जैन साधुओ छे." अने मूल परंपराने नबली पाडवा आ जातना संप्रदायोने आडकतरो टेको आपताज हता. अने मुंबईमां जेम खीस्ती पादरीओना अने राज्यसत्ताना आचार अने क्रियाविरोधना शिक्षण तथा वर्तमानपत्रो द्वारा गर्भित प्रचारनुं परिणाम राजचंद्रजी अने तेना अनुयायिओ बहार आवी शक्या. अने स्थानकवासीओमां तेनी असरने अंगे कानजीस्वामि नामना स्थानकवासी साधुओए प्रथम छुपो छुपो प्रचार शरु कर्यो अने पछी खुल्लो प्रचार शरु कर्यो. क्रियानो विरोध करनारा बे रीते क्रियानो आचारनो विरोध करी शके. एक तद्दन जडवादनो उपदेश आपीने अने बीजी रीते ए के-एकांतथी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मवादनो उपदेश आपीने ए लोकोए एकांत आत्मवादनो उपदेश आपीने विरोधनो प्रचार करी; धर्मनी जड उखेडवाना लांबा कालना कार्यक्रमने टेको आप्यो.

कारणके विदेशीओ जाणे छे के—कोईपण धर्मनी जड दुनियामांथी उखेडवी होय तो लोकोमां कोईपण धर्म—आचारो मारफतज प्रचारमां रही प्रत्यक्षपणे जीवतो होय छे एटले आचारो उपर हरकोई रीते घा थया करे, तेम करवाथी धर्मोनी जड ढीली पडती जाय छे. अने तेने ठेकाणे शिक्षण अने प्रचारथी आधुनिक जीवनना धोरणो गोठवता जवाथी लांबे काले मोटा फेरफार थई जशे. अने आखी वस्तुज उथली पडशे. आजे तेनु परिणाम दरेक धर्मना आगेवानो पोतपोताना धर्मना क्षेत्रमां स्पष्ट जोई शके छे. जमानाने अने युगने नामे केटला बधा फेरफार दाखल थई गया छे. जे अनात्मने पोषनारा छे छतां ते गणाय छे जमानाने अनुकुल धार्मिक गोठवण.

आ रीते बहारना लोकोनी असरना परिणामनो टोपलो ओढावाय छे ते धर्मना साचा वफादार लोको उपर. आ एक रीवाज पडी गयो छे. बालकोना संस्कार धर्मरहित करवामां हालनु शिक्षण प्रबल कारणभूत छे. छतां तेनो टोपलो ओढावाय छे माबापो उपर. ते प्रमाणे प्रस्तुत लेखक पण आखी वस्तुने केवु विकृतरुप आपीने लखे छे ?

"पण साधारण जनतानो घणो भाग आ धनवानोनी अति प्रवृत्तिओथी उभगी गयो हथो. अने संयोग वश तेवाज समयमां लोकांशाहे साहस करी, तेवा लोकोनु नेतृत्व स्वीकारीने मूर्तिपूजा सामे माथु उचक्यु, तेमने टपोटप ज्यां त्यां सहायको मल्या, अने तेमना प्रचारे देशव्यापी रुप धारण कर्यु. अने मूर्तिपूजाने पारावार हानि पहोंचाडी. आजे अमूर्तिपूजक जनोनी संख्या लाखोथी गणाय छे. अमारा मत प्रमाणे बारमा सैकामां नित्य स्नान विलेपननु जे आंदोलन जाग्यु हतु, तेनु ए सौथी अनिष्ट परिणाम छे."

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

આવું આંદોલન કોઈએ જગાડયું નથી. તેમ જાગ્યું નથી. તેના કોઈ પૂરાવા નથી. પરંપરાગત એક વસ્તુ ચાલી આવતી હતી તેમાં કદાચ વેગ આવ્યો હોય, તેને આંદોલન જાગવા જગાડવાના શબ્દો લાગુ કરી મોટું સ્વરુપ આપવાની કલા વાપરવામાં સત્યતા નથી, પ્રામાણિકતા નથી, ન્યાય નથી લોંકાશાહના માથા ઉચકવામાં નિત્ય સ્નાન વિલેપન ઉપર આરોપ મૂકવામાં આરોપ મૂકી તેને કારણ તરીકે જણાવવું એ પણ એટલુંજ જુઠાણું અને બેહુદું છે.

આ રીતે ભાષાની તોછડાઇના અને હકીકતોને મરડવાની કલાના કેટલાક દૃષ્ટાંતો આપ્યા છે અને વિસ્તારભયથી ઘણા છોડી દેવામાં આવ્યા છે.

પૌરાણિક સમયની અસર, ચૈત્યવાસના સમયની અસર. બારમા સૈકાના આંદોલનની હકીકત, ત્રણ અવસ્થાઓની ભાવનાનું વિસ્તૃત સ્વરુપ લોંકાશાહનો ઉલ્લેખ વિગેરેનું પોતાના મંતવ્યોને વધારે સ્પષ્ટ આકાર આપવા માટે ભૂમિકા જમાવવાની કલા વાપરવા શિવાય બહુ મહત્વ નથી. નિત્ય સ્નાન વિલેપનનો વિરોધ તો માત્ર બહાનુંજ છે ખરી રીતે જિનમંદિર. જિનમૂર્તિ અને જિનમૂર્તિપૂજા સામેજ લેખકનો વિરોધ છે એટલુંજ નહીં, પણ આ પુસ્તિકામાં તો તેમણે ગર્ભિત રીતે જૈન ધર્મની આખી ઈમારત સામે પણ વિરોધ બતાવી દીધો છે. કારણ કે–જેમ મૂર્તિપૂજામાં બહારની અસરો થઈ ને ફેરફાર થયા તે પ્રમાણે એક એક બાબતમાં ફેરફાર ન જ થયા હોવાની કલ્પના કેમ ન થાય ? અને તેવા ફેરફારો સુવિહિત પુસ્તકો શાસ્ત્ર ગ્રંથોમાં દાખલ કરતા ગયા. એનો આડકતરો અર્થ એ થાય કે–આખી ઇમારત કોઈ સિદ્ધાન્તો, તત્ત્વો કે તાત્ત્વિક ભૂમિકા વિનાજ ખડી થયેલી છે. વિગેરે સૂચવીને મૂલ ઉપરજ ઘા લઈ જવા સુધીનાં બીજકો આ પુસ્તિકામાં વેરવામાં આવેલા છે.

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"श्री जिनपूजा पद्धति" पुस्तिकानी निष्फलता.

लेखांक—छट्ठो.

आ पुस्तिकाना लेखकनी आश्चर्यकारक मनोदशा.

आ लखाण लखतां अमारुं मन अने कलम बनेय संकोच अनुभवे छे, छतां अमारे आ लखवुं पडे छे, ते घणाज दुःख अने खेद साथे लखवुं पडे छे. नास्तिको के आधुनिक अनात्मवादी वैज्ञानिको गमे ते माने, परन्तु धर्म जेवी वस्तु जगत्‌मां सद्‌भूत पदार्थ तरीके अस्तित्व धरावे छे ए निर्विवाद-सत्य छे. परन्तु जो आत्मा जेवी वस्तु न होय, तेने विकृतिना बंधन न होय; अने तेनाथी ते छूटो शके तेम न होय, तो धर्म जेवी वस्तुना अस्तित्वनी संभावनाज उत्पन्न थती नथी. अनेक बंधनोथी मुक्त थवाना उपायनुं नामज धर्म छे. परन्तु मुक्त थवानुंज न होय तो, तेना उपाय होई शकेज नहीं. अने तेना उपाय न होय, तो पछी धर्म जेवी वस्तुनुं अस्तित्वज जगत्‌मां रहेतुं नथी. आ सीधी स्पष्ट अने तद्दन सरलताथी समजाय तेवी वात छे.

हवे जो धर्म जेवी वस्तु छे. तो तेना प्रवर्तको, उपदेशको, संशोधको, प्रचारको के जे कहो ते होवाज जोईए. पछी ते केवा होय? ते विषे हालमां आपणे बहु विचारणा करीशुं नहीं, पण ते होवा जोईए अने एक अद्‌भूत वस्तुनी भेट तेओए जगत्‌ने करी छे, ते तेओनो महान् उपकार छे एम तो कहेवुंज पडशे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ जगतमां एवा घणा उपदेशको पाक्या छे, अने तेओए पोतपोतानी समज मुजब शाश्वत धर्ममांनुं ज कांई ने कांई पोतानी समज मुजब उपदेश्युं छे. अने तेम करीने तेओए पोतानी शक्ति मुजब पोतानी आजुबाजुना के तेथी ए विशाल वर्तुल सुधी पोतानी हित-बुद्धि अने शक्ति विस्तारी छे एम कहेवुं ज जोईए.

आ उपदेशकोमां श्री तीर्थङ्करोनो उपदेश असाधारण कोटिनो छे, ए निर्विवाद सिद्ध-सत्य छे. तेओश्रीना भव्य-चरित्रो, भव्य-उपदेश. विज्ञान-विश्वज्ञान-तत्त्वज्ञान-विगेरेनी कसोटी उपर चडावी शकाय तेवी रीते क्रमिक आध्यात्मिक विकास रूप जैन-धर्मनुं नाम बराबर आपी शकाय तेवो पद्धतिसरनो विकासक्रम अने सौ कोइ जीवनमां बराबर उतारी शके तेवा तेना व्यवहारु प्रतिको बताव्यां छे. तेनी तुलनामां बराबर उतरी शके, तेवी रीते अने तेवो कोइए विकासक्रम अति बारीकाईथी बताव्यो छे ? नहींज. कोईपण तेनी तुलनामां उतरी शके तेवुं दृष्टांत कोई बतावी शके तेम नथी. ए पण निर्विवाद छे.

अने आ पूज्य तीर्थङ्करोनी आ विशिष्टता, तेओने विशिष्ट उपदेश, तेमणे उपदेशेला वर्तमान आगमो, अने तदनुसार पूर्वाचार्योना अन्य ग्रंथो उपरथी कोईपण समजी शके तेम छे. आ वात आपणे केवल आपणी जैन तरीकेनी श्रद्धाथी कहेवा करतां जगत्‌ना धर्मो अने धर्मशास्त्रोनी तुलना करनार तटस्थ विद्वानो साथे बेसीने बराबर धर्मनी योग्यताना चडउतर क्रम ठरावना बेसीए तो धर्म तरीकेनी उत्कृष्ट लायकातमां तीर्थङ्करोना उपदेशनो क्रम पहेलोज आवी जाय तेम छे. मोक्षानुकुल विकास मार्ग ते धर्म ए व्याख्यानो गज लईने मापीये तो उपरनुं परिणाम आवशे. बीजा कोई गजथी मापतां कदाच जुदुं परिणाम पण आवे.

तो लेखकश्रीए आगमो तदनुकूल अन्यशास्त्रोने प्रमाणभूत माने छे के केम ?, तेमां आवेला जैन धर्मना स्वरुपने प्रमाणभूत माने छे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के केम ?, जैन शास्त्रोनी कथाओमांनी हकीकत प्रमाणभूत माने छे के केम ?, आ प्रश्नो पुस्तिकाना लेखक माटे आपणे एटलाज माटे उठाववा पडे छे के—आ पुस्तिकानु लखाण तेमना दिलनी संदिग्ध स्थिति रजु करे छे. नहीतर, पन्यासपद सुधी पहोंचेला एक अभ्यासी जैन मुनि माटे आवा प्रश्नोने अवकाशज शी रीते संभवे ? कोईनेय पूर्वे पुछायेल प्रश्नो संबंधमां संदेह होय, तो ते दूर करवानी जवाबदारी जैनशासने तेवा पद्वीधरो उपर राखी छे. तेथी तेओज ते शंकाओ दूर करी शके छे. परन्तु ज्यारे तेओनुं ज दिल असाधारण शकित होय तेम तेमना लखाणथी जणाई आवे छे. "छद्मस्थ प्रकल्पित जिनमूर्ति अने पूजा कराववानी पाछलथी तेने सुविहितोए शास्त्रमां दाखल कर्या" नी वात करवानी हिंमत करवी, ए सामान्य वस्तु नथी.

ज्यारे पूर्वाचार्य महाराजाओ—जिनपूजाने आध्यात्मिक विकासनु सामान्य अंग नहीं, पण विशिष्ट अंग कहे छे. कारणके जैनधर्म जेवा धर्मनो उपदेश आपनारा जिनप्रभु प्रत्येनी कृतज्ञतापूर्वकनी भक्ति करवी, ए धर्मनु प्रधान अंग छे. एम तर्क-युक्ति-दलीलो प्रमाणो, दृष्टांतो अने शास्त्र प्रमाणोथी खुब जुस्साभेर समजावे छे. अने शास्त्रोक्त कथाओ के-जेमांनी केटलीक अनंत-असंख्यात के संख्यात चोवीशीओ साथे संबंध धरावती होय छे. छतां उपर जणाव्यो ते जातनो तर्क कई मनोदशामांथी उभो थयो हशे ? ए महाप्रश्न उभो थया विना रहेतो नथी.

अने ज्यारे आधुनिक ऐतिहासिक परंपराने लक्ष्यमां लईने आवा गंभीर विषयनी चर्चा तेमणे हाथ धरी, त्यांज असाधारण गोथु खवाई गयु छे. तेमना लक्ष्यमां ए केम नहीं रह्यु होय ? ते मोटामां मोटु आश्चर्य थाय छे ? अने ते परंपरानी भारतवासीओने पोताना धर्म अने तेनी पूर्वकालनी हकीकतो विषे शंकित करवानो आशय पण—आ पुस्तिकाना-लेखके अपनाव्यो छे. "संशयात्मा विनश्यति" ए न्याये एक बाबतमां एक वखत शंका पडे के पछी बाल जीवोने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वत्र शकाज शंकाउ थया करे छे. ए रीते ने बालजीवोनुं मानस डहोलाई जाय, अने धर्ममार्गथी च्यूत थता जाय. कारणके-आजे तो आर्यप्रजाना मानसने डहोलनारु' साहित्य तो मोटा प्रमाणमां बहार पडतुं ज रहे छे. तेने आ रीते वेग मले अने तेमां वधारो थाय. बौद्ध पंडित साधु धर्मानंद कौशाम्बीजीए लख्युं अने तेनुं रीतसरनुं ते वखते परिमार्जन न थयुं, तो केटलो अनर्थ चाली रह्यो छे ?

आधुनिक ऐतिहासिक परंपरा एटली प्रमाणभूत नथी, तेमज तेना प्रचारनी पाछल कोई सद्हेतु पण नथी. परन्तु बदहेतु पूरवार थतो जाय छे, अने घणो खरो पूरवार थई गयेलो छे. तेनो आधार लईने श्री आगमो तथा भारतीय बीजा साहित्यने अप्रमाणिकतानी कोटिमां मूकवा जेवी हिंमत करवी, ए भारतनी संस्कृतिनी दृष्टिथी जेवुं तेवुं पाप गणी शकाय तेम नथी. कालक्रमे शास्त्रोमां पाठांतरो. त्रुटक भागो-बाजुना-परिशिष्ट रूप के टीप्पणरूप उमेराओनुं मूलमां भली जवुं. विगेरे गमे तेटला नाना मोटा फेरफारो थई गया होय छतां ते सर्व शास्त्रोज आत्मवादी संस्कृतिना प्राण छे. विश्वमां तेनी एकंदर महत्ता केटली बधी छे ? ते ध्यानमां राखी तेना उपर अश्रद्धा उत्पन्न करवामां केटलुं बधुं पाप अने हिंसा छे ? तेनो विचार खास करवो जोईए. अने ए रीते सूक्ष्म दृष्टिथी विचार करीये. तो लेखके आजनी आत्मवादी विचारसरणिनी जेम लोकोने धर्मथी वचित करवानो आदर्श गर्भित रीते अपनाव्यो होवानुं सचोट रीते कही शकाय छे.

छेल्ला ४००-४५० वर्षोथी विदेशीओए तद्दन नवुं नवुं साहित्य अने नवी जीवन सरणी उभी करवानी व्यवस्थित हिलचाल शरु करी छे. तेना एक कार्यक्रम तरीके-दरेक देशना-धर्मो समाजो-इतिहास-जीवक धोरणो वगेरे विषे घणुं घणुं लखी नाख्युं छे. लख्युं छे एटलुंज नहीं, पण ते प्रमाणे वर्तनाराओनी एक-परंपरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पण उभी करी छे. जेथी "ए परंपरानो वर्ग वधतो जाय अने मूल परंपरानो वर्ग तूटतो जाय." ए नवी परंपरानी दृष्टिर्थी पण ते धर्म के समाजनी मान्यता तेओ मानना होता नथी. परन्तु तेने धर्म माननाराओमां एवी एक परंपरा उभी थाय, ने ते जोरमां आवे एटले मूल परंपरा तूटी पडे. अने तेनो कबजो नवी परंपरावाला लई ले अने नवा परंपरावालाओने प्रगतिना प्रवाहमां भेलवी लेवानी गोठवण गुप्त रीते राखोनेज ते नवी परंपरानी शरुआत करवामां आवी होय छे.

अने ए रीते दरेक प्राचीन धर्मो—समाजो--नवीन धोरणो गमे तेटला दृढ पाये होय, तो पण अंदर अंदर भेद नीतिनी फाचर वागवाथी तेना मूल हाली उठे अने परिणामे नष्ट पण थाय आम रुपांतर पामीने पण स्वरुपथी च्यूत थई नष्ट थाय, या विनाशना पाया उपर मूकाई जाय ए स्वभाविकज छे. आ गोठवण दरेक धर्ममां नवीन रीतिए गोठवाई गयेल छे.

दा. त. "भगवान् महावीरदेव तथा श्री पार्श्वनाथ भगवान् आ रीते थया छे." एम मानवा छतांये ए विदेशीयोमांना थोडाक पण खरा रूपमां तेमने सेववाना छे? के तेमनी आज्ञा मानवाना छे? नहींज, परन्तु चोवीशेय तीर्थङ्करप्रभुनी भक्ति करनार वर्गमां बे भाग पडी जाय के-"बे के चारज तीर्थङ्कर प्रभुज खरेखरी रीते थया छे बाकीना कथाकल्पित छे." एटले बे तीर्थङ्करने अगर चार तीर्थङ्करोने खरा माननारा—बीजी घणी बाबतोमां विदेशीय शोधो उपरनी श्रद्धार्थी मूल परंपरा उपरनी श्रद्धाथी च्यूत थाय. अने पछी धर्मना प्रत्येक अंगोमां आधुनिक अनेक कल्पित मान्यताओ दाखल थाय. अने ए रीते एक आखी जुदीज रीतिए ते ते धर्मनी परंपरा शरु थाय, तेने माननारो एक वर्ग उभो थाय, तेनी संस्थाओ स्थपाय अने मूल परंपराना कबजानी धार्मिक मिल्कतो पण राज्य सत्ताना टेकाथी तेओना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाथमां आवे एटले पाछलना गुप्त टेकाथी ते धर्मोने माननारा लोकोना एक वर्गने हाथेज तेमने मान्य धर्मोना प्रतीको नष्ट-भ्रष्ट थाय, अने छेवटे प्रगतिने नामे उभी करेली नवी धर्म परंपराओने कोईपण एक विश्व धर्ममां ते सर्वने विलिन करी देवाय. आवो एक महा प्रपंच खेलाई रह्यो छे. तेने मदद करनारी जैनधर्मनी जे एक नवी परंपरा तीर्थङ्कर प्रभुनी मूल परंपराने छिन्न भिन्न करवाना उद्देशथी उभी कराववामां आवी छे तेनुं आ परिणाम आवे.

प्रस्तुत लेखकनुं लखाणरुपे वलण, श्रद्धा अने पक्ष ए परंपराना छे, तेथी शास्त्रनिरपेक्षपणे मात्र आधुनिक दृष्टिथी ए जातनी विचारणा धरावती आ पुस्तिका लेखकना हाथे लखाई गई छे. ए नग्न सत्य छे. ते दृष्टिवालाओने शास्त्र, आगमो, देवगुरुनी तथा धर्मना विधानोनी आशातना हृदयमां खटकेज नहीं. कारणके दृष्टि अने हृदय ते जातना घडाता रह्या होय छे.

आ दृष्टिथी प्रस्तुत पुस्तिकामां लेखके घणो कचरो ठालव्यो छे. पाने पाने परंपरागत धर्मो उपर टकोरा नहीं, पण हथोडा मार्या छे ए वांचकोए ख्यालमां राखवुं.

अनात्मवाद अने तेना आदर्शनी इतिहास परंपरानी दृष्टिथी "जैनधर्म आखोज तद्दन जुठो-व्हेम-अंधश्रद्धामय-कपोल कल्पित अने प्रगतिनो मोटामां मोटो शत्रु छे." एम देखाई आवे, प्रगति-अनात्मवादी विज्ञान उपर ज्यारे खडी छे, त्यारे जैनधर्म आत्मवाद उपर निर्भर छे. जो आत्माज न होय, तो पछी जैनधर्मनी लेश पण प्रामाणिकता शी रीते टकी शके तेम छे? एटले अनात्मवादी ऐतिहासिक परंपरानो आश्रय लईने "जिन-पूजा पद्धति" नामनी पुस्तिका लखवानो विचार हाथ धरवामांज लेखके जैनधर्मने भयंकरमां भयंकर असह्य अन्याय कर्यो छे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"निरंजन निराकार परमात्मानी" ऐकांतिक वातनी छायामां आवी गयेला लोंकाशाह जेवा गृहस्थने याद करवामां गर्भित रीते लेखकनी बहारथी नहीं पण थोडी घणी पण अंदरथी गर्भित रीते गंभीर सहानुभूति हती अने छे एम संभवी शके छे. अने आ विचाराय छे त्यारे तो आश्चर्यथी चकित थवाय छे

अने ज्यारे पोताना विधानोने खरा इतिहासना विधानो तरीके जणावे छे, त्यारे तो हास्य साथे दुःख थाय छे.

"दरेक व्यक्तिए जैनधर्म उपर जैन आगमो उपर अनन्य विश्वास राखवोज जोईए." एवी आपणे कोईनेय बलात्कारथी फरज पाडी शकता नथी, कारणके-विश्वास- श्रद्धा ए मननी वात छे. कर्मना तथा प्रकारना क्षयोपशम क्षय-के उपशमने आधीन छे. दरेकने तेवी आंतर सामग्री न पण होय. अने तेथी करीने जेओने तेओ उपर विश्वास अने श्रद्धा छे, तेना करतां अनेक गणा जीवो अश्रद्धा धरावे छे. एटले ते स्थिति सदानी हती अने छे, तेमां आश्चर्य पामवा जेवुं कांई नथी. कोईने श्रद्धा न पण बेसे. परन्तु जो श्रद्धा, विश्वास के तत्प्रयुक्त तथा प्रकारनो आदर न होय तो, तेवा वर्गमां रहेवामां ते रीते चिटको रहेवामां पण प्रमाणिकता नथी. सभ्य अने प्रामाणिक माणसोए पोतानुं मन कहे ते प्रमाणे मार्ग लेवो जोईए. अने तेवा वर्तुलोमां जई वसवुं जोईए. विद्वानोने सत्कार गमे त्यांथी मली शके तेम होय छे, अने आजीविका माटे कोई प्रश्न रहे, ए मानी शकातुंज नथी. अने पोताना मानसने बंध बेसता क्षेत्रमां रहीने तेना दृष्टि बिन्दुथी जैन धर्मनी के कोईपण धर्मनी गमे तेटली कडकमां कडक समालोचना अने खंडन करवानो राजमार्ग खुल्लो थाय छे. दबाईने के शरम राखीने कलमने अटकाववानी जरूर रहेती नथी. छतां जैन धर्ममां सामर्थ्य हशे, तो तेना उपर पण विजय मेलवी पोतानी विजय पताका फरकावीने पोतानुं अस्तित्व टकावी शकशे. अने जो तेवा प्रबल वेग सामे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टकवानी तेनी शक्ति नहीं होय तो आपो आप तेने जगत्‌ना चोकमांथी विदाय लेवी पडशे. जगतने बन्नेय रीते लाभ थशे. जो ते एक नमालो धर्म हशे, तो नाबुद थाय, तेमांज जगत्‌नु' हित छे. अने जो ते धर्म प्रबल सामर्थ्य धरावतो हशे, तो पोताना सिंहनादथी क्षुद्रताने हठावी दई, सदा जागतो ने जयवंत रीते टकी रहेशे. तो अनंत जीवोनु' कल्याण करशे. ए रीते पण जगत्‌ने लाभज छे.

परन्तु लेखकं पडदा पाछल रहीने घा करवा करतां सामे आववामां बहादुरी छे. घरमां रहीने घा मारवां करतां सामा क्षेत्रमां आववु' जोईए जेथी विश्वासघातनो दोष न लागे.

जो लेखक खरा ऐतिहासिक तरीके साचा होत तो विदेशीयोए उभी करेली-कृत्रिम ऐतिहासिक जालने उथलावी नांखीने जगत्‌ने— तद्दन जे साची होय तेवी ऐतिहासिक शुद्ध परंपरानां स्वाद चखाडी शकत, परन्तु तेमनु' ऐतिहासिक ज्ञान मौलिक शोधो करतां विदेशीयोनी ढबे उच्छीनु' लेवायेलु' वधारे पुरवार थयु' छे.

जिनपूजा विरुद्धना तेमना वलणथी आवेशमां आवीने अमो आ नथी लखता परन्तु प्रस्तुत पुस्तिकामां तेवां बीजको लेखके पोतेज ठाम ठाम वेर्यां छे. ते बीजको आ जातना विचारना अंकुरो कोईनाये दिलमां सहज रीतेज जाग्रत करे तेम छे.

तेथी लेखक पोतानी मनोदशाने अनुकूल क्षेत्र पसंद करी ले, ते तेमने अने श्री जैन शासनने एम उभयने माटे हितावह छे. सौथी मुख्य अमारा दिलनी भावना तो ए छे के--ज्यारे आर्यक्षेत्र, मनुष्य भव, आर्य जातिमां–जन्म, जैनधर्म, जैन शास्त्रोनो अभ्यास, सद्‌गुरुओनो योग. जिनागमोनो योग, प्रभु तीर्थंकरदेवनी वाणी मल्या छे, तो तेना तरफे श्री गौतमस्वामी, श्री उमा स्वामि, वाचक महाराज श्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धसेनदिवाकर, श्री हरिभद्र सूरीश्वरजी महाराज, श्री कविवर श्री धनपालजी विगेरे ब्रह्मण कुलमां जन्म्या छतां जैन शासनना धुरंधर अने परम भक्त तथा जिनेश्वरदेव तरफ असाधारण रीते अविहड रागी थया छे. ते प्रमाणे लेखक पण तेनो रस माणे, अने परम विश्वास धारण करीने-आधुनिकतानी झेरी हवामांथी, तथा शंका अने संदिग्धतानी विषमय किच्चडमांथी पोतानी बुद्धिने बहार खेंची काढे, अने भवांभव आ शासन पामीने पोतानु आत्म कल्याण करी शके. तेवो महान् संजोग अनायासे पण प्राप्त थयो छे. तेनो सदुपयोग करी पोतानो जन्म सफल करे. पछीतो जेवी व्यक्तिनी इच्छा. व्यक्तिनी स्वातंत्र्यतानी आडे आपणे आवी न शकीये. छतां तेमणे प्रामाणिक तो बनवु ज जोईए. नहींतर श्री संघनी पण चोखी शी फरज छे ? ते विशेष स्पष्ट करवानी आवश्यकता अमे जोतां नथी. उक्त पुस्तिकानी सदंतर निष्फलता विषे एक लेख लखीने हवे आ लेखमाला पूर्ण करीशु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"श्री जिनपूजा पद्धति" पुस्तिकानी निष्फलता.

लेखांक—७ मो

उपसंहार

धर्म जो प्रजाना हितनी वस्तु होय तो-धर्मथी भ्रष्ट करनारा हालना वातावरणमां धर्म तरफ कशो पण प्रश्ननो बुद्धिभेद न थवा देवो जोईए. परन्तु धर्म तरफ आदर वधे धर्म तरफ जन समाज वधारे चाहनाथी आकर्षाय धर्मथी दूर गयेलो वर्ग पण तेनी नजीक आवे ने तेनाथी उत्तम लाभ उठावे तेवा रचनात्मक प्रयासो करवानी हालना संजोगोमां सविशेष आवश्यकता उभी थई छे. तेवा संजोगोमां जे कांई हाथमां आव्युं तेवुं नानु के मोटुं निमित्त पकडी लईने लोकोनो बुद्धिभेद उत्पन्न करी धर्म तरफ घृणित करनारुं शंका जन्मावनारुं साहित्य तो प्रसिद्ध करायज केम ? आवा संजोगोमां विना कारण जिनापूजा विषे बुद्धिभेद उत्पन्न करनारी पुस्तिका एक—धर्मिवर्गमांनी व्यक्ति तरफथी बहार पडे ते केटलुं प्रत्याधाती कार्य गणाय ? अमने तो आजवातनुं पारावार आश्चर्य थयुं छे के-पाणीमांथी आजे आगनो भडको केम थवा लाग्यो छे ? धर्म गुरुओज ज्यारे धर्म तरफ प्रजानो दुर्भाव जगाडनारुं साहित्य बहार पाडया करे तो पछी प्रजाने शरण कोनुं ? धर्माचरण एवी वस्तु छे के—समजवा छतां दरेक आत्मा एक सरखुं ऊंचा प्रकारनुं आचरण करी शकता नथी होता परन्तु आचरण ओछुं बधतुं करी शकता होय छे, पूरे पूरी विधिनो कोइक विरलाज जालवी शकता होय छे. सिवाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ना नो विधि नो आदर राखनारा तेना तरफ सद्भाव राखनारा होय तो पण आराधक भावमां गणाय छे केटलाक दूराशय विना अज्ञान-पणाथी अविधि करता होय तो पण तेओ विराधक पक्षमां गणाता नथी. अलबत्त अविधिनुं पोषण करी शकाय नहीं—तेने उत्तेजन आपा शकाय नहीं. ते टालवा रचनात्मक पद्धतिसरना उपदेशादिक प्रयासो करवा जरूरना पण खरा ! नहींतर धर्मक्षेत्र अविधि अने अराजकता नो अखाडो बनी जाय जे इष्ट नथी. परन्तु तेने माटे आजातनी पुस्तिकाने प्रसिद्ध करवीने एक घातक पगलुं ज गणाय ! आजे खरी रीते जेम बालजीवो नाटक सीनेमा तरफ दोरवाय छे, ते रीते जेम बने तेम धर्मस्थानो तरफ दोरववाना प्रयत्नो करवा जोईए. अने धर्म-स्थानोमां प्रवेश्या पछी पात्रोनी योग्यता प्रमाणे धर्मनो लाभ उठावी शके, तेवी सुव्यवस्था गोठववो जोईए. पछीथी उभगीने तेमांथी खसी न जई शके—तेने माटे धर्म संस्थाओना जवाबदारो ए पुरती तकेदारी राखवी जोईए. पोतानी नबलाईओनी असरथी बीजाजीवो अधर्म न पामे तेटला खातर पण शासननी प्रतिष्ठा खातर पण जवाबदारोए सजग रहेवुं पड़े छे. अन्यथा तेवा स्थानेथी खसीज्वुं जोईए. पोतानी नबलाई छुपाव्या विना शासन निष्ठा सतेज राखवी जोईए. आवनारा पात्रो अविधि आचरे ए जेम इच्छवा योग्य नथी. तेज प्रमाणे धर्म-स्थानथी वीखुटा पडे के आववा ललचायज नही. ए वधारे अनिच्छ-नीय छे. अविधि आचरवानो दोष करे तेना करतां धर्मस्थानमां न आवे ते विचार मोटा दोष वालो छे. माटे आजातनी तकेदारी राख-वानी आवश्यकता आजे तो खास जरूरनी छे. त्यारे तेवा संजोगो-मौलीक बाबतोमां बुद्धिभेद करनारुं साहित्य बहाराज केम पाडी शकाय ! तेवुं लखवानी विचारणा पण केम करी शकाय ? साथेज अमे एम पण मानीए छीए के—एक धर्मगुरुना कार्यनी बीजा धर्म-गुरु जाहेरमां टीका टीप्पण करे ते पण प्रजानो बुद्धिभेद करनारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवृत्ति छे. सामान्य जनता तेनो भेद समजी शकती नथी ने धर्मथी लभगे छे. कदाच कोईनी भूल थाय तो अंदरो अंदर सहानुभूति पूर्वक लक्ष्य खेंचीने सुधारी लेवुं. एज वधारे उत्तम उपाय छे. नहिंतर नानी नानी बाबतोमां धर्मगुरुओना विचार भेदो सामान्य जनतामां मोटा आकारमां देखाय अने तेथी तेओनो बुद्धिभेद उत्पन्न थाय. शास्त्रो अने गुरु तत्त्व उपर अने परिणामे धर्म तत्त्व तरफ दुर्भाव करवानी तक मली जाय. आ वात अमे जाणीए छीए अने तेवा संजोगोमां मुकावानुं अमारा दिलमां दुःख पण छे. आजे छापानी सृष्टि विस्तरवाथी गमे ते गमे ते वखते गमे तेम लखी मारे, ते धर्म क्षेत्र अने संस्कृतिने घातक छे. अने तेना लांबा लचक खडन-मंडन चाले ते पण एटलाज घातक निवडे ए वात घणे अंशे बराबर छे. परन्तु ज्यारे आ पुस्तिकामां मात्र नित्य-स्नान विलेपननी सामे नो विरोध तो मात्र नाम मात्रनोज छे. तेमां जैनधर्म, पूज्य आगमो, पूर्वाचार्य-परंपरा, तीर्थङ्कर भगवंतो, धार्मिक आचारो विगेरे उपर मार्मिक गूढ फटकाओ मारवामां आव्यानुं जोवामां आव्युं. अने ते पण प्रमाण अने पूरावा विना अने प्रमाण के पूरावा कोई कोई होवां छतां ते खुला अने अणुबंध बेसता जोवामां आव्या. जैनधर्मना मूल सुधी सुरंगनां सुंठ लई जवामां आव्यानो उंडे उंडे पण सपष्ट भास थयो. एटलेथी नहीं अटकतां तेनो जाहेर वर्तमान पत्र मारफत प्रचार शरु करवामां आव्यो. तथा स्थानकवासी तथा तेरापंथी के जेओ जिनमूर्ति पूजामां मानता नथी तेओमांपण आ पुस्तिकानो प्रचार करवानो आग्रह अने रस जोवामां आव्यो. उपरांत जैनधर्मना मूल सुधी कुठारघात करवाना बीजको तेमां जोवामां आव्या उपरांत "कोइपण आचार्य-उपाध्यायो के मुनिओ आनी सामे लखी शके तेम नथी" तेवो विपर्यास जोवामां आव्यो तथा आ पुस्तिकामां केटलाक आचार्यादिक सम्मत होवानी पण बडाई हांकवामां आवी इत्यादि घणां घणां अनिच्छनीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्त्वो जोवामां आव्या, जेथी अमारे आ प्रामाणिक अने विहित प्रयास हाथ धरवो पड्यो छे. छतां भाषानी सौम्यता नकामा आक्षेपोनी लट्ठो मारथी लखाणने सर्वथा दूर राखवा कालजु राखवामां आवी छे. परन्तु लेखकना लखाणमां जैन परंपरा उपर एटला बधा सीधा अने आडकतरा आक्षेपो, कटाक्षो, मर्माघातो गुंथी लेवामां आव्या छे, के–जेना प्रतिकार तरफ अंगुली निर्देश कर्या विना चाली शके तेम नहीतुं ज. तेमज तद्दन खोटी अने बेहुदी बाबतोनुं पृथक्करण कर्या विना चाले तेम नहीतुं ज. तेथी न छुटके तेवी वस्तुनो अने तेनी साथे संकलायेली मनोदशानो खेद साथे अमारे स्फोट करवो पडेल छे. आ पुस्तिका जैन शासनना प्रवाह बद्ध संचालनमां एक मोटामां मोटा स्फोटक पदार्थना घा समान छे. छतां अमारा उपरना आशयने ध्यानमां लईने जेम बने तेम सौम्यता छतां सचोट दलीलो अने प्रमाणोथी प्रतिकार करवा प्रयास कर्यो छे तेमां कांई त्रुटी रहीजवा पामी होय, तो अन्य तथा प्रकारना अधिकारीओ सविशेष व्यवस्थित रीते लखी ते खामी दूर करे, ए आवसर पात्र छे. कारणके शासन मालिन्य हर प्रकारे दूर करवानी सौनी फरज छे. अने ते आदरणीय छे. गमे तेम तो पण श्वे० मू० जैन शासन परंपराए मूल परंपरा छे. गच्छ भेदो गमे तेटला होवा छतां, ते परंपरा जैनधर्मनी मौलिकतानी वधुमां वधु नजीक छे. तेमां कोईनोये प्रामाणिक मतभेद पडी शके तेम नथी. भारतमांना प्रामाणिक ऐतिहासिक प्रमाणो अने परंपरागत बीजी घणी बाबतोनी तुलना करी जोतां आ सत्य वधारे सचोटता धरावे छे. तेथी करीने–श्री निर्युक्तिकार–भाष्यकारो–चूर्णीकारो तथा सिद्धसेन दिवाकरसूरि–श्री हरिभद्रसूरि--कलिकाल--सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य तथा उपाध्यायजी महाराज श्री यशोविजयजी जेवा बहुश्रुत पुरुषोए प्रमाणभूत मानीने निर्णयात्मक रुपे दोरेला मार्गने गुंथवा के तेना उपर टीका टीप्पण करवुं अने लोकोने बुद्धिभेद थाय तेवा मार्गो लेवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते लेशमात्र हितावह नथी. एम सौ कोईने लागशे. एवा महापुरुषोए जे जे बाबतो उपर महोर छापो लगावी छे. तेना उपर आजना अल्प पामर जीवोए उलटी कलम न चलाववी जोईए. ते प्रयास नकामो अने अहितावह होई भयंकर हानिकर अने आत्माओनु' अकल्याण करनारु' निवडे छे. अने ज्यारे अनंत पुण्य राशिना योगे मनुष्य जन्म, जैनधर्मनो संपर्क तथा तेनो विशिष्ट त्याग मार्ग प्राप्त थयो होय, तो बीजु' कांईपण वधु न थई शके, तो पण तेना उपर दृढ श्रद्धा केलवी, टकावी बीजा जीवोने पण तेमां स्थिर करवामां तक मली होय, तो विपरीत मार्गे शा माटे जवु' ? केटलाक धर्म व्यवस्था तथा धार्मिक क्रियागत विचारो परस्पर तथा प्रकारना अधिकारीओ साथे मलीने करवा योग्य तो जरुर गणाय. परन्तु जे कांई मनमां आव्यु' ते एकाएक बहार फेंकवाथी अज्ञान जनता तेमांथी सारने बदले असार ज मेलवे अने तेथी लाभने बदले हानिज थाय ? जेम जैन दर्शननो द्रव्यानुयोग एक व्यवस्थित विज्ञान मूलक अने सहेतुक छे, तेज प्रमाणे चरणानुयोग पण आध्यात्मिक विज्ञानना व्यवस्थित पाया उपरना मानसशास्त्र, शिक्षणशास्त्र व्यवहारशास्त्र शक्या शक्यतानी तुलना, मौलिकता, अने पात्रनी आवश्यकता विगेरेना मापपूर्वक समतुलित छे. माटे क्रियाओ एमने एम चाली पडेल वस्तुओ नथी. आ बधु' व्यवस्थित ध्यानमां लेवाथी आवी पुस्तिका लखवानु' मन पण न थाय तेम छे. **चरणानुयोग** कोई अध्धर बाजोनी वस्तु नथी. ए दरेक सचोट ख्यालमां राखवा जेवी बाबत छे. जे कोई वगर समज्ये क्रिया उपर घा करवा बेसी जाय छे, ते तेओनी गंभीरमां गंभीर गेर समज छे. तेनी साथे पण जब्बरजस्त हेतुवाद, कार्य कारण भावनी सांकल गोठवायेली छे. ए कोई काचा सुतरनो तांतणो नथी, के—झट लईने तोडी नांखी शकाय, तेनी पाछल असाधारण बुद्धि पूर्वकनी योजनाओ छे. ते पण वज्र जेवी मजबुत सोनानी सांकल छे. खरी रीते तो आजे जडवादी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवाहना प्रवाहको तरफथी इरादापूर्वक साचा-खोटा निमित्तो उभा करीने धर्म अने आध्यात्मिक सरणि उपर मर्मन्न आघातो करवामां आवे छे. तेना हेतु अने परिणामो समजीने तेना प्रामाणिकता पूर्वकना प्रतिकारमां बुद्धि अने मन वचन कायानी शक्ति रोकवानी तक आपणा उपर सवार थईने बेठी छे. ते करवाने बदले तेने सीधी रीते के आडकतरी रीते टेको आपे तेवी प्रवृत्तिने स्पर्श पण केम करी शकाय, सविशेष शक्ति होय तो जडवादनो प्रचार करवामां रस लेता जडवादी मानसने पण स्पर्श करीने तेमने पण आत्मवादी बनावी तेना आत्मानुं पण कल्याण थाय तेवा प्रभावक प्रयास करवा ए धर्मगुरु तरीकेना कार्य क्षेत्रमां समावेश पामे छे. जैन शासन जेवुं विश्वरक्षक शासन जयवंतुं विद्यमान होवा छतां, विश्वना षड्जीवनिकायना सर्व प्राणीओना रक्षणना महा प्रतिक समान रजोहरण सूरायमान छतां, हृदयमां सर्वजीवोना रक्षणनी सदा जाग्रत दया भावना होवा छतां, शुक्ल लेश्यामय सर्वथा अहिंसक निर्दोष जीवन जीववां छतां रजोहरणनी सामे बंदुक के-तोपो-अणु अने हाइड्रोजन बोम्बो विगेरे संहारना भयंकर अनार्य हिंसाना प्रतिको पोतानो प्रभाव आजे विस्तारी रह्या छे. ते बनीज केम शके ? त्यां सुधी जैन साधुतानुं तपस्तेज पहोंचाडी भुवनत्रय रक्षण क्षमत्व विरुद्धनी सफलता करवानी आवश्यकता उभा थई छे. परन्तु तथा प्रकारनुं सामर्थ्य नहोय तो धर्मनिष्ठ अने धर्मने माननारा लोकोनी श्रद्धा अने चारित्र्यनुं रक्षण करवुं, ए तो एक सामान्य फरज थई पडे छे. तेमांथी लोको चलित थाय, तेनो महा अनिष्ट गणाय. अमारी आशुभेच्छाओ अने भली लागणीओ जिनपूजा पद्धतिना लेखक पन्यासश्रीने केटला स्पर्शी शकशे ते अमे कही शकता नथी. परन्तु अमे हार्दिक रीते जरूर इच्छीए, के-अमारी शुभेच्छा पूर्ण हार्दिक अवाज तेओना हृदयने स्पर्श करे, अने आजन्ममां प्राप्त थयेली उत्तमोत्तम सामग्रीनो सुन्दर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाभ उठावी आत्म हीत साधे. तेमां वधारे ने वधारे रस लई स्वपर कल्याणमां वधारे सावध थाय. जेम बने तेम रागद्वेषनी परिणति ओछी थाय अने धर्म, शासन, शास्त्र, पूर्वाचार्यो, तीर्थङ्कर प्रभु विगेरे तरफनी वफादारी जालववामां आव. ते वफादारी जालववा जतां अमारे कोई बाबतनी न छुटके टीकाओ करवी पडे छे. परन्तु ते अमारी इच्छानी वस्तु नहती. कांटाथी बचवा कांटानी तीक्ष्णता समजाववी पडे. तेमां कांटानी निंदा करवानो आशय कल्पवामां प्रामाणिकता नथी. तेम छतां बीन जरूरी कोईपण दिल दुःखावनारी एवी सवास्तविक बाबत अजाणतां पण अमारा लखाणमां आवी गई होय तो ते बाबत अमारी तरफथी मिच्छामि दुक्कडम् देवुं जरा पण अनुचित नथीज. अमे तो इच्छीए छीए के—त्रणलोकना नाथ जेना नाथ छे, एवा विशिष्ट गृहस्थोना गुरु शासननी शोभामां, जैनधर्मनी महत्तामां, तेनी प्रभावनामां, तन-मन-वचन अने सर्व शक्तिथी परोवाई स्वपर कल्याण साधो. ए शुभ अभिलाषा साथे विरमीए छीए.

॥ इति शान्तिः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनेश्वर देवनी पक्षालपूर्वक नित्यपूजाने अंगे

❁ अति प्राचीन शास्त्र प्रमाण ❁

संग्रा० श्री शांतिलाल मणिलाल शाह—अमदावाद.

श्री जैन श्वे० मू० पू० समस्त संघमां श्री जिनेश्वरदेवनां पूजननी एक सरखी पद्धति प्राचीन कालथी सुविहित परंपरामान्य चाली आवे छे, आ प्रणालिकाने वर्तमानकालीन सर्व गीतार्थ पू० आचार्यदेवोए मान्य ठरावेल छे, छतां तेने अशास्त्रीय कहेवानो आजे जेओ बालिश प्रयत्न करी रह्या छे, तेनी सामे अति प्राचीन प्रमाण भाई श्री शांतिलाल शाह अहिं योग्य पीठिका पूर्वक रजु करे छे, जे सर्वकोई विचारकोने मार्गदर्शन आपवा उपरांत श्रद्धामां स्थिर करनार बनी शकशे, ए निःशंक छे.

★★

श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक सकल श्री जैनसंघमां श्री जिनेश्वरदेवनां पूजननी एकसरखी पद्धति हालमां दरेक ठेकाणे थई रही छे, अने ते पद्धतिने वर्तमानना सघलाय गीतार्थ पू. आचार्यदेवो वहाली आपी रह्या छे. प्राचीन सघलाय महापुरुषोए प्रसंगे प्रसंगे श्री जिन पूजन-पद्धतिनुं सुंदर ब्यान करेलुं छे. एनेज आधारे वर्तमान सकल श्री जैनसंघ दररोज श्री जिनेश्वर-देवनुं द्रव्य अने भावथी पूजन करे छे.

आ पडता कलिकालमां आवा निर्मल अनुष्ठान सामे-तेनी शास्त्रशुद्ध पद्धति सामेय वांधा उठाववामां आवे छे, ए खेदजनक अजब जेवी हकीकत छे, अने वांधो उठावनार ज्यारे एम कहे छे के—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'छेल्ला हजार-वर्षथी तो आ पद्धतिए जिनपूजन करवाना प्रमाणो पण मले छे, पण तेनाथी प्राचीन कोई प्रमाण मलतुं नथी' त्यारे आपणने खूब दुःख साथे कहेनार प्रत्ये केवल करुणा उपजे छे. सीधी-सादी वात छे के-वर्तमानमांय कोईपण भवभीरु गीतार्थ आचार्यादि मुनिवरो जे वस्तु शास्त्रमां न होय ते प्रतिपादन करताज नथी, तो पछी एक हजार वर्षनी आटली विशाल पू० गीतार्थ गुरुदेवोनी परंपरा शुं जे वस्तु शास्त्रमां न होय ते कदापि प्रतिपादन करे? अगर चलावा पण दे?

पू० कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्रसूरिजी महाराज, पू० नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरिजी महाराज, पू० श्री देवेन्द्रसूरिजी महाराज, मल्लधारी पू० श्री हेमचंद्रसूरि महाराज, जगद्गुरु पू० श्री हीरसूरिजी महाराज, प्रखर-विद्वान पू० न्यायाचार्य उ० श्री यशोविजयजी महाराज, पू० श्री पद्मविजयजी महाराज, पू० श्री रूपविजयजी महाराज, पंडितवर्य पू० श्री वीरविजयजी महाराज, पू० श्री आत्मारामजी महाराज (श्री विजयानंदसूरिजी म०) आदि सघलाय महापुरुषो जे वस्तु रजु करे छे, ते शास्त्रमां न होय तं वनेज केम ? आ तो मात्र सामान्य बुद्धिनो सवाल छे. वली 'आ महापुरुषोए नवीज वस्तु प्रतिपादन करी छे' एम कहेनार खरेखर बालिश साहस करे छे अने सकल श्री संघनो तथा सुविहित परंपरानो अपराध करे छे.

जो थोडी बुद्धि--शक्तिना योगे समाजमां आवी व्यक्ति कांईक आदर पामेल होय छे, तो ते व्यक्ति समाजने वधारे नुकशान-कारक नीवडे छे. तेनाथी केटलाक भद्रिक जनो दोरवाई जाय छे अने हित-शत्रुओंने हाथो मली जाय छे.

आवा विकट प्रसंगे श्रद्धावंत पुरुषोए खूबज सावध बनी जवु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोईए. आपणा माटे तो आवी विशाल परंपरानी अबाधित आचरणा अने कलिकालसर्वज्ञ पू० श्री हेमचंद्रसूरिजी महाराज अने पू० उ० श्री यशोविजयजी म० जेवा युगंधर पुरुषोना टंकशाली वचनो पूरता प्रमाणरूप छे ज, छतांय तेथीय प्राचीन प्रमाणो बनी शके तेटला शोधी-शोधीने जाहेर करवा जोईए, जेथी आवा प्रचारकोनी भ्रामक जालमां भद्रिक जनता भोलवाय नहि. आवाज आशयथी एक अति प्राचीन ग्रंथमांथी 'जिनपूजन' अंगेनी गाथाओ हुँ रजु करुं छुं. निष्पक्ष विद्वानो तेना उपर पूरतुं ध्यान आपे.

श्री दृष्टिवादादि समुद्धृत श्री स्तवपरिज्ञांतर्गत प्रतिदिन जिनपूजा कर्त्तव्यता विधि सूचक गाथाओ.

(श्री पंचवस्तु अने स्वोपज्ञ प्रतिमाशतकना आधारे)

तत्तोय पइदिणं सो करिज्ज पूअं जिणि दठवणाए ।
विभवाणुसार गुरुइं काले णियंयं विहाणेणं ॥३०॥

भावार्थ—त्यारबाद एटले प्रतिष्ठा थया बाद, श्रावक श्री जिनेन्द्र-प्रतिमानी हंमेशा वैभवने अनुसारे, विधिपूर्वक उचित द्रव्य-व्ययथी अने योग्य समये पवित्र थई पूजा करे. ३०

जिणपूआइ विहाणं सुइभूओ तीइ चेव उवउत्तो ।
अण्णं गमच्छिवंतो करेइ जं पवरवत्थूहिं ॥३१॥

भावार्थः—जिनपूजानुं विधान आ मुजब छे. स्नानादि वडे पवित्र थई, पूजाने विषे उपयोग युक्त बनी पोताना अन्य अंगोनो स्पर्श न थाय ए रीते श्रेष्ठ एवा सुगंधी केंसर-चंदन-जल पुष्पादि वस्तुओ वडे पूजा करे. ३१

सुहगंध धूव पाणिय सव्वोसहिमाइएहिं ताहवणं ।
कुंकुमगाइविलेवण-मइसुरहि मणहरं मल्लं ॥३२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः—शुभगंधयुक्त धूप, जल अने सर्वौषधि आदि वडे पूजा करे, प्रथम स्नपन करे, पछी कुंकुमादि (केसर) नुं विलेपन करे, त्यारबाद अति सुगंधो अने देखावमां मनोहर एवा पुष्पोनी माला वडे पूजा करे. ३२

विविह निवेअणमारत्तिगाइ धूव थय वंदणं विहिणा।
जहसत्ति गीतवाइअ णच्चण दाणाइअं चेव ॥३३॥

भावार्थः—विविध प्रकारनां नैवेद्य, आरती, धूप, विधिपूर्वक चैत्यवंदन तथा शक्ति मुजब गीत, वाजिंत्र, नृत्य, दान अने उचित स्मरण वगेरे करवां. ३३

विहियाणुट्ठाणमिणंति एवमेयं सया करिंताणं ।
होइ चरणस्स हेउ णो इहलोगादवेक्खाए ॥३४॥

आ अनुष्ठान शास्त्र-विहित छे, एम चित्तने विषे धारण करीने निरंतर करनाराओने ते चारित्रनो हेतु थाय छे. आ लोकना सुख के कीर्ति आदिनी अपेक्षा राख्या विना करवाथी विशिष्ट पुण्य अने निर्जरानो हेतु थाय छे. ३४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनपूजा पद्धति की समालोचना

('कल्याण' दिसम्बर, १९५६ से उद्धृत सारांश)

व

('कल्याण' मार्च १९५७ में प्रकाशित लेख की प्रतिलिपि)

भगवान श्री जिनेश्वरदेव का उपकार समस्त संसार पर अनन्त है वर्तमान अथवा भूतकाल में जिन आत्माओं को आत्म-कल्याण करने का श्रेय प्राप्त हुआ है उन सबके साक्षात् अथवा परम्परा में जो कोई उपकारक हैं तो वे केवल श्री तीर्थङ्कर परमात्मा हैं। उनके उपकारों की कोई अवधि नहीं है। ऐसे निष्कारण उपकारी देवाधि-देव की सेवा उपासना करनी प्रत्येक कृतज्ञ आत्मा का पवित्र कर्त्तव्य है। देव देवेन्द्र भी श्री तीर्थङ्कर परमात्मा की भक्ति कर अपने को कृतकृत्य मानते हैं। वे तीर्थङ्कर देव साक्षात् आज यहां विचरते नहीं। अतः उनकी साक्षात् भक्ति करने का निमित्त हमें यहां प्राप्त नहीं है। परन्तु उनके उपकारों की अनुपम स्मृति देदीप्यमान रहे इस हेतु उनकी पुण्य प्रतीकरूप उनकी प्रतिमा की पूजा भक्ति उपासना द्वारा उन अनन्त उपकारी जिनेश्वर भगवन्तों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी प्रत्येक धर्मशील आत्मा का कर्त्तव्य है।

यह पूजा नित्याचार रूप श्रावक वर्ग के लिये पूर्वकालीन समर्थ सुविहित प्रकांण्ड पंडित महापुरुषों ने धर्म ग्रंथों में विहित की है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे ठोस सत्य की अपने पांडित्य के गर्व में मस्त बन कर कई जैन समाज में रहे हुए विद्वान् अवहेलना करने का प्रयत्न कर रहे हैं, यह कैसी शोचनीय दशा है !!

नित्य पूजा की प्रमाणिकता के लिये पूज्यपाद याकिनी धर्मसूनु आचार्य महाराज श्री हरिभद्रसूरिजी महाराज के पंचाशक ग्रंथ का उल्लेख स्पष्ट है। पूजा पंचाशक के चौथे पंचाशक में १४वीं गाथा में आप श्री फर्माते हैं:—

गंधवरधवसव्वो सहीहिं, उदगाइएहिं चित्तेहिं।
सुरहिविलेवण वर कुसुमदाम बलि दीवए हि ॥

इस गाथा की टीका में पूज्यपाद नवांगो वृत्तिकार आचार्य महाराज श्री अभयदेवसूरिजी महाराज स्पष्टतया वर्णन करते हैं।

"*तथोदकादिभिर्जलप्रभृतिभिः..........पूजाजिनबिंबस्य ।*

यह उल्लेख भी जिन पूजा में जलादि का विधान दर्शाता है और ग्रंथ का समग्र संदर्भ तथा पूजा पंचाशक का सारा प्रकरण ही नित्य कर्त्तव्य का निर्देश करता है।

इसी प्रकार पूज्यपाद कलिकाल सर्वज्ञ आ० मा० श्री हेमचन्द्र-सूरीश्वरजी महाराज योग शास्त्र के तीसरे प्रकरण में वर्णन करते हैं:-

शुचिः पुष्पामिषस्तोत्रै र्देवमभ्यर्च्य वेश्मनि ।
प्रत्याख्यानं यथाशक्ति कृत्वा देवगृहं व्रजेत् ॥१२३॥

इस श्लोक की स्वोपज्ञ टीक में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है कि—

अत्र च स्नान विलेपनवर्णक विशिष्टवस्त्राभरणालंकार-प्रभृतिनां स्वतः सिद्धाना नोपदेशः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसी प्रकार पूज्य आचार्य महाराज श्री देवेन्द्रसूरिजी कृत चैत्यवंदन भाष्य की वृत्ति संघाचार भाष्य में नित्य पूजा के लिये अनेक ग्रंथों के उल्लेखपूर्वक अष्टप्रकारी पूजा का स्पष्ट विचार फरमाया है तथा धर्म संग्रह, श्राद्धविधि, श्राद्धदिनकृत्य आदि अनेकानेक प्रामाणिक शास्त्र ग्रंथों के उल्लेख नित्य पूजा तथा नित्य अष्टप्रकारी आदि पूजा का स्पष्टतापूर्वक विधान करते हैं।

'श्री पंचाशक' के पाठ के सम्बन्ध में अनजान लोगों को गड़बड़ में डालने के उद्देश्य से गोलमोल समाधान किया है, जिसमें कोरी अपनी कल्पना ही दौड़ाई है। ऐसा करके उन्होंने यही सिद्ध किया है कि वे स्वयं जैन शासन के रहस्य से अनभिज्ञ हैं। 'श्री पंचाशक' को पूजाविधि का ग्रन्थ न मान कर एक निबन्ध-प्रबन्ध-ग्रन्थ मनवाना चाहते हैं; किन्तु स्वयं ग्रन्थकार महाराज ने उसके लिये पूजाविधि शब्द का प्रयोग किया है—

नमिऊण महावीरं जिणपूयाए विहिं पवक्खामि।
(चौथापचाशक, गाथा १)

अर्थात्—'श्री महावीर प्रभु को नमस्कार करके जिन पूजा की विधि कहता हूँ।'

इस प्रकार पूजा-विधि शब्द स्पष्ट होने पर भी वह विधि ग्रन्थ नहीं; किन्तु प्रबन्ध ग्रंथ है' ऐसा कहना कितना असत्य है! निबन्ध या प्रबन्ध ग्रन्थ हो और उसमें विधि का निरूपण किया जाय तो भी उस विधि को प्रमाणभूत क्यों न माना जाय।

आगे चल कर उसी पंचाशक की तीसरी गाथा में 'यथाकाल पवित्र होकर विशिष्ट पुष्पादिक से विधिपूर्वक उत्तम स्तुति-स्तोत्र से गौरव वाली जिन-पूजा करनी चाहिये।' इस प्रकार गाथा में ही द्वार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कह कर, स्वयं गाथाओं में ही प्रत्येक का विवेचन किया गया है। वहां फिर से विधि पूर्वक पूजा करने का विधान किया है और संक्षेप में विधि बतलाई है। फिर भी 'विधि ग्रन्थ नहीं है' ऐसा किस आधार पर कहा जाता है ?

उसमें 'काले' शब्द का अर्थ तीन संध्या किया गया है। (गाथा ५वीं) यह तीन संध्याएँ किस दिन की लेनी चाहिये ? प्रति दिन की या पर्व दिन की ? 'उत्सर्ग से पूजा रोज करनी चाहिये, इतना ही नहीं, पर तीनों संध्याओं में करनी चाहिये; अर्थात् त्रिकाल पूजा प्रति दिन करनी चाहिये' ऐसा कहते हैं। साक्षात् पाठ का भी अर्थ छिपा कर शास्त्रार्थ करने का ढोंग दिखलाना उचित नहीं कहा जा सकता।

'इसके अतिरिक्त आजीविका का विरोध न करके अपवाद रूप में आगे-पीछे भी पूजन की जा सकती है; फिर भी किसी समय ऐसी स्थिति आ जाय कि पूजा न की जा सके, तो कुछ अभिग्रह रखना चाहिये। ऐसा करने से कदाचित् पूजा न की जासके तो भी नित्य पूजा करने का भाव टिका रह सकता है।' इस प्रसंग में 'णिच्चं तक्करणभावोत्ति' साक्षात् 'नित्य' शब्द दिया हुआ है। इस पर क्यों नहीं ध्यान दिया गया ?

पूजा के द्रव्य १४वीं और १५वीं गाथा में गिनाये गये हैं। वे सर्वोपचारी पूजा के ही हैं ? ऐसा आपका कहना है ? तो सर्वोपचारी पूजा का भी प्रति दिन का विधान, श्री पंचाशक के पाठ से, बारहवीं सदी के पहले का सिद्ध तो जाता है। तो फिर पंचोपचारी और अष्टोपचारी का तो पूछना ही क्या है ! श्री षोडशक में क्या नियत शब्द, श्री पंचाशक का काले शब्द और उसका तीन संध्या अर्थ तथा णिच्चं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द आदि शब्द मूल गाथाओं में ही विद्यमान होने पर भी 'उसमें नित्य पूजा की बात नहीं है' ऐसा कहना या तो दुराग्रह है या ग्रन्थ का अर्थ लगाने में कोई प्रमादजन्य भूल है। आठवें प्रतिष्ठा पंचाशक की गाथा २९–३० वीं का उल्लेख करके पाठकों को भ्रमणा में डालने का प्रयास करना वास्तव में खेदजनक है; क्योंकि वहां प्रतिष्ठा का प्रसंग होने से प्रत्येक चीज ऊंचे प्रकार की लेने को भलामण है। उससे रोज की सर्वोपचारी पूजा में क्या विरोध आता है?

इस प्रकार व्यर्थ परम्परा–विरोधी भाव खड़ा करने में प्रामाणिकता नज़र नहीं आती और इसीसे 'कल्याण' मासिक में श्री पंचाशक की गाथाओं के विरोध में लिख कर जो बचाव किया गया है, वह जरा भी उचित और सत्यस्पर्शी नहीं है; यह बात पाठकों को भलीभांति समझ लेनी चाहिये।

श्रीमहानिशीथ और श्री महाकल्प के पाठों के विषय में आपके पास कुछ भी समाधान हो, उससे हमें कोई सरोकार नहीं। जब गीतार्थ महापुरुष आप से स्पष्टीकरण मांगें तो आप भले करें। इसी प्रकार इन दोनों ग्रन्थों के विषय में भी आपको कुछ भी कहना हो, उससे हमें मतलब नहीं है। मात्र 'सिद्धचक्र' में के वे पाठ इन दोनों सूत्रों में के हैं या नहीं? कदाचित् उसमें पाठ-भेद होगा, पर उसमें न्हवण–विलेपन, विलेपन तथा प्रतिदिन और त्रिसंध्या शब्द हैं या नहीं? इतने शब्द जो 'सिद्ध-चक्र' में पढे जाते हैं, वे यदि कल्पित घुसेड़ दिये गये हैं तो आप प्रमाण–पूर्वक बतलाइये, जिससे उसे मानने के सम्बन्ध में विचार किया जाय? अन्यथा इस सम्बन्ध में कुछ भी चर्चा करना शेष नहीं रहता। यह दोनों सूत्र १२वीं शताब्दी से पहले के हैं या नहीं? बस इतने ही प्रश्नों का प्रस्तुत विषय के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथ सम्बन्ध है। इसका खुलासा करने की आपसे प्रार्थना है । नई अप्रस्तुत बातें खड़ी करने की आवश्यकता नहीं।

सामान्य जनता की समझ में आजाय, इस तरह से, स्पष्टता के साथ, जगह-जगह के पाठ देख कर और उससे विरोध के उसी स्थल के प्रमाण देकर कृपा करके समझायेंगे तो साधारण पाठक समझ सकेंगे कि आपका कथन कितना सत्य है और कितना नहीं ?

आडम्बरपूर्ण खण्डन-मण्डन से लोग गड़बड़झाले में पड़ जायेंगे और निरर्थक वितन्डावाद बढ़ जायगा। यदि आपश्री की ऐसी इच्छा नहीं है तो बहुत सरलता से सच्ची बात स्वीकार कर लेना चाहिये और चर्चा को जटिल न बना कर, जल्दी ही निर्णय करके उसे समाप्त कर देना चाहिये। व्यर्थ नवीन-नवीन फुनगियां खड़ी करके चर्चा का बवण्डर खड़ा करके अपनी रक्षा की कोशिश नहीं करनी चाहिये।

संक्षेप में—श्रीपूजापंचाशक, श्रीषोडशक, श्रीप्रतिष्ठापंचाशक और दोनों आगमों के आपके समाधान अब तक सर्वथा अर्थशून्य और निष्फल हैं। ऐसा आपको भी प्रतीत होने लगेगा।

लेखक—प्रभुदास बेचरदास पारख
कलकत्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"नित्य प्रक्षाल" के बारे में पूज्यपाद आचार्यश्री विजयदर्शनसूरीजी महाराज का स्पष्टीकरण:-

पूज्याश्री हरिभद्रसूरि भगवान्—१४४४ ग्रन्थकर्त्ता—स्वकृत

पंचाशक ग्रन्थ में—चतुर्थ ४ पंचाशक में १४मी गाथा—अथ विशिष्ट पुष्पादिभिरित्येतद्द्वारप्रतिपादनायाह—

गंधवरधूप-सव्वोसहीहिं-उदगाइएहिं चित्तेहिं ।
सुरहिविलेवण-वरकुसुमदाम-बलि-दीवएहिं च ॥१४॥
सिद्धत्थय-दहि-अक्खय-गोरोयणमायरेहि जह लाभं ।
कंचण-मोत्तिय-रयणाइ दामएहिं च विविहेहि युग्म ॥१५॥

अर्थ—गन्ध प्रधान धूप (कृष्णागरु प्रभृति सुगंधि द्रव्य निर्मित्त धूप से) १—सवौषधि से २-जिनपूजा होती है उदकादि से-जल से आदि शब्द से-शेरडी रस घृत-दुग्धादि से विविध प्रकार से पूजा होती है । ३

सुरभि-विलेपन—(सुगन्धि श्रीखंडा धनुलेपनम्-(चन्दन = सुखड) आदि से विलेपन) पूजा होती है ।

वरकुसुमदाम—प्रधानपुष्पमाला-बलि-दीप से जिनपूजा होती है।

दूसरी गाथा का अर्थ—सिद्धार्थक-सरसव-(सर्षप) दधि-(दही) अक्षत-(तंदुल) गोरोचन आदि से संपत्ति अनुसार जिनपूजा होती है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांचन-मौक्तिक-रत्नादि मालादि विविध प्रकार से जिनपूजा करने योग्य है ।

अथ कस्माद्विशिष्ट पुष्पादिभिरेवं पूजा विधायते इत्याशंक्याह-विलक्षण-अपूर्वपुष्पादि से क्यों पूजा करना । यह शंका दूर करने के लिए नीचे की गाथा कहते हैं—

पवरेहिं साहणेहिं पायं भावो विजायए पवरो ।
ण य अन्नो उवओगो एएसिं सयाण लट्ठयरो ।। १६ ।।

प्रवरैः साधनैः—पूजा का कारण उत्कृष्ट द्रव्यों से—प्रायः भाव-मनोविशुद्धि-प्रवर-श्रेष्ठ होता है ।

वर-गंध-धूप-चोक्ख-खएहिं कुसुमेहिं पवरदीपेहि ।
नेवेज्ज-फल-जलेहिं य जिणपूआ अट्ठहा होइ ।।

(वर-गंध-धूप-चोक्षाऽक्षतैः कुसुमैः प्रवरदीपैः । नैवेद्य-फल-जलैश्च जिनपूजा अष्टधा भवति—संस्कृत छाया)

सकलजन को आनन्द देने वाली अर्हद्भगवत की अष्टप्रकारि पूजा श्रावको को प्रतिदिन करने योग्य है सो बीना तो प्रसिद्ध है ।

महाप्राचीन प्रवचन सारोद्धार ग्रन्थ में नन्दीश्वरद्वीप-२६९ द्वार में नीचे की गाथा है ।

"इय बावन्न-गिरी-सर-सिहरट्ठिय-वीयराय बिंबाणं ।
पूयणकए चउव्विह देव निकाओ समेइ सया" ६१

उसकी टीका—इयेत्यादि-इति-प्रागुक्तप्रकारेण द्विपंचाशत्संख्य-गिरीश्वर शिखरेषु स्थितानां वीतराग बिंबानां पूजा कृते चतुर्विधो भवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क-वैमानिक लक्षणो देवनिकायः सुरसमूह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

. CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदा सर्वकालं समेति-विशेषार्थिना च जीवाभिरामादि शास्त्राणि परिभावनीयानि—

अंचनगिरि में चार दिशाका बावन-५२-शिखर में बिराजमान वीतराग बिंबों को पूजा निमित्त चार प्रकार का भुवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क-वैमानिक देव समुदायक (एक देव नहीं किन्तु अनेक देव) सर्वकाल-प्रतिदिन (एक भी दिन देव न आवे ऐसा नहीं) आता है—इस गाथासे अष्टप्रकारादि पूजा प्रतिदिन देव करते हैं—वीतराग प्रतिमा किसी दिवस अपूज्य रहेती नहीं है ऐसा सिद्ध होता है—

नंदीश्वर द्वीप स्थित (बावन ५२) जिन मन्दिर का प्रतिरूप बावन जिन मन्दिर की स्थापना कोई भी नगर में भक्तिभाव से श्रावकने किया उसको वासक्षेप मात्र से पूजा करने का विधान किया जावे तो श्री सिद्धगिरिजो तीर्थ आदि तीर्थ में शाश्वत मेरुपर्वत की रचना दृष्टिगोचर है, वहां भी मेरुपर्वत स्थित प्रभु प्रतिमा का भी वासक्षेप मात्र से पूजा होनी चाहिए—वह होता नहीं किन्तु जल केसर-पुष्पादि से पूजा होती है—अष्टापद तीर्थ की रचना अनेक तीर्थ-राजनगर (अहमदाबाद) आदि गामों में है उसकी भक्ति वस्त्र वासक्षेप से उसका मत प्रमाणे पूजा होना चाहिए उस विषय में रुबरु में विशेष चर्चा हो सके-सुनने में आया है कि जालोर (राजस्थान) में नंदोश्वरद्वीप की रचना की है, उसमें केवल वासक्षेप से पूजा विधान किया है सो ऊपर लिखे हुए पाठ से अप्रमाणिक सिद्ध होता है—

बृहद्भाष्यपाठश्चैवम्—

अंगप्रक्षालन-विलेपन-आभरण-वस्त्र-फल-गंध-धूप पुष्पैः कर-एह-विलेवण-आहरण-वत्थ-फल-गंध-धूव-पुप्फेहिं । करोति जिनांग पूजा करिइ जिणंगपूआ ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्नोत्तर शत विंशिका

लेखकः—पु० पा० आचार्य महाराज श्रीमद्विजय जम्बूसूरीश्वरजी

प्रकाशकः—आर्य जम्बूस्वामी जैन मुक्ताबाई ज्ञान मन्दिर तरफ से
जयंतीलाल बापुलाल शाह डभोई—गुजरात

प्र० ६१—कई प्राचीन और वर्तमान पूजा पद्धति में परिवर्तन बतलाते हैं, क्या यह सच है ?

उ०— लेखक की बुद्धि भ्रम का दोष है। नितान्त मिथ्या है। इतिहास के नाम से डार्विन के बन्दर से मनुष्य बनने जैसी शोध है। अतः लेखक की खोज प्रमाणिक माननी संभव नहीं है।

प्र० ६२—नित्य प्रक्षाल के स्थान लेखक की कल्पना जो आज प्रभुजी के समक्ष खाली पानी का लोटा रख दिया जाए तो चन्दन केसर और पुजारियों का बहुत भार कम हो जाए ? क्या यह ठीक है ?

उ०— तब तो लेखक की कल्पनानुसार मन्दिर को ग्राम नगर से बिदा कर जंगल में विराजमान कर देना चाहिये अथवा वहां से भी हटा कर पूजाभिलाषी के मन में ही स्थापित कर दिया जाए तो बहुत भार से छुटकारा हो जायगा। क्या ऐसा करना है ?

प्र० ६३—न, न ऐसा तो नहीं हो सके।

उ०— फिर तुम जैसा कहते हो वैसा करना भी संभव नहीं। आज जब मनुष्य खान-पान, वेश-भूषा, शिक्षा, कला, उद्योग सब में ही आगे बढ़ रहा है तब भव्यात्मा पूर्वा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार्यों की विधि अनुसार पूजा भक्ति करते रहें तो इसमें क्या कठिनाइ है।

प्र० ६४—पुजारियों आदि के खर्च की कठिनाई आती है?

उ०— यह तो "जूं हो गई है अतः वस्त्र त्याग दो" जैसे बात करते हो। मनुष्य विवाह करता है, उसके सन्तान उत्पन्न होती है तब सन्तान के पालन पोषण शिक्षण, आजीविका यावत् राजतंत्र तक अनेक प्रकार की उपाधियां खड़ी हो जाती हैं। इस कारण यदि आज कोई इन सबको मिटा देने की बात करे तो उसे पागल ही समझा जाएगा अतः खर्च की कठिनाई दूर करने के लिए तो पूजा भक्ति करने वालों को उपदेश देना चाहिये परन्तु नित्य प्रक्षाल की शास्त्रीय प्रणाली पर कुठाराघात करना योग्य नहीं।

प्र० ६५—"पंचोपचारी पूजा के शास्त्र पाठ तो प्राचीन हैं परन्तु अष्टोपचारी पूजा के शास्त्र पाठ पीछे के समय के हैं" ऐसा कहते हैं, क्या यह बात सत्य है?

उ०— ऐसा कथन भी उस लेखक की एक साइंस मात्र है। श्री महानिशीथ पंचाशकजी, योगशास्त्र आदि शास्त्रों के पाठ और उनकी टीका आदि का यदि लेखक ने सर्वांत्र अवलोकन किया होता तो किसी को 'अर्वाचीन समय का गतानुगतिक' और किसी को 'कूट कल्पित' आदि लिखने अथवा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए दूसरा छिपाने या अर्थ बिगाड़ने का दुस्साहस न किया होता।

प्र० ६६—तब कोई पंचोपचारी, कोई अष्टोपचारी, कोई सर्वोपचारी कोई नित्य अथवा कोई प्रासंगिक पूजा करे तो इसमें शास्त्र विधि से मुझ बाधा प्रतीत नहीं होती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उ०— तुम्हारा विचार ठीक है। जिसकी दूध पाक के भोजन को शक्ति और रुचि है वह उसे भले नित्य करे। इसमें निषेध का कोई स्थान रहता हो नहीं। इसी प्रकार शास्त्रों में प्राचीन काल से नित्य प्रक्षाल पूजा की विधि भी स्पष्ट दीपक तुल्य है।

प्र० ६७—परन्तु इससे हमें भगवान् का अरिहंत स्वरूप तो दिखाई नहीं देता। कोई तो लिखता है कि "राज्य करतो युवती का स्वरूप दिखाई देता है" इसका क्या उत्तर है ?

उ०— युवती शब्द लिखने वाले की आंख में कंवल रोग प्रतीत होता है। मन के भयंकर दुर्भाव बिना ऐसे शब्द श्री वीतराग देव की प्रतिमा के बारे में लिखे ही नहीं जाएं। ऐसा लिखने अथवा बोलने वाले को भवान्तर में जिह्वा अथवा हाथों का अभाव रहे तथा महादुर्लभबोधिपन की प्राप्ति हो यह भूलना नहीं चाहिए। यद्यपि भगवान् को यह पूजा भगवान् की राज्यावस्था से सम्बन्धित है तथापि इस पूजन में श्री वीतराग देव की मूर्ति तो तदवस्थ रहती है। श्री वीतराग देव की विभिन्न अवस्थाओं की भावना किस प्रकार चिन्तवन करनी चाहिए इसका विवेक शास्त्रकारों ने सुन्दर रूप से दर्शाया है। कैसी भी आंगी हार मुकुट आदि की रचना की हो परन्तु दर्शन करने वाले आबाल गोपाल स्त्री को पूछो कि किसके दर्शन कर रहे हो ? सब यही कहेंगे कि श्री वीतराग देव के। कोई भी राजा का दर्शन किया, ऐसा नहीं बोलेगा। यह तो ऐसे भ्रति पंडितों का एक भ्रममात्र है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्र श्री श्रमण संघ का गुजराती में है उसका हिन्दी अक्षरों में अनुवाद

डहेलानो उपाश्रय
राजनगर (अहमदाबाद)
कार्तिक सुदी १० सं० २०१५

राजनगरस्थ श्री श्रमण संघ तरफथी.

देवगुरुभक्तिकारक, धर्मानुरागी, सुश्रावक
श्री राजस्थान जैन संस्कृति रक्षक सभा, ब्यावर
योग्य धर्मलाभ !

तुमारा पत्र मिला—

जालोरना 'श्री नंदीश्वर द्वीप' देरासरमां नित्य अभिषेकादि पूजा बंध छे. जे ठीक नथी. शास्त्रोमां श्री जिनेश्वर देवना बिंबनी नित्य अभिषेकादि पूजा विहित छे. माटे पूजा चालु रहेवी जोईए.

(सही) विजय हर्षसूरी धर्मलाभ.

(१) (आ० विजयनितिसूरी महाराज और डहेला का उपाश्रय वाले)

(२) विजय प्रेमसूरि
(स्व आ० विजय दानसूरि महाराज के समुदाय)

(३) विजय पद्मसूरि
(स्व. आचार्य वि०नेमिसूरिजी म० का समुदाय)

(४) विजय मनोहरसूरि
(आ० श्री सिद्धिसूरीजी महाराज के समुदाय)

(५) उपाध्याय देवेन्द्रसागर
(स्व. आ० श्री सागरानन्दसूरीजी म० का समुदाय)

(६) उ० कैलाशसागरजी
(आ० श्री बुद्धीसागरजी महाराज का समुदाय)

(७) मुनि खान्तिविजय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य श्री वि० उमंगसूरीजी महाराज के पत्र की नक़ल

मु० कपड़वणज (गुजरात)
वाया नड़ीयाद
पंचनो उपाश्रय
ता० २६-१०-५७
मंगलवार

धर्मलाभ !

आ० म० वि. उमंगसूरिजी म० तथा पंन्यास म० उदयविजय गणीना तरफथी देवगुरु भक्तिकारक सु श्रावक राजस्थान जैन संस्कृति रक्षक सभाना मुख्य कार्यवाहक सेठ शंकरलाल मुणोत आदि जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ योग्य धर्मलाभनी साथे लखवानु के "जैन पूजा पद्धति नामनु पुस्तकना लेखकना संबंधी पत्र तुमारो मल्यो बांची समाचार जाणया ए विषयमा तुमा अमाने पुछो छो तो अमारो अभिप्राय आगमानुसार जैन शास्त्रोक्त त्रिकाल जिनेश्वर भगवाननी पूजा सर्वमान्य सिद्ध छे जैन पूजा पद्धति नामनु पुस्तक संबंधमां अमारो विरोध छे त्रिकाल जिनेश्वर भगवाननी पूजा शास्त्र सिद्ध सर्व मान्य छे आ अमारो मुख्य अभिप्राय छे ते तुमा समझी लेवो ।

द० आचार्य महाराज विजय उमंगसूरीजी महाराजनी आज्ञा थी पंन्यास महाराज उदयविजय गणीना तरफथी धर्मलाभ वांचजो ।

श्री संघ ने धर्मलाभ !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"जिनपूजा पद्धति" पुस्तक के बारे कुच्छ वर्तमान पूज्य आचार्य महाराजों द्वारा प्रेषित अभिप्राय:-

(१)

अहमदाबाद दोसीबाग पोल
२०१३ असाढ़ वदी १

प्रशांत तपोमूर्ति आराध्यपाद आ० म० विजय सिद्धिसूरिश्वरजी आदि की ओर से

धर्मलाभ !

हम सब सुखसाता में है तुम्हारा पत्र मिला जवाब में लिखना है कि हम पूजा को मानते हैं। सारे गुजरात में हरेक देरासर में पूजा चालू है शास्त्रों में भी पूजा का निषेध कहीं जाणा नहीं और कहीं बांचा नहीं। श्रावक को हमेशा प्रभु पूजा करनी चाहिये।

द० मृगांक विजयना धर्मलाभ

---

(२)

ज्ञान मंदिर अहमदाबाद

आराध्यपाद गुरुदेव श्री आचार्य देव श्री विजय प्रेमसूरिश्वरजी महाराज साहब की ओर से

धर्मलाभ !

तुम्हारे दोनों पत्र मिले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० श्री कल्याण विजयजी की "जिन पूजा पद्धति" पुस्तक में बहुत से विधान शास्त्रसाथ असंगत है। बालजीवों को बुद्धिभेद करने वाला है। वर्तमान संघ को टिकाने वाला एक मात्र साधन जिन पूजा को धक्का पहुँचाने वाला है। धर्मरक्षा धर्माराधन में उद्यम रखना।

द० भानुविजय का धर्मलाभ वाचशो।

——

(३)

पूज्यपाद आ० म० श्री विजय लक्ष्मणसूरिश्वरजी की ओर से

दादर

८–८–५७

धर्मलाभ !

पत्र मिला तुम्हारी प्रवृति प्रशंसा योग्य है। पं० श्री कल्याण विजयजी ने "जिनपूजा पद्धति" नाम का ग्रन्थ प्रकाशित कराया है। उनमें बहुत–सी बातें शास्त्र विरुद्ध हैं। उसका विरोध होना जरूरी है। नहीं तो आधुनिक पूजा पर उसका बड़ा भारी असर होगा।

हमारा सहयोग है।

——

(४)

पावापुरी तीर्थ

ता० ६–६–५७

पूज्यपाद आचार्य महाराज चन्द्रसागरसूरिश्वरजी की ओर से,

धर्मलाभ के साथ लिखना है कि आपका पत्र ता० ३०–५–५७ का लिखा हुआ मिला "जिनपूजा पद्धति" नामक पुस्तक जो प्रका-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शित हुई है उस पुस्तक के सम्बन्ध में मेरा शिष्य मुनिश्री अभ्युदय सागरजी ने शास्त्रीय उल्लेखों से यह पुस्तक सब संघों के लिए भ्रामक है एक लेखमाला शुरु कर दी है। निम्नलिखित मासिक देखना श्री सिद्ध चक्र मासिक वर्ष २२ का अंक २-३-४-५-६-७-८ लेख प्रकाशित हुए हैं इस पुस्तक का प्रथम विरोध मैंने तथा मेरे शिष्य मुनियों ने किया है।

---

(५)

पायधुनी

असाड़ सुद ६ वि. नि. २४८३

श्री आचार्यदेव श्री विजय प्रतापसूरीश्वरजी म० की ओर से

धर्मलाभ !

तुम्हारा पत्र मिला हम बाहर गांव में विहार में थे जिससे देरी से मिला पं० कल्याण विजयजी की पूजा पद्धति पुस्तक में जैन शास्त्र सिद्धान्त तथा पूर्वाचार्य भगवंत के फरमान से विरुद्ध विचार है। यह पुस्तक रद्द होनी चाहिये।

---

(६)

ता० १८-७-५७

श्रीमद् आचार्य म० श्री विजय हर्षसूरिश्वरजी म० की ओर से

धर्मलाभ ! साथे जानना कि हमने पंन्यास कल्याण विजयजी गणी की पूजा पद्धति पुस्तक पढ़ी है। जिसका उत्तर हमने कल्याण विजयजी को भी लिखा है। हमने हरिभद्रसूरिना लिखा पंचाशक आदि ग्रंथ का नाम भी लिखा है। कृष्ण महाराज का जीव आवती चोबीसी में बाहरवाँ तीर्थङ्कर होने वाला है। उनका चरित्र संस्कृत में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। उनका निर्वाण आवती चोवीसी में सम्मेतशिखरजी ऊपर होने वाला है और विजय नाम का राजा इनकी पादुका की स्थापना करके पूजने वाला है और निरन्तर त्रिकाल पूजा करेगा। यह चरित्र वि० सं० १२५० में लिखा गया है। इसी तरह विक्रम की बारहवी सदी में कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्र आचार्य महाराज ने त्रेसठ पुरुषों का चरित्र लिखा है उसमें चोवीस के चोवीस तीर्थङ्करों के चरित्र लिखे हैं। उसमें पहले पर्व के विभाग में ऋषभदेव प्रभु तक्षशिला देश में गये थे और बाहुबलजी श्री भगवान् को आया जानकर वंदन करने गया था लेकिन भगवान् ने विहार कर दिया था। तब उन्होंने धर्मचक्र की स्थापना करके त्रिकाल पूजन की व्यवस्था की थी और तीर्थङ्करों के पारणा आदि की जगह उनकी चरण पादुका की राजा लोग स्थापना करके पूजा करने का लिखा है। बंबई से जवेरी पाताचन्द रुपचन्द संपादित सिद्धचक्र नामका मासिक पेपर निकलता है। इस पेपर में पूजा का समर्थन में हरिभद्रसूरि की ग्रन्थों में गाथाओं साथे लेख है। इत्यादि—

卐

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की पृ
जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

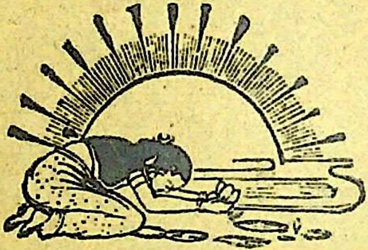

भंवरलाल शर्मा के प्रबन्ध से
गजानन्द प्रिन्टिंग प्रेस, शाह मार्केट, ब्यावर
में मुद्रित।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi